राजस्थानी कहावत माला [२]

मालवी कहावतें

भाग-१.

श्री रतनलाल महता

बी०ए०, एलएल०बी०

राजस्थान विश्व विद्यापीठ, साहित्य-संस्थान

उदयपुर (राजस्थान).

राजस्थानी कहावत माला, दूसरी पुस्तक

मालवी-कहावतें

[भाग-१]

सम्पादक-
रतनलाल मेहता
बी०ए०, एल-एल०बी०

राजस्थान विश्व विद्यापीठ, साहित्य-संस्थान, उदयपुर

प्रकाशक-
राजस्थान विश्व विद्यापीठ
प्रकाशन विभाग
उदयपुर

प्रथम संस्करण
फरवरी '१९५०
मूल्य दो रुपया

मुद्रक-
विद्यापीठ प्रेस
उदयपुर

—निवेदन—

हिन्दी को राष्ट्र भाषा के गौरवपूर्ण पद पर स्वीकृत किये जाने के साथ ही हिन्दी-भाषियों, हिन्दी हितैषियों और हिन्दी की समृद्धि के लिये काम करने वाली समस्त संस्थाओं तथा राज्य-सरकारों का उत्तरदायित्व अधिक बढ़ गया है। राजस्थान भी हिन्दी भाषी प्रान्तों में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। इसलिये हिन्दी को समृद्ध और सम्पन्न करने का महत्वपूर्ण प्रयास राजस्थान के विभिन्न हिस्सों में वर्षों से किया जा रहा है। राजस्थान विश्व विद्यापीठ भी विगत दस वर्षों से हिन्दी के विकास तथा विस्तार के लिये अपने "साहित्य-संस्थान" द्वारा प्राचीन साहित्य, लोक साहित्य, पुरातत्व और कला विषयक शोध-खोज, संग्रह-सम्पादन एवं प्रकाशन का काम करती आ रही है।

"साहित्य-संस्थान" में जहाँ प्राचीन विद्वद् साहित्य की शोध-खोज एवं संग्रह के काम को हिन्दी के विकास के लिये अनिवार्य समझा गया है; वहाँ प्रादेशिक भाषाओं की उन्नति के लिये भी योजनाबद्ध प्रयत्न किया जा रहा है। प्रादेशिक भाषाओं के प्राचीन गम्भीर साहित्य तथा लोक-साहित्य को प्रकाश में लाकर राष्ट्र-भाषा का सर्वांगीण-विकास "साहित्य-संस्थान" का मुख्य लक्ष्य है। राजस्थानी भाषा में गम्भीर साहित्य के साथ २ लोक साहित्य का भी अनुपम भण्डार है। आवश्यकता है; इसे संग्रह कर प्रकाश में लाने की। राजस्थान विश्व विद्यापीठ-साहित्य-संस्थान ने इसी दृष्टि से लोक गीतों, लोक कथाओं, लोक वार्ताओं तथा लोकोक्तियों के संग्रह-सम्पादन तथा प्रकाशन का कार्य अपने हाथ में लिया है। प्रस्तुत पुस्तक लोकोक्तियों का द्वितीय प्रकाशन है। लोकोक्तियों-सम्बन्धी प्रथम पुस्तक "मेवाड़ की कहावतें" श्री पं० लक्ष्मीलाल जोशी एम०ए०, एल-एल०बी० द्वारा सम्पादित प्रकाशित की जा चुकी है।

प्रकाशक की ओर से

"मालवी-कहावतें" साहित्य-संस्थान का लोकोक्तियों सम्बन्धी दूसरा संग्रह है। पुस्तक के सम्पादक श्री रतनलाल मेहता बी० ए० एल-एल० बी०, ने आज से दो वर्ष पूर्व पुस्तक तय्यार कर प्रकाशन के लिये 'संस्थान' को अर्पित कर दी थी परन्तु 'संस्थान' अपनी आन्तरिक असुविधाओं और कठिनाइयों के कारण आज से पहले इसे प्रकाशित करने में असमर्थ रहा। सब से बड़ी कठिनाई 'संस्थान' के सम्मुख अर्थ की थी। 'संस्थान' में अनेक पुस्तकें आज अर्थ के अभाव में अप्रकाशित हो रही हैं।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन के सम्बन्ध में 'संस्थान' ने काफी प्रयत्न किये परन्तु सम्भव न हो सका। आखिर हमने इस पुस्तक के प्रकाशन के लिये बदनोर के सुयोग्य साहित्य-प्रेमी ठाकुर साहब श्री गोपालसिंहजी से निवेदन किया और हमें खुशी है कि श्री ठाकुर साहब ने हमारे निवेदन को स्वीकार कर पुस्तक प्रकाशन का सम्पूर्ण व्यय देने की स्वीकृति देदी। प्रस्तुत पुस्तक ठाकुर साहब श्री गोपालसिंहजी की सहायता से ही प्रकाशित हो सकी है। इसके लिये हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकाशित करते हैं और आशा करते हैं कि राजस्थान के अन्य राजा-महाराजा और जागीरदार तथा धनी-मानी महानुभाव भी ठाकुर साहब श्री गोपालसिंहजी की ही भाँति सहायता प्रदान कर राजस्थानी एवं हिन्दी भाषा के विकास के आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण कार्य को पूरा करवाने में अपना हिस्सा अदा करेंगे।

बसन्त पंचमी
दो हजार आठ
२१-२-१९५२

गिरिधारीलाल शर्मा
मन्त्री
साहित्य-संस्थान
राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर

क्षमा याचना

प्रस्तुत पुस्तक श्रीयुत् रतनलालजी मेहता बी० ए०; एल-एल० बी० द्वारा सम्पादित होकर राजस्थान विश्व विद्यापीठ साहित्य संस्थान को आज से दो वर्ष पूर्व प्राप्त हो चुकी थी और प्रकाशन के लिये प्रेस में देदी गई थी परन्तु बीच में अनेक कठिनाइयों और असुविधाओं के कारण प्रकाशन का कार्य स्थगित कर देना पड़ा था। इन अनेकों कठिनाइयों में आर्थिक अभाव तो तब भी था और अब भी अधिक विकटतम रूप में संस्थान के सम्मुख है। अनेक असुविधाओं के बावजूद भी अब प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन में अधिक विलम्ब सहन नहीं किया जा सकता था। इस कारण जैसी भी हो सकी अब पुस्तक पाठकों के हाथ में है।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक शर्मनाक प्रूफ की अशुद्धियाँ रह गई हैं, इसका हमें सख्त अफसोस है। इसके लिये हम पाठकों से नम्रता पूर्वक क्षमा याचना करते हैं।

————

लेखकः—

श्री रतनलाल मेहता

बी०ए०, एल-एल०बी०

मेरे जीवन के आदर्श व मार्ग प्रदर्शक

हिज एक्सिलेन्सी

डॉ० श्री कैलाश नाथ काटजू
M.A.LL.D.

को

सादर समर्पित

बदनौर के वर्त्तमान अधिपति

ठाकुर श्री गोपालसिंहजी

परिचय—

मेवाड़ राज वंश के साथ अनेक प्रसिद्ध और पराक्रमी व्यक्तियों के चरित्र जुड़े हुए हैं। मेवाड़ पर आये दिन युद्ध के बादल मंडराते थे। देश भक्ति और कर्तव्य परायणता के नाम पर कई माताओं के सपूतों ने हँसते २ अपने प्राण न्यौछावर कर दिये, प्रसिद्ध मुगल सम्राट अकबर ने जब पहली बार चित्तौड़ पर युद्ध का धावा बोला, तब तत्कालीन महाराणा उदयसिंह युद्ध से उदासीन होकर पहाड़ों की ओर चला गया

और मेवाड़ के इस युद्ध की बागडोर प्रसिद्ध राठौर वीर जयमल राव तथा उनके साथियों के हाथ में सौंप दी गई। राव जयमल मारवाड़ के प्रसिद्ध अधिपति जोधाजी के चतुर्थ पुत्र दूदाजी राव के प्रपौत्र थे, राव जोधाजी मेरता और मेड़तिया के मूल संस्थापक माने जाते हैं। मेड़ता से राव जयमल वि० सं० १६११ में मेवाड़ के महाराणा के पास आये और वि० सं० १६२४ चैत्र कृष्णा ११ को अकबर के साथ हुए चित्तौड़ के युद्ध में वीर गति को प्राप्त हुए। जिनका वर्णन इतिहासकारों ने मुक्त कंठ से किया है। इनके बाद रामदास जी का हल्दीघाटी में काम आना भी इतिहास प्रसिद्ध है। इनके वंशज भी संकट के समय महाराणा की सेवा में उपस्थित रहते थे। बदनौर इन्हीं के वंशजों की जागीर में चला आता है। यह मेवाड़ राज्य का प्रथम श्रेणी ठिकाना है। ठाकुर इनकी पदवी है। महाराणा की तरफ से सभी प्रकार की पद प्रतिष्ठा इन्हें प्राप्त हैं। बदनौर अजमेर से ५२ मील दक्षिण पश्चिम में तथा उदयपुर से १०० मील उत्तर पूर्व में पहाड़ियों के मध्य बसा हुआ है। बदनौर के के राज प्रासाद पहाड़ों की उपत्यकाके मध्य मधुरिम छटा के साथ अपने प्राचीन गौरव की आज भी गाथा प्रकट कर रहे हैं तथा भक्ति मती मीरां और जयमल की यशोधारिणी कीर्ति का मौजूदा नाम आज के ठाकुर साहिब के व्यक्तित्व से प्रस्फुटित हो रहा है। यहाँ के ठाकुर मेड़तिया शाखा के कहलाते हैं। बदनौर इलाके में १०० के ऊपर गाँव जागीर में प्राप्त हुए थे।

आय लगभग दो लाख के ऊपर है। आबादी तीस हजार की मानी जाती है!

बदनोर के वर्तमान अधिपति ठाकुर श्री गोपालसिंह राठौर है। इनका जन्म सन् १९०२ में हुआ था। प्रारम्भिक एवं उच्च शिक्षा पितृगृह में ही दी गई। सन् १९२१ में जयपुर राज्य के अंतर्गत चम्मू ठिकाने के ठाकुर श्री देवी सिंह जी की सुपुत्री से इनका विवाह हुआ था। आपके तीन पुत्र हैं-ज्येष्ठ युवराज श्री रघुवीरसिंहजी है जो अभी मेयो कॉलेज में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। आपका स्वभाव, सरल, मधुर भाषी एवं संस्कारशील है। ठिकाने का शासन हाथ में लेते ही आपने अपने यहाँ कई प्रगतिशील सुधार किए तथा अपने उदार विचारों से शासन व्यवस्था को अधिक से अधिक सुन्दर बनाने की चेष्टा की। आपने यहाँ बेगार प्रथा बन्द की। ठिकाने में चल रहे अनेक मुकदमों को निपटाया तथा कास्तकारों पर चढ़े हुए लगभग तीन लाख रुपये का पुराना लगान माफ किया और रकाबी पद्धति जारी कर काश्तकारों को भूमि सुधार सम्बन्धी कार्य में प्रोत्साहन दिया। भूमिकर नियम चालू करने की व्यवस्था की। कई नये भवन बनाये। तथा खास बदनौर में बिजली का प्रबन्ध किया। तालाबों और बगीचों का निर्माण कर के नगर को सुन्दर बनाने की ओर ध्यान दिया। खास बदनौर में हॉस्पिटल को व्यवस्थित किया तथा आसपास के गांवों में औषधि वितरण की व्यवस्था लागू की। शिक्षा के क्षेत्र में भी

ठाकुर साहिब की विशेष दिलचस्पी होने से कई स्कूल खोले और अनेक सार्वजनिक कामों में अपना बनता योग देते रहे हैं।

शिक्षा के अतिरिक्त इतिहास की ओर भी विशेष अभिरुचि है, खोज आदि कार्य में भी आपका पूरा योग रहा है। आपने अपने वंश का इतिहास "जयमल वंश प्रकाश" के नाम से लिखा है। आप सन् १९३३ में यूरोप के इंगलैंड तथा अन्य प्रमुख देशों का भी भ्रमण कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त मेवाड़ सरकार को भी आपका बराबर योग मिलता रहा, सर्वे के कार्य में आपने पूरा २ योग दिया, मेवाड़ हिस्टोरिकल रेकार्डस् के सर्वे के लिए आपको स्टेट लेजिस्लेटिव कमिटी के अध्यक्ष तथा रिजनल कमिटी के उपाध्यक्ष बनाये गये। इसी तरह स्टेट लेजिस्लेटिव कमिटी के विधान निर्मात्री समिति के अध्यक्ष के नाते आपने लोक प्रिय विधान परिषद की रूप रेखा भी तैयार की।

मेवाड़ के जागीरदार बालकों के अनिवार्य शिक्षण के लिए जो समिति बनाई गई थी उसके भी आप अध्यक्ष रह चुके हैं। वाल्टर कृत राजपूत हितकारिणी सभा की सदस्यता तथा मेवाड़ राजपूत सभा की अध्यक्षता कई समय तक बराबर करते रहे, गत महा युद्ध में आपने सरकार को सभी तरह का सहयोग दिया और उसी समय सन् १९४४ के करीब बाढ़ पीड़ितों की पूरी २ सहायता की। इन कार्यों से प्रसन्न हो कर

इन्हें सरकार से सन् १६४४ में M. B. C. का खिताब मिला, आप भूतपूर्व मेवाड़ गवर्नमेंट के महद्राज सभा (हाईकोर्ट) के मेम्बर (जज) भी रह चुके हैं। इस तरह आपका मेवाड़ के विकास में पूरा २ योग रहा।

विद्यापीठ के प्रति आपका प्रेम और उदात्तभाव है, तथा संस्था के विकास में आपका पूर्णतः योग रहा है।

संस्था की ओर से यह पुस्तक आपके दान के द्वारा ही प्रकाशित की जा रही है।

२८-१०-५१

मन्त्री
साहित्य-संस्थान
राजस्थान विश्व विद्यापीठ
उदयपुर

प्राक्कथन

कहावतों की प्राचीनता

कहावतों का इतिहास बहुत प्राचीन है। साहित्यिक रचनाओं के बहुत पहले भी संसार की सभी बोलियों में उनका प्रचलन था। प्रचीन से प्राचीन ग्रन्थो में उनका उल्लेख मिलता है। उदाहरण के लिये रामायण के इस श्लोक को लीजिये- केकयी को लक्ष्य करके भरत के प्रति लक्ष्मण राम से कहते हैं:—

"न पित्र्यमनुवर्तन्ते मातृकं द्विपदा इति।
ख्यातो लोकप्रवादोऽयं भरते नान्यथाकृतः॥"

अर्थात, मनुष्य पिता के स्वभाव का नहीं, बल्कि माता के स्वभाव का अनुकरण करते हैं, इस प्रसिद्ध लोकवाद को भरत ने उलटा कर दिया- क्योंकि उसमें पिता का स्वभाव पाया जाता है।

इससे इतना तो स्पष्ट ही है कि आदिकवि के पूर्व, या कम से कम उनके समय में भी लोकोक्तियों का प्रचलन था। वास्तव में, अनुभव और ज्ञान को सूत्रबद्ध करके उसको चिरस्थायी एवं सर्वसुलभ बनाने की परिपाटी बहुत प्राचीन है। लेखन-कला के आविष्कार के पूर्व नीति-मूलक विचारों तथा दृष्टान्तों को सजीव एवं सर्वव्यापक बनाने का यही साधन था।

प्राकृत और संस्कृत में व्यवहारिक जीवन के अनुभव के आधार पर समय-समय पर रचे गये कितने ही ज्ञान-सूत्र अबतक प्रचलित हैं। संस्कृत में लौकिक न्याय के अन्तर्गत बहुसंख्यक सूत्र उस समय की या उससे पहले की लोक-विश्रुत कहावतें ही हैं। उसमें जो युक्तिमूलक दृष्टान्त हैं, वे किसी एक समय के नहीं हैं भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में पड़कर बुद्धिमानों को जो सच्चे अनुभव हुए उन्हींको उन्होंने सूत्रबद्ध करके जनता को सौंप दिया। जनता ने उनको उपयोगी समझकर अपना लिया। इसी प्रकार भुक्तभोगियों के कितने ही सच्चे हृदयोद्‌गार लोकोक्तियों के रूप में प्रचलित हो गये।

सूत्र रूप में तत्व की बातें कहने की प्रणाली प्राचीन साहित्यिक रचनाओं में भी मिलती है। इसलिये रामायण, महाभारत आदि काव्यों की व्यवहारिक जीवन से सम्बन्ध रखने वाली बहुत-सी सूक्तियाँ लोकोक्तियों के रूप में प्रयुक्त होने लगीं। चाणक्य आदि नीतिकारों के बहुत-से सूत्र और श्लोक आज तक लोकोक्तियों के रूप में व्यवहृत होते हैं। इस प्रकार सर्व साधारण के उपयोग की जो भी ज्ञान-सामग्री जहाँ से भी मिली है, जनता ने लोकोक्तियों के रूप में अपना ली है।

हिन्दी तथा उससे सम्बद्ध प्रादेशिक बोलियों में प्रचलित कहावतों के सम्बन्ध में भी यही बात लागू होती है। इसमें सन्देह नहीं कि इनमें से बहुत-सी कहावतें प्राकृत तथा संस्कृत की बहु-प्रसिद्ध लोकोक्तियों के आधार पर बना ली गई हैं, लेकिन उनका अधिक अंश भिन्न-भिन्न अवसरों पर लोगों के स्वतन्त्र अनुभव के आधार पर ही बना है। संस्कृत के नीति वाक्यों की भाँति हिन्दी के बहुत-से कवियों की सूक्तियाँ भी उनमें सम्मिलित कर ली गई हैं। उदाहरण के लिये तुलसीदासजी

की इन पंक्तियों को लीजिये जिनका व्यवहार अब बोलचाल में कहावतों के रूप में ही होता है—

'जो जस करिय सो तस फल चाखा'
'चोरहिं चाँदनि राति न भावा'
'नहिं विष-बेलि अमिय फल फरहीं'
'मति अति रंक मनोरथ राऊ'
'का बरषा जब कृषी सुखाने'
स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती'
'समरथ को नहिं दोष गोसाईं'

इसी प्रकार कबीर, रहीम, वृन्द और गिरिधर आदि कवियों की बहुत-सी उक्तियों का प्रयोग कहावतों के रूप में होता है। किसानों के कवि घाघ-भड्डरी ने तो कहावतों की ही रचना की है।

कहावतों की विशेषताएँ

ऊपर के विवरण से यह समझा जा सकता है कि कहावतों की रचना किसी एक समय में और कुछ इने-गिने विद्वानों-द्वारा नहीं, बल्कि सनातन काल से बुद्धिमान तथा अनुभवी जनता द्वारा होती आई है। अब हमें उनकी उन विशेषताओं पर विचार करना चाहिये, जिनके कारण वे प्राचीन होते हुये भी आज तक सजीव बनी हुई हैं। आधुनिक काल के प्रगतिशील कहलाने वाले साहित्य तो थोड़े ही समय बाद गतिहीन होकर निरर्थक हो जाते हैं, लेकिन हमारा यह प्राचीन लोक-साहित्य यथा अवसर प्रयोग से सामयिक एवं नित्य नवीन बना रहता है। अलिखित होने पर भी यह परम्पराश्रुत साहित्य हमारे लिखित साहित्य से अधिक लोक-व्यापक और प्रभावशाली है। निरक्षरता होते हुये भी सर्व साधारण में व्यवहारिक ज्ञान का

अकाल नहीं है इसका कारण यही है कि अशिक्षित लोगों को भी नित्य की बोलचाल में प्रयुक्त होनेवाली कहावतों से आवश्यक बातों की कुछ-न-कुछ जानकारी हो जाती है। पुस्तक-सुलभ ज्ञान की अपेक्षा कंठस्थ ज्ञान का ही प्रचार इस समय भी कम-से-कम भारतीय समाज में अधिक है।

निश्चय ही कहावतों में कुछ विशेषतायें हैं जिनके कारण वे कंठस्थ होकर लोक-जीवन में समाई हुई हैं। सर्वप्रथम तो उनकी रचनाशैली की विचित्रता लोगों को आकर्षित करती है। कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक तत्व की बात आकर्षक ढंग से अभिव्यक्त करने की क्षमता कहावतों में ही होती है। 'गागर में सागर' कहावतों में ही देखने को मिलता है। उनमें शब्द का अपव्यय और कल्पना का अतिरंजन नहीं होता। एक-एक शब्द अपना मूल्य रखता है। उनके वाक्य-संगठन की सूक्ष्मता, सरलता और सार्थकता विशेष प्रभावशालिनी होती है। लोग उन्हें कंठस्थ करके घाटे में नहीं रहते; क्योंकि सार रूप में उन्हें ज्ञान का भांडार मिल जाता है।

कहावतों का चोखापन और अनोखापन उन्हें लोकप्रिय बनाता है, इसमें सन्देह नहीं। लेकिन उनकी लोकमान्यता का एक दूसरा कारण है। जैसा कि हम बता चुके हैं, लोकोक्तियों का मुख्य विषय है हमारा व्यावहारिक जीवन। उनकी रचना कल्पना के आधार पर नहीं, बल्कि वास्तविकता के आधार पर हुई है। इसलिये व्यावहारिक जीवन से उनका घनिष्ट संबंध है। भिन्न-भिन्न क्षेत्रों और परिस्थितियों में लोगों को जो सच्चे अनुभव हुये उन्हींके शब्द-चित्र इनमें मिलते हैं। एक-सी परि-स्थिति में भिन्न-भिन्न काल के सांसारिक मनुष्यों को एक-सा अनुभव होता है और वे एक ही परिणाम पर पहुंचते हैं। इस

परिणाम पर पहुंचने पर जो अनुभूत ज्ञान प्राप्त होता है, वही सच्चा ज्ञान है। लोकोक्तियों के रूप में जीवन-सम्बन्धी सत्य सुरक्षित रहता है। सत्य कभी पुराना नहीं पड़ता। दृष्टान्तों की यथार्थता के कारण कहावतें प्राचीन होने पर भी समयोपयोगी सिद्ध होती हैं। उनमें हास्य-व्यंग की जो कटाक्षपूर्ण बातें मिलती हैं, वे भी सच्ची ही उतरती हैं क्योंकि उनका आधार अनुभव है, कल्पना नहीं।

कहावतों की उपयोगिता

यदि भिन्न-भिन्न बोलियों में प्रचलित कहावतों का संग्रह किया जाय तो उससे सम्पूर्ण व्यवहारिक जीवन का एक अलग शास्त्र ही बन सकता है। जीवन-सम्बन्धी सम्भवतः कोई ऐसा विषय या कार्य नहीं है जिसके सम्बन्ध में कहावत न हो। मानव-जीवन स्वयं जितना विशाल एवं व्यापक है, उतना ही उसका लोक-साहित्य भी है।

लोकोक्तियों में सर्वसाधारण के लिये हास्य-व्यंग, आलोचना के अतिरिक्त जीवन-दर्शन, लोक की रीति नीति, स्वास्थ्य, मनोविज्ञान, कृषि, व्यवसाय और देश-काल आदि के सम्बन्ध में पर्याप्त ज्ञान-सामग्री मिलती है। दर्शन-ग्रन्थों के गूढ़ सिद्धांत भी कहावतों में सरल ढंग से व्यक्त किये हुये मिलेंगे। जैसे—'जैसी करनी, तैसी भरनी' या 'अपनी करनी पार उतरनी', अथवा 'जो जस करिय सो तस फल चाखा' आदि। इसी प्रकार अन्य विषयों पर भी सरल किन्तु सारगर्भित उक्तियाँ मिलती हैं, जिनके कुछ उदाहरण हम आगे देते हैं।

सामाजिक जीवन-सम्बन्धी कहावतें

पहले सामाजिक जीवन-सम्बन्धी कुछ कहावतें देखिये।

१- समाज में कोई असाधारण कार्य किये बिना किसी को प्रतिष्ठा नहीं मिलती। इसे हम प्रत्यक्ष देखते हैं। इसी बात को लक्ष्य करके यह मालवी कहावत प्रचलित है- **'चमत्कार वनां नमस्कार नीं'**- अर्थात् चमत्कार प्रदर्शित किये बिना लोक-सम्मान नहीं प्राप्त होता।

२- सामाजिक जीवन में उदारबुद्धि सर्वप्रिय होता है। 'उदारचरितानां तु वसुधैवकुटुम्बकम्'- इस संस्कृत उक्ति में इसी सत्य की ओर संकेत है। इसी आशय की यह मालवी कहावत है— **'गाम गाम घर बसावणा।'**- अर्थात् गांव-गांव में अपना घर बनाना। लोकप्रिय व्यक्ति का समाज में सर्वत्र स्वागत होता है। इसे देखकर ही इस लोकोक्ति के रचयिता को यह बात सूझी कि ऐसे लोग तो गांव-गांव में अपना घर बनाये रहते हैं— सब उनसे कुटुम्बी की तरह प्रेम करते हैं।

३- पढ़ने लिखने से ही कोई लौकिक आचार व्यवहार में प्रवीण नहीं हो जाता। इस अनुभव के आधार पर यह कहावत बनी है- **'पढ़ाये पूत से दरबार नहीं होता'**।

४- समाज में एकता ही बल है। इसको एक हिन्दी कहावत में इस आकर्षक ढंग से कहा गया है— **एक और एक ग्यारह होता है।**

५- भारतीय समाज में गौने के पहले ससुराल जाना लोक-मर्यादा के विरुद्ध एवं अपमान जनक माना जाता है। इस संबंध में घाघ की यह कहावत बहुत प्रचलित है—

"बिन गौने ससुरारी जाय ।
बिना माघ घिउ-खीचरी खाय ॥
बिन बरखा के पहिरै पौवा ।
घाघ कहैं ये तीनों कौवा ॥"

एक मालवी कहावत में यही बात दूसरे ढंग से कही गई है-
"परदेश जमाई फूल बराबर, गाम जमाई आधो ।
घरजमाई गधा बराबर, मन आवे जद लादो ॥"

६- लोक में अपने दुराचार का प्रदर्शन करने अथवा अपनी दुर्बलता प्रकट करने से मनुष्य को स्वयं लज्जित होना पड़ता है। इसपर मालवी में यह कहावत प्रचलित है— 'आपणी जांघ उघड़ी ने आपणेज लाजे मरनो ।'

ऐसी ही सैकड़ों कहावतें हैं जिनसे हमारे सामाजिक आदर्श और आचार-व्यवहार— लोक की रीति-नीति का बोध होता है । 'उधार दीजे, दुश्मन कीजे' और 'खड्ड खनै जो और को ताको कूप तयार' तथा 'घर का भेदी लंका ढावे'- जैसी कितनी ही उक्तियाँ बोलचाल में रोज प्रयुक्त होती हैं जिनमें सामाजिक जीवन के लिये शिक्षा-प्रद बातें मिलती हैं ।

मानव-प्रकृति सम्बन्धी कहावतें

कहावतों की एक बहुत-बड़ी संख्या ऐसी है, जिसमें मानव-प्रकृति की सूक्ष्म विवेचना मिलती है। उदाहरण के लिये इन कहावतों को लीजिये—

१– 'घर का ब्राह्मण बैल बराबर' अपने घर के प्रभावशाली या निकटस्थ व्यक्ति का लोग यथोचित सम्मान नहीं करते क्योंकि 'अति परिचय तें होत है अरुचि अनादर

भाय।'– वृन्द। इसी भाव की दूसरी कहावत है— 'घर की मुर्गी साग बराबर'

२– दूर के ढोल सुहावने। दूर की तुच्छ वस्तु को भी मनुष्य स्वभाव-वश महत्त्व देता है।

३– दुबला ने रीस घणी। (मालवी) कमजोर आदमी को क्रोध बहुत आता है– 'क्षीणाः नराः निष्करुणा भवन्ति।

४– तीन का ढाई करदो, पर नाम दारोगा धर दो। वेतन तीन की जगह चाहे ढाई कर दो, लेकिन ओहदा दारोगा का कर दो। भावार्थ यह है कि मनुष्य मिथ्या-पद गौरव का इतना लोलुप होता है कि वह उसके लिये आर्थिक हानि भी उठाने को तैयार हो जाता है। वह दूसरों की दृष्टि में अपने को ऊँचा या पदवीधर दिखलाना चाहता है।

५– गुस्सो तीन पाव पे आवे हवा हेर पे नी आवे– (मालवी) क्रोध तीन पाव पर आता है सवा सेर पर नहीं। तात्पर्य यह है कि छोटे पर क्रोध आता है, बड़े पर नहीं अथवा थोड़ी वस्तु के प्रति असन्तोष होता है, अधिक के प्रति नहीं। – 'देवो दुर्बल घातकः'।

६– गाड़ी देखी ने पग भारी पड़े (मालवी) – गाड़ी देखी नहीं के पैर शिथिल पड़े। मानव स्वभाव है कि बाहरी साधनों का सहारा पाकर वह अपना प्रयत्न ढीला करके उसी पर अवलम्बित हो जाता है।

७– सिखावलि बुधि अढ़ाई घरी (भोजपुरी) –

सिखाई हुई बुद्धि थोड़ी ही देर तक ठहरती है।

८- जेब में थे नगदुल्ला तो खेते बेटा अब्दुल्ला—पास में पैसा रहने से ही निश्चिन्तता और प्रसन्नता आती है। इसी भाव की यह कहावत है-- 'पैसा नहीं पास तो मेला लगे उदास।'

९—पिपिडीकां जओ पांखि जनमये अनल करिये झपान (विद्यापति) चींटी के जब पंख निकलते हैं तो वह आग में कूदने दौड़ती है। ठीक वैसी ही बात है जैसे धन बढ़ने पर अविवेकी पुरुष व्यसनों की ओर आकर्षित होकर आत्म-नाश करता है।

१०—काम परे बांका, लोग गधे को कहें काका- जब अपना काम निकालना होता है तो मनुष्य स्वार्थवश नीच के प्रति भी आदर-सत्कार का अभिनय करता है।

आलोचनात्मक कहावतें

मानव-चरित्र की जितनी स्पष्ट और व्यंगपूर्ण आलोचना कहावतों में मिलती है, उतनी अन्यत्र नहीं। कहावतों के रूप में कितने ही ऐसे शब्द प्रचलित हैं, जिनके द्वारा विशेष ढंग के आदमीयों के व्यंगचित्र आँख के आगे आ जाते हैं। उदाहरणार्थ—ढपोरशंख, तीसमारखाँ, उल्लूबसन्त, कूपमंडूक, माहिल, आदि। किसी को ढपोरशंख कहने से, तत्काल समझ लिया जाता है कि वह आदमी बढ़बढ़कर बातें ही करना जानता है, काम का नहीं। तीसमारखाँ की उपाधि धारण करने वाला, निकम्मा समझ लिया जाता है। उल्लूबसन्त प्रायः उसे कहते हैं जो प्रत्येक परिस्थिति में मूढ़ और अस्तव्यस्त ही बना रहता है।

बसन्त में भी जिस प्रकार उल्लू तो उल्लू ही बना रहता है, कोकिल की तरह रसोन्मत्त होकर कल-गान नहीं करता, उसी प्रकार जो व्यक्ति सुअवसर पाकर सचेत नहीं होता उसे प्रायः उल्लूबसन्त कहते हैं। कूपमंडूक के दृष्टान्त से सहज में उस व्यक्ति की दशा का बोध हो जाता है जो अपनी अल्पज्ञता-वश अपने ही को सर्वमान्य मानता है। किसी को माहिल कहने से उसका प्रपंची-स्वरूप सामने आजाता है क्योंकि आल्हा का माहिल झगड़ा लगाने के लिये काफी प्रसिद्ध है। इसी प्रकार बहुत से ऐसे चुने हुवे शब्द हैं जिनसे थोड़े ही में मनुष्य की पूरी आलोचना हो जाती है। महात्मा और हज़रत कहावतों की भाषा में बने हुये महात्माओं और धूर्तों के लिये ही प्रयुक्त होते हैं।

भिन्न-भिन्न प्रकार के मनुष्यों और उनके चरित्र की आलोचना सम्बन्धी कुछ चुनी हुई लोकोक्तियाँ हम नीचे देते हैं जिनसे ज्ञात होगा कि उनमें मानव-परीक्षा और परिस्थिति-विवेचना कितनी सूक्ष्मता से हुई है—

१— **जैसे नागनाथ तैसे सांपनाथ**— अर्थात् नाम-भेद से रूप-भेद नहीं होता। इसी भाव की यह मालवी कहावत है— थूंकचन्दजी कहो के अमीचन्दजी कहो, एक गी एक।

२— **आंख के अंधे नाम नयनसुख**— किसी के अच्छे नाम या ऊपरी ठाटबाट से ही उसका गौरव नहीं बढ़ता।

३— **चतुर कागलो मैला पर बैठे**— (मालवी) जो बहुत चालाक होता है, वही प्रायः नीचा देखता है। चतुर कौवा विष्ठा पर बैठता है।

४– जण-जण रा नखरा राखती वेश्या रइगी बांझ– (मालवी) बहुतों के आश्रय में रहने के कारण वेश्या निस्सन्तान रह गई। बहुतों के भरोसे रहने वालों को सफलता नहीं मिलती, यही इसका भावार्थ है।

५– खरी कमावे खोटो खाय– इसमें एक कंजूस की दशा का चित्रण है जो परिश्रम से कमाकर भी उस धन का उपयोग नहीं करता।

६– दाता तीं सूम भलो जो वेगो उत्तर दे– (मालवी) उस दाता कहलाने वाले व्यक्ति से, जो झूठे वादे करके मांगने वाले को लटका रखता है, वह कंजूस अच्छा है जो तत्काल इन्कार कर देता है।

७– सेठजी, सेठजी, कुँवर साब रोड़ी पे लोटे, तो कई मतलब वेगा– (मालवी) किसी ने कहा– सेठजी, सेठजी, आपके सुपुत्र कूड़े के ढेर पर लोट रहे हैं। इस पर सेठजी बोले– किसी प्रयोजन से ही वह ऐसा करता होगा। इसमे उन व्यवसायियों की मनोवृत्ति की आलोचना है जो मतलब या स्वार्थ के लिये ही सब-कुछ करते हैं।

८–मारा बाप ने आटो मलो मती, नीतो मने छाणा वीणवा जाणो पड़ेगा - (मालवी) एक भिक्षुक का आलसी बेटा भगवान से प्रार्थना करता है कि मेरे बाप को आज भीख न मिले तो ठीक, नहीं तो मुझे जंगल में कंडे बीनने जाना पड़ेगा किसी निकम्मे की इससे व्यंगपूर्ण आलोचना नहीं हो सकती।

९–काजी रो घर है, कसम खाओ ने घर जाओ— (मालवी) - बड़े आदमियों के यहाँ छोटों का स्वागत-सत्कार नहीं होता. इसीको लक्ष्य करके यह कहावत बनी है। काजी के यहाँ शपथ खाने के अतिरिक्त और कुछ खाने को नहीं मिलता।

१०– नख छेदन के लाव कुठार - (भोजपुरी) -छोटे काम के लिये बड़ा आडम्बर रचना वैसा ही है जैसे नाखून काटने के लिये कुल्हाड़ा लाना 'जहाँ काम आवै सुई काह करै तरवारी'।

११– थाँबे थाँबे मुन्शी बैठा, कीने करूँ सलाम– (मालवी) - इसका आशय अकबर की इन पंक्तियों से समझा जा सकता है।

"लीडरों की धूम है और फ़ालोवर कोई नहीं।
सबतो जनरल है यहाँ आखिर सिपाही कौन है॥"

१२– आगम बुद्धी वाणियां, पाछील बुद्धी जाट।
तुरत बुद्धी तुरकड़ा, बाम्हण सम्पट पाट॥

(मारवाड़ी)

व्यवसाय में बनिया कार्य के पहले ही सचेत रहता है, जाटको काम के बाद ज्ञान होता है, तुर्क को तत्काल सूझता है और ब्राह्मण तो बिलकुल कोरा ही होता है। उसमें व्यवसाय-चातुर्य नहीं होता। आज भी बुद्धिजीवी लोग व्यवसाय-चतुर कम मिलते हैं।

१३– नया नौकर हरिना खदेरै– नया नोकर शुरु-शुरु में बड़ी मुस्तैदी दिखाता है।

कृषि-सम्बन्धी कहावतें

कृषि-प्रधान देश होने के कारण यहाँ वालों को कृषि-धर्म, कृषक-कर्म और वर्षा-विज्ञान आदि का विशेष अनुभव था। तत्सम्बन्धी उनके ज्ञान और अनुभव का सार हमारी प्राचीन कहावतों में मिलता है। उनकी सहायता से ग्रामीण जनता कृषि-शास्त्र और ज्योतिष पढ़े बिना भी खेती के विषय में बहुत-कुछ काम की बातें जान जाती है। इस विषय की कुछ कहावतें देखिये-

१- बाढ़ै पूत पिता के धरमा। **खेती उपजै अपने करमा॥**

पुत्र पिता के कर्मों के पुण्य से उन्नति करता है, लेकिन खेती अपने करने मे ही फूलती-फलती है।

२- बड़ा किसान जो हाथ कुदारी - बड़ा किसान वही है जो हाथ में कुदाल लेकर स्वयं काम में जुटा रहे; दूसरों के भरोसे कोई बड़ा किसान नहीं बन सकता।

३- बर से ब्याह, नखत से खेती - जैसे वर देखकर विवाह किया जाता है, वैसे नक्षत्रों को देखकर खेती करनी चाहिये।

४-माघ माह जो परै न सीत। महँगा नाज जानियो मीत

यदि माघ महीने में ठंडक न पड़े तो अकाल पड़ेगा।

५- धान गिरै सौभागे का। गेहूँ गिरै अभागे का।

धान गिरने से अच्छा पकता है लेकिन गेहूँ गिरने से नष्ट होजाता है।

६- या तो बोवो कपास व ईख। न तो मांग के खाओ भीख।

कपास और ईख की खेती में सबसे अधिक आर्थिक लाभ होता है।

७– गेहूँ भया काहें — आषाढ़ की दो बांहें
गेहूं गया काहें — असाढ़ की बे बांहें

गेहूं क्यों अच्छा पैदा हुआ ? --क्योंकि आषाढ़ मे जुताई हुई थी। गेहूँ क्यों नष्ट हुआ ? -- क्योंकि आषाढ़ में खेतों को जोता नहीं था।

८– मघा के बरसे, माता के परसे।
भूखा न मांगे फिर कुछ घरसे ॥

मघा नक्षत्र के बरसने से अन्न इतना उत्पन्न होता है कि किसान सन्तुष्ट होजाता है। माता के परोसने पर जिस प्रकार पुत्र तृप्त होता है वैसे ही मघा के बरसने से किसान।

९– यक पानी जो बरसे स्वाती।
कुरमिनि पहिरै सोने क पाती ॥

यदि स्वाती नक्षत्र एक भी बार बरस जाय तो इतनी अच्छी उपज होती है कि कुरमी की दरिद्र स्त्री भी उससे स्वर्णाभूषण खरीद कर सम्पन्न बन सकती है।

१०–करिया बादर जिउ डरवावै।
भूरे बादर पानी आवे ॥

काला बादल गर्जन-तर्जन बहुत करता है, लेकिन बरसता कम है। भूरे बादलों से वृष्टि होती है।

स्वास्थ्य--संबंधी कहावतें

सभी बोलियों में स्वास्थ्य-विषयक बहुत सी कहावतें हैं।

उनमें स्वास्थ्य-रक्षा के नियम ही नहीं, कितने ही रोगों पर परीक्षित अनुभूत औषधियों का निर्देश भी मिलता है। कहावतों में स्वास्थ्य-सम्बन्धी कितनी काम की बातें हैं, इसका अनुमान इन थोड़े से उद्धरणों से हो सकता है।

१– **रिस खाय रसायन बनती है** । क्रोध को शान्त कर लेने से वह शरीर के लिये रसायन की तरह हितकर होता है।

२– **आंत भारी तो माथ भारी**। कब्ज से सिर भारी हो जाता है।

३– **हो दवा ने एक हवा**। (मालवी) स्वच्छ वायु सौ दवाओं के बराबर है।

४– **खाइ के मूते सूते बांव, काहे क बैद बसावै गांव**। भोजन के उपरान्त मूत्र-त्याग करके बाईं करवट लेटने वाला स्वस्थ रहता है।

५– **प्रातकाल खटिया तें उठि के पियै तुरन्तै पानी।**
ता घर कबहूं बैद न आवै बात घाघ कै जानी॥
इसमें उषः पान का लाभ बताया गया है।

६– **आसोज दूध ने चेत चणां। मरे नी तो दुख देखे घणां**। (मालवी) आश्विन में दूध और चैत में चना हानिकर होते हैं।

कहावतों का अध्ययन

कहावतों में किस प्रकार की ठोस सामग्री है, इसका परिचय मात्र देने के लिये हमने ऊपर कुछ कहावतों का उल्लेख किया है। इनसे सर्वसाधारण के लिये इनकी उपयोगिता का अनुमान लगाया जा सकता है। ये गँवारों की नहीं, बल्कि अनुभवी बुद्धिमानों की रचनायें हैं। यदि विद्वान् लोग वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इनका अध्ययन करें तो उन्हें इनमें लोक जीवन से सम्बन्ध रखने वाली बहुत-सी बातें मिल सकती हैं। इतिहास-प्रेमी इनमें इतिहास की सामग्री पा सकते हैं। बहुत-सी कहावतें ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर बनी हैं। अनुभव के पीछे प्रायः कोई न कोई घटना होती है। ऐतिहासिक वृत्तान्तों का सारांश कितनी ही मारवाड़ी कहावतों में मिलेगा। यही नहीं, इनके द्वारा लोक की रीति नीति और जातीय विशेषताओं की अच्छी जानकारी हो सकती है। उदाहरण के लिये इस कहावत को देखिये—'तिरिया तेल हमीर हठ चढ़ै न दूजी बार।' इसका सीधा अर्थ यह है कि स्त्री के विवाह का न तो दुबारा हल्दी-तेल चढ़ता है और न हमीर का हठ। अर्थात् स्त्री का विवाह और हमीर का प्रण एक ही बार होता है, वह बदलता नहीं। इसमें एक सामाजिक प्रथा और एक ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत है। दोनों का मान है, इसलिये लोक में उनकी चर्चा होती है। लोकोक्तियों से समाज के आदर्श, जनता की मनोवृत्ति और जातीय संस्कृति और सभ्यता की नाप आसानी से मिल जाती है। समाज-शास्त्रियों को उनमें समाज-विज्ञान की अनेक बातें मिलेंगी। व्यवसायियों को उनमें प्रयोग-सिद्ध सूत्र मिलेंगे। शिक्षा-प्रेमियों को ज्ञान का विशाल भाण्डार मिलेगा। शिक्षित जनता को लोक ज्ञान के इस अक्षय-वट की खोज करनी चाहिये।

कहावतों का संग्रह

कहावतें प्रायः प्रान्तीय बोलियों में ही मिलती हैं। इसमें आश्चर्य नहीं, क्योंकि वे बोलचाल की ही सामग्री हैं। उनका मजा भी जितना मौके पर कहने में आता है, उतना पढ़ने में नहीं। यदि हिन्दी के विद्वान् अवधी, ब्रज, मारवाड़ी, भोजपुरी और बुंदेलखंडी आदि बोलियों में प्रचलित भिन्न-भिन्न विषयों की लोकोक्तियों का संग्रह प्रस्तुत करें तो उससे, जैसाकि मैं पहले कह चुका हूँ, सम्पूर्ण व्यवहारिक जीवन का एक सुन्दर तथा प्रामाणिक शास्त्र तैयार हो सकता है। कुछ बोलियों के संग्रह निकले हैं, लेकिन वे पूर्ण नहीं हैं। उनमें सामान्य नीति और हास्य-व्यंग की उक्तियों की ही प्रचुरता मिलती है। वास्तव में, आचार-व्यवहार और कला-व्यवसाय सम्बन्धी कहावतों का संग्रह मुख्य रूप से होना चाहिये। भिन्न-भिन्न पेशों से सम्बन्ध रखने वाली बहुत सी काम की बातें और अनेक रोगों की अनुभूत औषधियां कहावतों में कही गई हैं। उनको प्रकाश में लाने से जनता का यथेष्ठ उपकार हो सकता है। यही समय है, जबकि हम अपने युगों-युगों के बिखरे हुये ज्ञान का संचय करके उसको सर्वसाधारण के लिये अधिक उपयोगी बना देना चाहिये।

मालवी कहावतें

श्रीरतनलालजी मेहता बी०ए०, एल-एल०बी०, प्रतापगढ़(राजस्थान) ने हाल में कुछ मालवी कहावतों का संग्रह किया है। इस दिशा में उनका प्रयत्न सराहनीय है। बिखरे हुये को बटोरना कितना कठिन कार्य है, इसका अनुभव मैं ग्रामगीतों के संग्रह के समय कर चुका हूँ। स्त्रियां जब साथ बैठकर किसी अवसर पर गाने लगती हैं तो उन्हें गीतों का अभाव नहीं मालूम पड़ता।

लेकिन बोल-बोलकर लिखवाते समय उन्हें एक गीत भी ठीक से याद नहीं रहता। कहावतों के सम्बन्ध में भी यही बात है। अशिक्षित क्या शिक्षित लोग भी पारस्परिक वार्तालाप में बीसों कहावतों का प्रयोग करते रहते हैं, लेकिन उनसे सोच सोचकर लिखवाने को कहिये तो संभवतः उन्हें दो चार ही याद पड़ेगी। संग्रह के कार्य में बड़े धैर्य की आवश्यकता होती है। मेहताजी के बिना बताये भी मैं कह सकता हूँ कि मालवी कहावतों के संग्रह-कार्य में उन्हें काफी परिश्रम करना पड़ा है। ऊपर मैंने मालवी कहावतों के जो उद्धरण दिये हैं, वे उनके संग्रह से ही लिये गये हैं।

मालवी की लोकोक्ति-सम्पदा इतनी ही है, यह नहीं कहा जा सकता। मालवा किसी समय बड़ा सम्पन्न प्रदेश था। प्राचीन कहावतों में उसकी सम्पन्नता का संकेत मिलता है—

"सावन सुक्ला सप्तमी जो गरजै अधिरात।
तू पिय जैयो मालवा, हौं जैहों गुजरात॥—" घाघ

सम्पन्नता में लोक-सभ्यता का विकास स्वाभाविक है। निश्चय ही, वहाँ पर लोकजीवन का अच्छा विकास रहा होगा। वहाँ अनुभव और ज्ञान की प्राचीन सामग्री बहुत मिल सकती है। आशा है श्री पुरुषोत्तमजी मेनारिया और उनके जैसे अन्य उत्साही साहित्यिक बन्धुगण भिन्न-भिन्न विषयों की लोकोक्तियों के और भी संग्रह प्रस्तुत करके साहित्य जगत को प्रदान करेंगे।

बसन्त-निवास,
सुलतानपुर (अवध)

रामनरेश त्रिपाठी

प्रस्तावना

"ज्ञानराशि के संचित कोष को साहित्य कहते हैं" कहावतों में ज्ञान-राशि के कोष का एक बड़ा भाग सुरक्षित है। यह ज्ञान पुस्तकों का नहीं है, न कॉलेज और युनिवर्सिटी की परीक्षा का यह फल है, यह तो जीवन का सार है, यह अपार कष्ट भुगतने के पश्चात् प्राप्त निधि है, जीवन के उत्थान और पतन की नाव में बैठ कर, सुख दुःख की तरंगों में बहता हुवा, कष्ट और बलिदानों के भँवर जालों में होता हुवा अपने आप को सब आपत्तियों से बचाता हुवा, यह मानव जब निर्विघ्नता पूर्वक जीवन-समुद्र से पार जाता है. तभी उसके यह सब सुख दुख के अनुभव कहावतों का रूप धारण कर लेते हैं! इन कहावतों में जीवन है, जहाँ भी बातचीत में इनका उपयोग किया जाता है वहाँ उस बातचीत में सत्य की छाप लग जाती है, जीवन का वास्तविक रूप झलकने लगता है और जैसे घड़े पर लाख लगी हो, उस बातचीत की सफलता निश्चित हो जाती है। अनेक लोग ऐसे होते हैं जो दुर्भाग्यवश जीवन के मँझधार में डूब जाते हैं, वे ऐसे अभागे हैं कि जिस पेड़ के नीचे बैठे वह पेड़ ही सूख जाये, सोने के हाथ लगाओ तो वह मिट्टी हो जाये,

उन्होंने दुनियां में सब परिस्थितियों में सबको देखा है और उनका कहना है कि—

सगो समे पेचाणिये, मितर वगत पड्यां !
नारी टोटे जाणिये, हाकम काम पड़्यां !!

सगे सम्बन्धियों को समय पर पहिचानना चाहिये, मित्र को समय आने पर, स्त्री को घाटा पड़ने पर और हाकिम को काम पड़नें पर जानना चाहिये- इस तरह वे सबसे अनुभव पाकर अन्त में कहते हैं कि "भगवान कभी किसी से काम नहीं पटके"

इस तरह से जो संसार रूपी प्रयोग शाला में किये हुए सुख दुख के मधु व कटु प्रयोग हैं उनको कहावतें कहते हैं ये प्रयोग सफल प्रयोग हैं और भावी पीढ़ी के लिये मार्ग दर्शक का काम देते हैं !

कविवर लांगफेलो ने कहा है:—

जग में काल मरु स्थल सम है उस पर उनके पैर निशान,
उनपर डग रखते जो जाओ पाओगे तुम यश और मान ।
देख तुम्हारे चिन्ह पदों को जन अन्यान्य लगेंमे पार,
मरु में उनके दर्शन करके साहस होगा उन्हें अपार ॥

दूसरी बात जो इन कहावतों के विषय में महत्वपूर्ण है वह यह है कि इन कहावतों में नीति, धर्म, राजनीति आदि शास्त्रों का सार भरा पड़ा है, मामूली सी कहावतें देखने और सुनने में साधारण पर असर करने में रामबाण का काम करती हैं और मतलब में इतनी गहन व सार गर्भित हैं कि बड़े शास्त्रों का सारांश इनमें आ जाता है ! कहा है "दया हरिको धरम नो और

क्रोध समान पाप नो" याने दयाके समान धर्म नहीं और क्रोध के समान पाप नहीं, दया शेक्सपीयर के शब्दों में Mercy is double blessed- अर्थात् दया करने वाले को और जिनपर दया की जाती है उन दोनों को लाभ होता है. उपकार करने वाले के जीव को भी सुख होता है. कि उसके हाथ म किसी का लाभ तो हुवा और जिस पर उपकार किया जाता है, वह तो सुखी है ही। इसी तरह क्रोध के समान पाप नहीं, क्रोध का असर दया के विपरीत होता है, जो क्रोध करता है उसको भी कष्ट होता है कारण कि क्रोध करने वाले के शरीर में एक प्रकार का विष फैल जाता है, और सामने वाले के लिये तो हानि कारक है ही क्योंकि क्रोध सदा परपीड़न का रूप धारण करता है। भगवान व्यास ने कहा है!

यो अष्टादशः पुराणांच व्यासस्य वचनं द्वयः ।
परोपकाराय पुण्याय: पापाय: पर पीडिनः ॥

इसी तरह से "भण्या पर गण्या नहीं", पढ़े लिखे हैं पर संसार के ज्ञान से शून्य हैं तो फिर यह पढ़ना लिखना किस काम का, ऐसे मूर्ख पण्डित हमेशा हँसी के पात्र बनते हैं!

सर्व शास्त्र-सम्पन्ना लोकाचार विवर्जिताः ॥
तेऽपि हास्यंता यान्ति यथा ते मूर्ख पण्डिताः ॥

इतना ही नहीं इन कहावतों में मानव जीवन के प्रारंभ से लगा कर आज तक के अनुभव भरे पड़े हैं कृषि का महत्व जैसा प्राचीन कालमें था। जब कि मनुष्य जमीनसे अन्न पैदा करके काम में लाने लगा, वैसा ही महत्व विज्ञान की पाली हुई दुनिया में आज भी है— कहा है— 'धन खेती, धृक चाकरी, धन धन हो वेपार खेती को श्रेष्ठ ही नहीं सर्व श्रेष्ठ कहा है— नोकरी को

धिक्कारा है क्योंकि उसमें पराधीनता है "पराधीन सपनेहु सुख नाहीं" और आगे कहा है कि 'धनधा' हो वेपार-वेपार जिसका कोई पार नहीं यानी रंक से राजा बन जाना कोई बड़ी बात नहीं, इसलिये इसका महत्व और भी विशेष है- पर एक कोई सज्जन थे जो कार्य करना तो नहीं चाहते थे. पर फल पूरा भोगना चाहते थे, उन्होंने खेती की पर काम देखने को कौन चिन्ता करे, आखिर टोटेचन्दजी ने सताया- तब उन्होंने अपने घरकी दीवार पर लिख दिया कि "खेती कोई करजो मती खेती धन रो नाश" तब एक महाशय जो खेती में स्वयं काम करते थे और लाभ उठाते थे उन्होंने उसके नीचे लिख दिया कि "धणी नी आयो पास" यानी मालिक पास नहीं आया क्योंकि कहा है "खेती धणी हेती । आधी खेती बेटा हेत और हाली हेती ने हिंटा हेती" यानि खेती तभी पूरी हो सकती है जब मालिक स्वयं काम करे दूसरे पर बिलकुल निर्भर नहीं रहे- पुत्र पर भी निर्भर रहे तो खेती आधो रह जाती है और हाली पर निर्भर रहे तो खेती अगूंठा बता देती है- और खाली खेती ही क्यों ऐसी बहुत सी बातें हैं जिन में काम खुद को ही सम्हालना पड़ता है—

जैसे:- खेती पाती विनती मोरा तणी खुजार ।
जो सुख चावे आपणो तो हाथो हाथ हमार ॥

खेती का व्यौपार, साजे का व्यौपार कहीं अर्ज करना और पीठ की खुजाल मिटाने के लिये स्वयं को काम करना पड़ता है ।

इन कहावतों में देश की सामयिक विचार धारा के प्रवाह का भी पूरा पता चलता है- आज भारतवर्ष में ८० लाख साधु

कितना लाभ है यह तो सर्व विदित ही है। तुलसीदासजी ने इनको चलता फिरता तीर्थ राज कहा है और सब दिन सबके लिये सुलभ बतलाया है और इनकी संगति के लिये कहा है—

एक घड़ी आधी घड़ी आधी में पुनि आध।
तुलसी संगत साधु की हरे कोटि उपाध॥

परन्तु आज कल इनकी संगति से किसी को भी व्यसन नहीं हुवा हो तो वह व्यसनी बनजाता है", "जिमने न पी गांजे की कली वो लड़के से लड़की भली" आदि मन्त्र मनुष्य जपने लग जाता है- कहां वे साधु जिनके लिये "पराया धन मिट्टी बराबर व पराई स्त्री मां बराबर" मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु 'लोष्ट वत, आत्मवतसर्व भूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः" आजकल तो ऐसे बाबा लोग हैं जिनका उद्देश्य यह है कि "थारी भी खाऊं मारी भी खाऊं और कई इनाम पाऊं" तेरी भी खाऊं मेरी भी खाऊं और क्या इनाम पाऊं और सहज ही में बाबे हो जाते हैं "मारा फेरी मार में, तलक कीदो खार में ने जोगी व्या उबतार में" जंगल में माला पहनी, नाले में तिलक किया और जल्दी में जोगी बनगये! और फिर लोभी गुरु को लालची चेले मिल ही जाते हैं "लोभी गुरु ने लालची चेला, कोई नरक में ठेलम ठेला' फिर इन बाबा लोगों का कोई खास ठिकाना नहीं, "बाबा उठे ने बग़ल में हाथ" "बाबा उठे ने लेखा पूरा" यह लोग तो समाज पर भार हैं - इसका पता इसी से लगता है- कि "बाबारे छोगो वेतो गाम पे भार" बाबों के लड़का हो तो गांव पर भार पड़ता है- और इनसे दूर रहना ही अच्छा वरना इनसे भिड़ करके कोई भी फायदा नहीं उठाता है- 'बाबाती लड़नो ने राखोड़ा (राख) में लोटणो" इनको मुफ्त का चन्दन लगाना मिल ही जाता है- "मफत रो चन्दन घसरे लाला

तलक करीने घरे चाल्या" फिर साधु होने में क्या देर लगती है--

इसी तरह से तम्बाखू के विषय में भी कहा है- तम्बाखू का जिस तरह से आज प्रचार हो रहा है उसे देख कर कोई भी समाज व देश-प्रेमी प्रसन्न नहीं हो सकता, तम्बाखू में एक प्रकार का विष है जो शरीर के पोषक तन्तुओं को हानि पहुंचाता है- हमारे शास्त्रकारों ने भी कहा है।

धूम पानं रतं विप्रं दानं कुरुवन्ति यो नरः ।
दातारो नरक यान्ति ब्राह्मणो ग्राम शूकरः ॥

जो ब्राह्मण धूम पान करता है और उसको कोई दान दे तो दान देने वाला नर्क में जाता है और ब्राह्मण ग्राम शूकर होता है। आज भी यूरोप की रेल गाड़ियों में सिगरेट पीने के लिये अलग डिब्बे नियत रहते हैं और पार्टियों में भी सिगरेट पीने के लिये अलग कमरे में जाना पड़ता है। महात्मा गांधी ने कहा कि तीसरे दर्जे के डिब्बे में जब लोग बीडी वगैरा पीते है तब वहाँ बैठना कठिन हो जाता है। इन कहावतों में भी पता चलता है कि समाज तम्बाखू के प्रचार का घोर विरोधी है और उसको अच्छा नहीं समझता है।

पीवे जन्डा आंगणा ने खावे वन्डा घर ।
सूंगे वेरा छीतरा ने तीन इ बराबर ॥

जो पीता है उसका आंगन, खाता है उसका घर और सूंघता है उसके कपड़े तीनों बराबर, तम्बाखू पीयेंगे तो घर के आंगन में आग सुलग रही है राख बिखरी हुइ है तम्बाखु इधर उधर पड़ी है बीड़ी के टुकड़े और जली हुई माचिस की काड़ियें अलग बिखरी हुई हैं साफी अलग पड़ी हुई है और सारा चौक खराब, धूएँ से काला हो रहा है और खाने वाले के घर की

भी हालत ऐसी ही है

आओ मर्दां खाओ जर्दां, थूंक थूंक ने घर भर दां

तम्बाखू खाई कि जहाँ बैठे वहां ही थूंकना प्रारंभ कर दिया दीवार के कोने में, मेज की आड़ में, आलमारी के पीछे, नाल में जहां मौका मिला वहां ही हाथ मार दिया और यही हालत सूंघने वाले के वस्त्र की है।

आज हमारे समाज की प्राचीन श्रृंखला छिन्न भिन्न हो गई- समाज का प्रत्येक पोषक अंग आज पतन को प्राप्त हो गया है और समाज के अंगों की यह दीनावस्था कहावतों में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रही है कि हालत तो आज ऐसी है कि 'कारो अच्चर भैंस बराबर" काला अच्चर भैंस बराबर व "लाडू बाटी हाटे राज खोई दियो" लड्डू बाटी के लिये राज्य खो दिया, जो दे वही जजमान, वह ब्राह्मण की विद्वता उसका वह अपार ज्ञान, वह उसका भूदेवपन सब ही गया अब तो उसका सार फिरने में है।

फरे वाणीया रो फरे बामण रो फरतो लादे सेजो
थूं क्यूं फरे बराई रा छोरा थारे घरे वणजे रेजो

ब्राह्मण फिरे तो उसे फायदा जितना ज्यादा भिक्षावृत्ति करेगा उतना ही उसे लाभ होगा- यही हालत बनिये की है, जितने गांव सौदा बेचने जायगा उतना ही फायदा होगा- पर बुनकर को तो फिरने से कोई लाभ नहीं, क्योंकि उसे तो कपड़ा बुनना है। ब्राह्मण ने अपना पुरुषार्थ खोकर भगवान भरोसे अपने आपको रख दिया है- "बामण थारी गाय ने नार मारे, वण ने राम मारेगा" ब्राह्मण तेरी गाय को शेर मारता है उसे राम मारेगा। उसमें अपनी वस्तु की रक्षा करने की

शक्ति नहीं है। हमारे क्षत्रिय समाज में खाली दिखावा ही दिखावा है, शान ही शान है:—

जै रुघनाथ रा झड़ाका लागे चढ़वा मोटी घोड़ी।
अन तन रा फांका पड़े ने पग में फाटी जौड़ी॥

जहाँ ही गांव में निकले नहीं कि जै रुघनाथ की झड़ी लग जाती है पर अंदर हालत क्या है, भगवान जाने काम कुछ नहीं है "ठाकर लोगे ठोरी या भरी ने या ढ़ोरी" और विवाह शादी में जो जाय उसकी खैर नहीं है।

हरदारां री जान में रेणो तान बान में।
बात करनी कान में जीमणो आसमान में॥

इतना ही नहीं जो कुछ आता है, कामदार, मुसद्दी, साहूकार खा जाते हैं और उनके लिये तो दिवाला आगे- ठाकर खाय ठीकरी ने चाकर खाय चूरमो, जो खास सेवक है उनको कोई पूछ नहीं।

ठाकर थारी चाकरी भोंदू वे जो करे
कपड़ा फाड़े गांठ रा ने हांजी २ करे

इसके सिवाय मान के बड़े भूखे हैं पर जनता मान करे तब एक ठाकर साहब ने कहा कि "केवे छोरी ठाकुर" कि गांव वारा केवे जदी, और फिर सबके सब जागीरदार है इनके लिये पागडी बान्धे खांगादार, आंगी पेहरे घेरदार, जूती पहरे नोकदार, आगे चाले चोबदार, पाछे चाले लेणदार और वच में चाले जागीरदार" इस तरह हमें यह साफ दिखाई देता है कि हमारा क्षत्रिय समुदाय घोर निद्रा में मारुड़ी व दारुड़ी में मस्त होकर अपने आपको व अपने समाज को भूला हुआ है।

हमारा वैश्यवर्ग 'कृषि गौरक्ष वाणिज्यं वैश्य कर्म स्वभावतः' इन सबको भूला हुवा है आज उसकी वणिक बुद्धि समाज के काम में नहीं आती आज तो "वाणयो खाय जाणिया ने" "वाणियो मित्र ने वेश्या सती, कागो हंस ने बुगलो जति"- आज मुनाफाखोरी ने समस्त जनता का पैर काट दिया है आज व्यौपारी 'अणाज करे जो वाणियो ने चोरी करे जो चोर" अपने लाभ के लिये दूसरे के खून का प्यासा होरहा है—

वाण्या थारी आण कोई नर जाण्यो नहीं ।
पाणी पीये छाण, लोहू अण छाण्यो पीये ॥

कहते हैं कि लंका में बनिया नहीं था, बनिया होता तो लंका की यह दशा नहीं होती । लंका में रावण के दो मन्त्री थे एक तो तेली और दूसरा रेबारी- जब रामचन्द्रजी का हमला लंका पर जोरों से हुवा तब रावण ने तेली से पूछा कि क्या करना चाहिये । तब तेलीने कहा कि अभी तेल देखो तेलकी धार देखो । फिर क्या था मामला आगे टल गया । फिर परिस्थिति विकट हो गई और रेबारी से पूछा तो उसने जवाब दिया कि अभी देखो तो सही ऊंट किस करवट बैठता है । आखिर रावण की जो दशा हुई वह सबको विदित ही है । इसलिये कहते हैं कि लंका में बनिया नहीं था वरना लंका की यह दशा नहीं होती ।

पिछड़े लोगों की समाजमें कहां कदर ? उनके लिये तो बेगार है ही- "चमार के छोड़े बैगार नहीं छूटती" और "चमारने चमार बावजी केवे तो चोका पर चड़े", "चमार गंगाजी गया तो मेंढक माथा पे". एक चमार गंगाजी नहाने गया और हरकी पेड़ी पर नहा रहा था कि अपने मनमें सोचा कि यहां तो मैं आजाद हूँ ! इतनेम एक मेंढक सर पर आ बैठा । तब वह कहने लगा कि जो सताये हुवे है उनको कोई नहीं छोड़ता ।

संसार में साम्यवाद के सिद्धान्त के अनुसार दो ही जातियां हैं ! शोषक वर्ग व शोषित वर्ग । जो शोषक वर्ग है उन का सब धन उन्हीं के श्रम से कमाया हुवा नहीं है ! उनको तो ऐसा कहा है कि "भागवाना रे भूत कमावे अण कमायो आवे" धनवान लोगों के भूत कमाता है और उनके आकाश में हल चलते हैं। अर्थात् बिगर कमाया आता है, ईश्वर भी भरे में भरता है, घी में घी सब कूड़े. (डाले) तेल में घी कूण कूड़े. पर फिर भी गरीब श्रमिक लोग इस घी पर प्रसन्न नहीं हैं वे तो अपनी भाजी पर ही राजी हैं- वे कहते हैं ! कि लूणी रा जो पूणीरा, ने भाजी रा जो ताजी रा. मक्खन खाने वाले रुई के बराबर और भाजी खाने वाले हमेशा ताजे रहते हैं। और उनको अपनी भाजी के स्वाद पर इतना अभिमान है कि वे कहते है कि 'राणी रीझे भाजी रा पाणी पर' वे आगे कहते हैं-

आलणी घर घालणी खाटो खबरदार ।
दार ए दार मारी छाती मती बार ॥

उनके लिये तो आलणी घर घालणी— आलणी की भाजी सारे घर का भरण पोषण करने वाली है। और 'खाटो खबरदार' होशियार बना देती है- और दाल से तो वे बिलकुल प्रसन्न नहीं हैं-- क्योंकि महँगी तो होती ही है- पर साथही देर से पकती है- और इनके पास इतना समय कहां। उनको तो काम के मारे फुरसत नहीं है "भूख न देखे भाजी और नींद न देखे बछावणो" थके थकाये गरीब आकर जो कुछ मिले वह खाकर पड़ रहते हैं। यदि कोई उन्होंने आवाज उठाई भी तो वहां यहां तक सीमित रह जाती है। क्योंकि "दुनियामें पैसे वालों की पेसी और गरीबों की ऐसी की तैसी"

साहित्यिक दृष्टि से देखें तो, साहित्य की भी प्रचुरता है। पतझड़ ऋतु में पत्ते झड़ते है और उसके बाद बसंत ऋतु आती है और नये पत्ते आते हैं। इसी दृश्य को देख कर Shelley के मन में ये भाव उत्पन्न हुये कि O wind, if Autumn comes Can spring be far behind उसके हृदय में निराशा के अन्धकार की जगह आशा का प्रकाश फैल गया। महाकवि पन्त ने इसी दृश्य को देख कर निम्न लिखित भाव प्रकट किये।

झड़ पड़ता जीवन डाली से मैं पतझड़ का सा जीर्णपात
केवल केवल जग आंगन में लाने फिर मधु का प्रभात

इसी दृश्य को लेकर हमारी राजस्थानी कहावतों में कितने सुन्दर भाव प्रदर्शित किये हैं, ये भाव उपरोक्त भावों का पुनरावर्तन नहीं है। आखिर एक सर्वथा नवीन भाव है, जिसका अर्थ व सार कदापि साधारण नहीं हो सकता।

पिप्पल पान खरन्ता हंसती कुंपरियाह
मो बिती तो बीतसी धीरी बापरियाह

पतझड़ की मोसम के समय का अन्त है, पीपल के पत्ते खिर रहे हैं और नवीन कूंपल का भी आगमन हो रहा है, प्राचीन पत्ते के गिरने पर कुंपल हंसती है, उत्थान और पतन का सजीव वर्णन है, एक का पतन दूसरे के उत्थान का कारण होता है, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। धन और यौवन से मदोन्मत हुये लोगों का उन लोगों की तरफ उन्माद भरा कटाक्ष है जो

जीवन के थपेड़े खा खा कर जर जर हो गये हैं, पर आगे का जवाब अत्यन्त प्रभाव कारी है। पत्ते का जवाब मुहतोड़ है, इस जवाब में अनुभव का सार,जीवन का निचोड़ और सुख दुःख के परस्पर रगड़ से निकली हुई आह है, पत्ते का उत्तर स्पष्ट है, 'धन और यौवन के मद में अपने आप को मत भूलो, दिन के पश्चात् रात्रि का आगमन अवश्यम्भावी है, जो दिन हमारे आये है, वे ही दिन तुम्हारे लिये भी निश्चित रूप से आवेंगे और फिर आश्चर्य तो यह है कि उत्तर कितनी शान्ति के साथ दिया गया है,"मो बीती सो बीतसी धीरी बापरि थाह"न तो इसमें चिड़चिड़ापन है और न दूसरे के कटाक्ष करने पर। जो उत्तर दिया गया है, न उसमें कटुता ही है, परन्तु एक हास्य मिश्रित उपदेश है कि दूसरे के बुरे दिनों पर मत हँसो जो उनपर बीती है वह तुम पर भी बीत सकती है, दिन सबके लिये एक समान नहीं होते है, फिरती फिरती छाया है। यौवन के पश्चात् वृद्धावस्था आवेगी ही और फिर तुम पर भी दूसरे हंसेगे जैसे तुम अभी दूसरे पर हंस रहे हो।

इतना ही आगे और देखिये।

पान झरन्ता इम कहे सुन तरुवर गिरिराय
अब के बिछुड़े कब मिले दूर पड़ेंगे आय
तब तरुवर उत्तर दियो सुनो पान इक बात
या घर की यही रीत है इक आवत इक जात

यही पतझड़ का मौसम है जब पत्ते के गिरने का समय।

आया, तब पत्ते ने उस वृक्षश्रेष्ठ के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की। साथ ही भविष्य के वियोग के लिये चिन्ता प्रकट की, पर वृक्ष का उत्तर कितना सुन्दर है, इस सरल पथ में शास्त्र का महान् सिद्धान्त छिपा हुआ है, भगवान कृष्ण के गीता के अमर वाक्यों की प्रतिध्वनि इसमें स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही है। आवागमन के सिद्धान्त का इतना सुन्दर प्रतिपादन किया गया है कि हर एक के हृदय में इसकी छाप लग जाती है।

गीता में कहा है:—

वासांसि जिर्णानि यथा विहाय, नवानि गृणाति नरो पराणी
तथा शरीराणि विहाय जिर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही

जिस तरह कपड़े पुराने हो जाने पर नवीन कपड़े धारण कर लेते है, फिर उसी प्रकार शरीर के नाश होने पर आत्मा नवीन शरीर धारण कर लेती है, फिर शोक कैसा यही भाव इसमें है, इस घर की यही रीत—पत्ते आते हैं, प्राचीन होने पर गिरते हैं, और नवीन पत्ते आते हैं, इक आवत इक जात, आवागमन होता ही रहता है, फिर शोक कैसा, चिन्ता कैसी ?

इसी प्रकार से निम्न लिखित लोकोक्ति नोकर पेशा लोगों के जीवन का कैसा सुन्दर दिग्दर्शन कराती है। और विशेष करके ऐसे समय में जबकि वेतन तो सीमित है और आवश्यक वस्तुओं के भाव सुरसा के बदन की तरह नित्य प्रति बढ़ रहे हैं।

पहले हफ्ते चंगम चंगा,
दूसरे हफ्ते तंगम तंगा,
तीसरे हफ्ते कसाकसी,
चौथे हफ्ते फाकाकसी।

यों तो उपरोक्त कहावत में बहुत थोड़े शब्द काम में लाये गये हैं, परन्तु जो शब्द काम में लाये गये हैं वे मतलब में इतने गहन हैं कि समस्त वेतन पर निर्वाह करने वालों का जीवन का चित्र खींचकर रख दिया गया है। महीने के प्रथम सप्ताह में जबकि वेतन प्राप्त होता है उस समय की मनोदशा का वर्णन शब्द "चंगम चंगा" से विदित होती है। जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि वेतन पाने वाला सम्पूर्ण रूपेण अच्छी हालत में है, परन्तु उसकी यह स्थिति ज्यादा देर तक नहीं रहती, ज्योंही दूसरा सप्ताह प्रारम्भ होता है। परिस्थिति संकटमय हो जाती है। जैसा कि शब्द "तगम तंगा" से मालूम होता है। प्रत्येक बात में तंगी करनी पड़ती है। हाथ को रोकना पड़ता है। आवश्यकताओं पर अंकुश लगाना पड़ता है। तीसरा सप्ताह प्रारम्भ होते ही खींचा तानी आरम्भ हो जाती है। दोनों सिरे को मिलाने का भारी प्रयास करना पड़ता है। और इसीलिये शब्द 'फाकाकसी" काम में लाया गया है और चौथे सप्ताह में तो व्यवस्था भंग हो जाती है और भूखे मरने की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। जैसा कि शब्द "फाकाकसी" से स्पष्ट ज्ञात होता है।

इस तरह से हम यह देखते हैं कि हमारी इस कहावत के प्रत्येक शब्द में बड़ा अर्थ छिपा हुआ है-साहित्यिक दृष्टि से इस कहावत की महत्वता भी उतनी ही अधिक है जितनी कि इसकी महत्वता मानव-जीवन के एक पहलू को स्वीकृत करने में है।

इसी तरह से निम्न लौकोक्ति कितनी उत्कृष्ट उपमाओं का भण्डार है-- कवित्व की पराकाष्ठा है !

वानर थो ने मद पियो विंछू चटक्यो आय ।
रुख चड्यो कंमच लगी क्यूं न करे उत्पात ॥

पहले तो बन्दर, चञ्चलता का अवतार ! फिर उसने पिया शराब ।

"पेला तो वऊ बावरी ने पछे खादी भांग" पहले तो बहू बावरी और फिर उसने खाई भंग" पर इतने पर भी अन्त नहीं हुवा- फिर उस बन्दर को बिच्छू ने काटा तो वह हड़बड़ा कर वृक्ष पर चढ़ गया तो वहां उसके कंमच (एक प्रकार की फली जो शरीर पर लग जाने से भयंकर खाज और पीड़ा पैदा करती है), लग गई अब फिर वह उत्पात क्यों न करे ?

गोस्वामीजी ने भी कहा है—

गृह गृहीत पुनि बात बस, तेहि पुनि बिछीमार ।
तेही पियावऊ बारुनी करइ काह उपचार ॥

• तुक तो प्रायः कहावतों में होती ही हैं जो कहावतों को मन मोहक बनाने के साथ ही साथ शीघ्र ही हृदयंगम होने में सहायता प्रदान करती है, और इतने पर भी बात यह है कि अर्थ भी उसको ज्यादा प्रभाव पूर्ण बना देता है ।

इसके सिवाय अनुप्रास अंर अन्य अलंकारों का भी समावेश है जो कहावतों को अत्यन्त सुन्दर व साहित्यक बना देते हैं ।

अनेक कहावतों के पीछे तो एक एक स्वतन्त्र कहानी है जिससे उसका महत्व बढ़ जाता है जैसे "जन्डी लाठी बन्डी भैंस" जिसकी लाठी उसकी भैंस-. कहते है कि एक आदमी एक भैंस

को लेकर जा रहा था रास्ते में एक बदमाश मिला जिसके हाथ में एक लाठी थी। उस बदमाश ने उस आदमी को ललकार कर कहा कि यातो सीधी तरह भैंस हवाले करदो या लाठी की देकर सर तोड़ कर भैंस छीन लूगां-- भैंस वाला आदमी बड़ा बुद्धिमान था उसने अपने आपको साधन विहीन पाकर चतुरता से काम लिया। उसने सोचा कि मना करने पर बदमाश लाठी मारकर भैंस छीन लेगा अतएव उसने कहा कि भैंस तुम लेलो पर कम मे कम यह लाठी बदले में मुझे दे दो। बदमाश ने सहर्ष लाठी देदी और भैंस लेकर चलने लगा- भैंस वाले आदमी ने लाठी को कब्जे कर उसको ललकारा कि सीधी तरह से भैंस हवाले कर दो वरना लाठी से काम समाप्त कर दूंगा- बदमाश का ध्यान आया कि सचमुच लाठी से हो अपना काम बनेगा, अतएव उसने भैंस लौटा कर कहा कि लाओ मेरी लाठी- इस पर से भैंस वाले आदमी ने कहा कि कौनसी लाठी जिसकी लाठी उसकी भैंस !

इसी प्रकार से 'पकड़ खान्ड्यारो के नी मूं पकडू थान्डयारो' पति देवता सर्वदा श्रीमतीजी से परेशान रहते थे श्रीमतीजी को कोई भी कार्य कहा जाता तो सदा वे उलटा ही काम किया करती थी। पति देवता उनसे तंग आ गये और उसने सर्वदा के लिये छुटकारा पाने का संकल्प कर लिया- एक बार जब अच्छी बरसात हो रही थी तब पति देवता श्रीमतीजी से बोले कि देखो ऐसे समय में अपने पीयर मत जाना। तो श्रीमतीजी बोली कि मैं तो अवश्य ही जाऊँगी और जाने को तैयार हो गई। तब पति देवता बोले कि अगर जाती हो और नहीं मानती हो तो तुम्हारे जेवर गहना वगैरा सब पहन लेना और कपड़े भी अच्छे पहन लेना। फिर क्या था श्रीमतीजी ने कपड़े भी मामूली

पहन लिये और गहने वगेरा और पहनने के बजाय जो थे वह भी खोल दिये। पति देवता ने भगवान को धन्यवाद दिया और एक बैल पर तो आप बैठे और दूसरे पर श्रीमतीजी को बैठाया और चले। रास्ते में नदी मिली जो पूरे वेग से बह रही थी और जिसमें बरसात के कारण बाढ़ आरही थी उन लोगों ने बैलों के सहारे नदी पार करने का विचार किया- एक बैल तो खान्ड्या था यानि जिसके सींग नहीं थे और दूसरा बैल बान्ड्या था जिसके पूंछ नहीं थी। जब नदी का बहाव बढ़ने लगा तो पति देवता श्रीमतीजी से बोले कि खान्ड्या बैल की पूंछ पकड़ लो- पर चूंकि श्रीमतीजी सीधा काम करना सीखी नहीं थी अतएव वे बोली कि नहीं मैं तो 'बान्ड्ये' (जो कटी पूंछ का था) की पूंछ पकडूंगी- बस उसकी पूंछ पकडने श्रीमतीजी गई, पर पूंछ थी ही कहां, अतएव श्रीमती बहने लगी और नदी की धार में अन्तरध्यान हो गई। पति देवता सकुशल घर लौट आए और कर्कशा से छुटकारा पाया।

बाई बत्तीसा ने वीरा छत्तिसा- एक भाई अपनी बहिन के यहां गया तो बहिन ने उसके सामने खाने के लिये एक थाली में गेहूं भर कर रख दिये और कहा कि खाओ उसने पूछा कि गेहूँ क्यों रखे तो उसने कहा रोटी, लापसी, बाटी वगेरा सब चीजें गेहूँ से बन सकती हैं- भाई चला गया- अब बहिन के घर विवाह का अवसर आया और भाई के यहां मायरा लाने को बत्तीसी भेजी- भाई बहन के यहां कपास ले गया- बहन ने पूछा कि मायरे के कपड़े कहाँ। तब भाई ने कपास बताकर कहा कि इस कपास से पगड़ी लूगड़ा, लहंगा वगेरा सब बन सकते हैं।

बूंद री चूकी हौद तो नी भराय- एक राजा साहब भरी

सभा में बैठे थे और अपने शरीर पर अत्तर लगा रहे थे कि एक बूंद अत्तार की जमीन पर गिर गई तो फौरन राजा साहब ने हाथ से उसे पोंछली इस पर सभी सभासद मुस्करा दिये। राजा साहब झेंप गये और दूसरे दिन अपनी झेंप मिटाने को अत्तार का होज भराया और सब सभासदों को फाग खेलने के लिये आमन्त्रित किया। उस पर एक सभासद बोला कि 'बूंद री चूकी होदती नी भराय' अर्थात् समय चले जाने पर कितना ही प्रयत्न किया जाय सब निष्फल होता है।

इतो राणाजी रा हारा है- एक शहर में बड़ी पोल थी। एक विदेशी आया और जब उसने उस शहर में अपना भरण पोषण होने की कोई सूरत नहीं देखी तब उसने सोचा कि एक पोल में मैं भी घुस बैठूँ। यह सोच विचार कर वह श्मशान में जा बैठा और मुर्दा जलाने के पहले राणीजी के साले के नाम को एक सोने की मोहर ले लेता, लोग राजा के नाम से ऐसे भयभीत रहते कि किसी को भी यह सोचने की हिम्मत नहीं हुई कि कहीं राणाजी के भी साला होता है- एक बार एक मौत राज्य घराने में हो गई और उनसे उसने राणीजी के साले के नाम के टेक्स की मांग की. लोग फौरन राजाजी के पास गये- राजाजी ने राणीजी से पूछवा भेजा कि तुम्हारा साला कौन है- राणीजी ने जवाब दिया कि कहीं औरतों के भी साला होता है! तब राजाजी को मालूम हुवा और उन्होंने तुरंत ही उसको पकड़ वाने का हुक्म दिया- लोग उसको पकड़ने गये उतने में तो वो रानीजी के साले भाग चुके थे, इसलिये जो कोई जबर दस्ती की लाग लगा देता है तब उसे रानीजी का साला कहते हैं।

इसी प्रकार से हमें यह स्पष्ट रूप से मालूम हो गया कि

हमारी यह प्रान्तीय भाषा एवं बोलियां स्वतन्त्र साहित्य रखती हैं, इसमें साहित्य के सम्पूर्ण लक्षण विद्यमान हैं- और इसका विस्तार भी कम नहीं है। समस्त राजस्थान जिसका क्षेत्र जोधपुर जैपुर से लगाकर इन्दौर और उज्जैन, रामपुरा, भानपुरा से लगाकर बासवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर, प्रतापगढ़ तक इस भाषा का और इन कहावतों का पूर्ण साम्राज्य है। इतना ही नहीं अनेक कहावतें तो ऐसी हैं- जिनका उद्गमस्थान यही प्रान्त है- जैसे हांटा री भारी ने पोखरजी की जात्रा, गन्ने की भारी भी डाल आना और पुष्करजी तीर्थ की यात्रा भी कर लेना- एक पथ दो काज !

धाम तो गोतम नाथ रो ने पूजा मंगल देवरी- गौतम नाथ प्रतापगढ़ रियासत में एक प्राचीन धार्मिक तीर्थ स्थान है जिसका महत्व इस तरह से है कि गौतम ऋषि के हाथ से कोई हत्या हो गई थी और उसके निवारण के लिये उन्होने सारे भारतवर्ष में भ्रमण किया और ऐसा कहते हैं कि फिर यहां गौतमनाथ में आये और एक पानी के कुन्ड में स्नान कर अपने पाप निवारण किये। आज भी दूर दूर के लोग जब उनके हाथ से जीव मर जाता है तो उसके पापनिवारण के लिये यहां आते हैं और सर्वत्र गौतमनाथ का धाम प्रसिद्ध है- पर यहां जिस देवता की पहले पूजा होती है वह मंगल देव की मूर्ति है- इसलिये कहते हैं कि विख्यात तो कोई हो और पूजा किसी दूसरे की होवे-

जयपुर की निर्माण योजना सचमुच अद्वितीय है और वहां के धार्मिक स्थान, राज्य प्रासाद और किला देखने योग्य है इसका महत्व इसी कहावत से मालूम होता है—

जणी नी देख्यो जैपूरो ।

घणी मनक जमारो लई ने कई करयो ॥

जिसने जैपुर नहीं देखा उसका मनुष्य जन्म लेना ही व्यर्थ हुवा— पर एक अरसिक सज्जन थे, जिनका प्राण पैसा था। वे यह कहावत सुनकर जयपुर आये पर बजाय आर्थिक लाभ होने के उन को सब चीजे देखने में खर्चा करना पड़ा उन की किसी ने जयपुर पर राय पूछी, जले जलाये तो थे ही एक दम कह उठे 'गांठ रा फाड़या गाबा और देख चाल्या जैपुर" अपने घर के कपड़े फाड़े और जयपुर देख कर चले—

एक कहावत और है— 'कटजु ने कटलाड़ काठा गंउ वारी हाबरी मने कोदीनेरे लई चाल। कोदीनेरे नी मले कोदरा आठीनरे नी मले अन्न, आवतां तो आई गई पण जाणे मारो मन्न।

कटजु और कटलाड़ ग्वालियर रियासत के गांव हैं जो अच्छे गेहूँ के लिये प्रसिद्ध हैं।

इसी तरह पास ही पर सरहद मिले हुवे आठिनेरा व कोदीनेरा प्रतापगढ़ रियासत के दो पहाड़ी गांव हैं— जो प्राकृतिक दृश्य के लिये मशहूर हैं— एक औरत कटजु और कटलाड़-गांव की रहने वाली थी और अच्छे गेहूँ खाने की शौकीन भी पर चूंकि दूर से डूंगर सुहावने लगते हैं— सो इस प्राकृतिक दृश्य के मोह में फँस कर कोदिनेरे व आठिनेरे चली आई और शादी करली। पर अब उसे मालूम हुवा कि कोदीनेरे में तो कोदरे भी नहीं मिलते और आठिनेरे में तो अन्न भी पूरा पैदा नहीं होता है और खाली प्राकृतिक दृश्य तो पेट नहीं भरता है सो वह कहती है- कि आने को तो आगई पर जाने मेरा मन्न

यानी भावावेश में आकर कोई काम कर डालना और फिर उसके लिये पछताना, उसपर यह कहावत लागू होती है।

हीता मऊ ने हूती मेली दन उग्यो मड़।
करताणां में करया मेली आई पहुंचा गड़॥

सीतामऊ को सोती रखी बहुत जल्दी वहां से निकले और दिन मड़ गांव में निकला और वहां से चले तो करताणा उस समय आये जब किसान लोग करया समेट रहे थे यानी ११-११॥ बजे और उसके बाद दो पहर में प्रतापगढ़ आ पहुंचे

मड़- सीतामऊ रियासत का गांव है

गड़- प्रतापगढ़ के लिये काम में लाया गया है।

करताणा- प्रतापगढ़ रियासत का गांव है।

जब रेल मोटर की बात चलती है तब पुराने लोग अपना पुरुषार्थ बताने को यह कहावत कहते हैं कि सीतामऊ से प्रतापगढ़ आना कोई बात नहीं थी, सीतामऊ से जल्दी निकलते तो दोपहर के बाद प्रतापगढ़ आ जाते। आज कल सीतामऊ से यह मंदसौर२०मील है और मन्दसोर से प्रतापगढ़२०मील है- और यही सीतामऊ प्रतापगढ़ का रास्ता है- पर इस कहावत से प्राचीन रास्ते का भी पता चलता है।

गड़ तो चितौड़गढ़ और सब गढ़य्या।
ताल तो भोपाल को और सब तलय्या॥

चितौड़ और भोपाल के तालाब की विशेषता है।

तांबो हाटे तलवाड़े जाय- तलवाड़ा बांसवाड़ा रियासत में है और बांसवाड़ा से १० मील है, जो एक पैसे के लिये १० मील चला जाय उसके लिये लागू होती है।

बाटी बदल होजाना - बाटी यह हमारे प्रान्त का विशेष खाद्य पदार्थ है यह आटा बांध कर छोटी गेंद की तरह गोल बना-

कर फिर गोबर के कन्डे की आंच पर सेकी जाती है और पकने के बाद इस पर घी लगाकर दाल के साथ खाते हैं। यह सैनिकों का भी भोजन था - क्योंकि घोड़े पर चढ़े हुवे भाले की नोक से बाटी को आग पर उलट पुलट कर पका लेते थे। बाटी बदल होना अर्थात् दुश्मन की तरफ मिलजाना, विश्वासघात का चिन्ह है।

आग बदल, बाटी बदल वचन बदल बेसूर- एक बड़ी विशेषता इन कहावतों में यह है कि इनमें वे भाव अनायास ही भरे पड़े हैं जो कि सूर-तुलसी, वृन्द, रहीम, वाल्मीकि आदि महा कवियों की कविताओं में है- या दूसरे नीतिकारों के नीति बचनों में है--

गाम री छोरी ने परदेश री लाड़ी- गांव वाली लड़की को छोरी के नाम से पुकारते हैं और बाहर की लड़की को बहू कहते हैं- इसी भाव को तुलसीदासजी ने इस प्रकार व्यक्त किया है—

तुलसी कबहूँ न जाइये अपने बाप के गाम।
दास गयो तुलसी गयो रह्यो तुलसो नाम॥

गई जो गई अब राख रई— बीत गई उसको भूल और जो रहा हो उसकी सम्हाल कर—

बीती ताई बिसार दे आगे की सुधलेय।
जो बनो आवे सहज में ताई में चित देय॥

अंग्रेजी में भी कहा है- Let the past bury its death Act. Act in livaing present.

गेहरा पाणी में बे जदी मोती मले- गहरे पानी में बैठे जब जाकर मोती मिलते हैं जैसे—

जिन खोजा तिन पाइया गहरे पानी पैठ ।
मैं बोरी ढूढन चली रही किनारे बैठ ॥

महाकवि वाल्मीकि ने भी इस भाव को इस तरह से व्यक्त किया है—

बन्दरों ने समुद्र-लंघन जरुर किया पर उसकी गेहराई क्या जाने उसका पता तो उस महान मन्दराचल को है जो समुद्र के नीचे पाताल तक धसा हुवा है—

गुरुजी खाये काकड़ी ने औरों ने दे आकड़ी-- गुरुजी तो ककड़ी खावे और दूसरे को मानता देवे। तुलसीदासजी ने कहा है—

पर उपदेश कुशल बहु तेरे
जे आचरही ते नरन घनेरे

'परोपदेशे वेलायां सर्वोऽपि पण्डिता भवन्ति'

गवांर खाई मरे कि लागी मरे— मूर्ख यातो जिद् में आकर ज्यादा खाकर मरता है या हर एक काम चाहे वह कैसी भी हो उसके पीछे लग मरता है जैसे—

भमरा भूजंग ने सुघड़ नर डस कर दूर बसंत ।
डांस मकड़ो मूरख नर तीन ही लांग मरन्त ॥

मन ने मोती टूट्यो के टूट्यो— मन और मोती टूटने के बाद नहीं मिलता है। रहीम ने भी कहा है—

मन मोती और दूध इनका यही स्वभाव ।
फांटा पाछे ना मिले लाखों करो उपाय ॥

और इसी भाव को हमारी भाषा ने कितने सुन्दर ढंग से व्यक्त किया है।

कांच कटोरा नेनजल मोती दूध अरु मन्न ।
फाटा पाछे ना मिले पेला करो जतन्न ॥

कांच का कटोरा, आंख का पानी, दूध, मन और मोती, इतनी चीजें फटने के बाद नहीं मिलती है इसलिये पहले से ही इनका जतन करना चाहिये ।

गरज नोकरी के लोग पराया— मतलब निकलने के बाद लोग पराये हो जाते हैं । कहा भी है—

मतलब री मनवार नूंत जिमावे लापसी ।
बिन मतलब मनवार राब न घाले राजिजा ॥

रहीम ने भी कहा है—

काम पड़े कुछ और है काज सरे कछु और ।
रहीमन भंवरी के भये नहीं सीरावत मोर ॥

गुस्सो तीन पाव पर आवे सेर पर नी आवे— गुस्सा तीन पाव पर आता है सेर भर पर नहीं आता है ।

सिंहान्नै व गजान्नैव व्याघ्रान्नैव नेवच ।
अजा पुत्रं बलि ददति देवो दुर्बल, घातकः ॥

मो धन जातो जाणती तो आधो देती बांट—

सर्व नाशे समुत्पन्ने अर्धंत्यजति पण्डितः
अर्धे न कुरुते कार्यः सर्व नाशोह दुस्सहः

टाट ने ठाठ-

क्वचित दन्ताः भवेद्दः मूर्खाः क्वचित खडवाट निर्धनः ।
क्वचित काणा भवेत् साधुः क्वचित गानवती सतीः ॥
उत्तमा आत्मनाख्याताः पितुः ख्याताश्च मध्यमाः ।
अधमा मातुलात् ख्याता श्वसुराच्चाधमाधमाः ॥

जो अपने पुरुषार्थ से ख्याति प्राप्त करता है वह तो अति उत्तम है जो पिता के नाम से ख्याति प्राप्त करता है-वह मध्यम है, जो मामा के नाम से विख्यात होता है- वह अधम है, और जो सुसुर के नाम से मशहूर होता है वह महा अधम है। हमारे यहां कहावतों में इस ससुर जमाई के सम्बन्ध को भली भांति समझाया गया है—

पांच कोस रो आवण जावण
दस कोस रो घी घलावण
बीस कोस माथा रो मोर
घर जमाई गण्डक की ठोर

जमाई पांच कोस का रहने वाला है तो उसका आना जाना होता ही रहता है- सो उसकी मान मनुहार साधारण ढंग से होगी, और यदि दस कोस दूर रहने वाले हैं तो फिर चावल वगेरा बनेंगे घी वगेरा अच्छा खर्चा होगा, और सुन्दर पदार्थ बनेंगे और यदि बीस कोस दूर का रहने वाला है तो फिर सिर का मौड़ है- यानी घर पर जैसे कोई सिर का सरदार आया है। और घर जमाई तो कुत्ते की ठोर है, परन्तु इसमें गांव का जमाई रह गया था सो उसका भी वर्णन इस प्रकार से किया है।

परदेश जमाई फूल बराबर
गाम जमाई आधो
घर जमाई गधा बराबर
मन आवे जद लादो—

वहां सुसुर के नाम से जो मशहूर होता है उसको अधम से अधम बताया और यहां पर उसकी कुत्ते और गधे से उपमा दी है-

उपरोक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट हो गया कि अनेक कहावतें भाव और अर्थ में अनेक नीतिकारों की नीति से मेल मिलाप खाती हैं- परन्तु अनेक तो ऐसी हैं जो स्वतन्त्र रूप से अपार नीति का ज्ञान प्रदान करती हैं । वे इतनी अद्वितीय हैं कि उनकी महानता स्वीकार किये बिना नहीं रह सकते—

याद करी ने नामो मान्डे ऊंट पर चडी ने ऊंगे ।
गेले चालता तिनका तोड़े, असाने कूण हूँगे ॥

व्यापार करने बैठना और समय पर हिसाब नहीं लिखना और फिर सोच २ कर लिखना जो सर्वथा व्यापारिक सिद्धांत के विरुद्ध है-कहा है कि-पेला लिखणो पछे देणो फेर घटे तो नाम लेणो-इसी तरह ऊंट पर बैठ कर तो सफर करे और फिर ऊंगे (यानी नींद निकाले)एक तो ऊंट और ऊंगने का अनुप्रास कितना सुन्दर है और फिर सवारी में ऊंट सबसे ऊंचा जानवर है उस पर से गिरने से बड़ी चोट लगती है । इसी प्रकार रास्ते चलते अनेकों का स्वभाव होता है कुछ न कुछ किसी वृक्ष झाड़ी को तोड़ते जायंगे और उसमें भयंकर कांटा वगेरा लग जाने का भय रहता है ।

जाणतो अजाण वीजे तत्व लीजे ताणी ।
आगलो आगवे तो आपणे वीजे पाणी ॥

जानते हुवे अजान हो जाना और तत्व की बात लेलेना और सामने वाला यदि गरम हो तो अपने ठन्डा पानी हो जाना चाहिये जिससे सामने वाला अपने आप बुझ कर राख हो जायगा- थोड़े से शब्दों में कितने अमूल्य उपदेश भरे पड़े हैं-

दन हार दानगो खेत हार खारी
जनम हार स्त्री, वर हार हारी

मजदूर आलसी निकला तो दिन बेकार गया- खेत में नाली गिर गई तो खेत का नाश हो गया- हाली खराब निकला तो सारा साल ही व्यर्थ जायगा और स्त्री खराब निकली तो फिर सारे जीवन की बरबादी है ही ।

कड़वी बोली मायड़ी मिठा बोल्या लोग- सच्ची बात सदा कड़वी मालूम होती है- इसलिये अपना सच्चा हितैषी होता है जैसी कि माता वही ऐसी सच्ची बात कहेगी- बाकी दूसरे लोग तो मीठी बोली बोल कर चापलूसी कहते हैं ।

तुलसीदासजी ने भी कहा है—

वचन परम हित सुनत कठोरे ।
सुनहिजे कहहि ते नर प्रभु थोरे ॥

अन्त में हम यह भी कहे बिना नहीं रह सकते कि इन कहावतों में उत्कृष्ट भाव हैं, उत्तम उपदेश हैं, गति है, तुक है, अलंकारों का भण्डार है- इनमें ज्ञान का अपार भण्डार सुरक्षित है। कहावतों से हमको यह बात भलीभांति मालूम हो स कती है कि राजस्थानी भाषा, मालवी जिसकी विशिष्ट बोली है, कितनी सम्पन्न है ?

मैं विद्यापीठ साहित्य संस्थान काआभारी हूँ जिसके द्वारा हमारी भाषा के अमर रत्न संसार के सम्मुख आते रहते हैं । श्री जनार्दनरायजी नागर और श्री पुरुषोत्तमजी मेनारिया का मैं अत्यन्त अनुग्रहीत हूँ कि जिन्होंने इस पुस्तक के

निर्माण में पूरा सहयोग दिया है । श्री मन्नालालजी शर्मा परदेशी, श्री विश्वनाथजी वामन काले, श्री भट्ट तथा श्रीमान् एवं श्रीमती दशोत्तर का भी आभारी हूं जिनकी बड़ी मदद रही है।

प्रतापगढ़-राजस्थान
होलिका पर्व सम्वत् २००६

—रतनलाल मेहता

मालवी कहावतें

भाग- १

[अ]

१– अणी हाथ दे अणी हाथ ले ।

इस हाथ दे इस हाथ ले। पहले दूसरों को देकर फिर दूसरों से लेने की आशा करनी चाहिये।

२– अंधाधुंध की साहबी, घटाटोप को राज।

सर्वत्र अंधकार का राज्य है। यह कहावत अराजकता की सूचक है।

३– अंगे अन्याडा हगा हारा रो विश्वास नी करे।

जो स्वयं अन्यायी होता है वह सगे साले का भी विश्वास नहीं करता है। अर्थात् दुश्चरित्र पति अपनी पत्नी को उसके सगे भाई के विश्वास पर भी नहीं छोड़ता है।

४– अणी कान हुणी ने अणी कान काड़ी।

किसी भी मनुष्य को यदि किसी की शिक्षा, उपदेश या बात अरुचिकर लगती है तब वह बेपरवाही बतलाता है; तब कहा जाता है- इस कान सुनी व इस कान निकाली।

५– अण विश्वास्या रो हिड़ो नी करणों, हेजा रो बालक नी राखणो ।

अविश्वसनीय आदमी की सेवा और किसी ज्यादा लाड़ प्यार से बिगड़े हुए बालक को पास में नहीं रखना चाहिये ।

६– अण मोल्या घोड़े चढ़े, पर घर करे अणंद !
थूँ क्यूँ रीझे गोरड़ी, फाकानंद फड़ंग !!

वह स्वयं के खरीद किए घोड़े पर नहीं चढ़ता और वह दूसरों के घर के सहारे मौज करता है। रे बहू ! वह पुरुषार्थ हीन है। तू क्यों इस प्रकार अपने पति के लिए प्रसन्न होती है। यह कहावत उन के लिए प्रयोग में आती है जो दूसरों की दौलत पर मौज करते हैं।

७– आगोतर में आड़ो आवणों ।

इस जन्म में किया हुआ (धर्माचार, दान–पुण्य) मृत्यु के बाद काम देगा।

८– अंतर रा दीवा बरीर्‌या है ।

इत्र के दीपक जल रहे हैं । अर्थात् बहुत आनन्द हो रहा है।

९– अन्न खाई ने दन काढ़ना और गोदड़ी ओढ़ी ने रात काढ़नी ।

किसी भी तरह से जीवित रहना है। उदरपूर्ति के लिए केवल अन्न मिल जाता है और रात काटने के लिए केवल फटी टूटी ओढ़ने की रजाई।

१०—अणां ने घड़ी ने राम पछताणा।

मूर्ख मनुष्य जो किसी बात को समझ नहीं सकता उसके लिए कहा जाता है कि इसको जन्म देकर तो सृष्टा ने भी पश्चात्ताप किया।

११— अंधारा घर रो उजालो।

सुपुत्र या सुपुत्री के लिए कहा जाता है कि यह अपने अंधेरे घर का प्रकाश है। जैसे-

वरमेको गुणी पुत्र न च मूर्खशतान्यपि।
एकश्चंद्रस्तमो हन्ति न च तरागणा अपि॥

[आ]

१२— आओ साजी पड़ी बखार में।

किसी काम वाले आदमी को बुलाकर जब उससे काम नहीं लिया जाता है तब वह कहता है तुम्हारे यहां काम काज तो कुछ है नहीं बखार में गिराकर सड़ना है अर्थात् बेकार बैठना है।

१३— आंधो तो आंख्या नेज रोवे।

मानव स्वयं के अभावों की पूर्ति के हेतु सतत प्रयत्नशील

रहता है तथा चिन्तित रहता है। जैसे एक अंधा व्यक्ति अपने नेत्रों की ज्योति पुनः प्राप्त करने के लिए लालायित बना रहता है।

१४– आवती वऊ ने जनमतो पूत सब ने हाऊ लागे।

तत्काल ब्याही बहू और शिशुका प्रत्येक स्थान पर आदर होता है कारण कि उनसे भविष्य में बड़ी आशा की जाती है।

१५– आंधा बेरा वारी हानी।

अंधे ने कुछ कहा, पर सुनने वाले ने अपने बहरेपन के कारण आधा सुना और आधा नहीं सुना और अपने मन के अनुसार अर्थ निकाल कर कुछ का कुछ कर दिया।

अंधे और बहरे वाला संकेत। जहां अर्थ का अनर्थ कर दिया जाता है वहां यह कहावत काम में लाई जाती है।

१६– आला नी वंचे आपतीं, सूखा नी वंचे सगा बापतीं।

तत्काल लिखा स्वयं से और बाद में स्वयं के पिता से भी नहीं पढ़ा जा सकता। निकृष्ट लेख जिसका पढ़ना बड़ा ही कठिन होता है उसके लिये यह कहावत कही जाती है।

१७– आपणी जांघ उघाड़ी ने आपणेज लाजे मरनो।

अपनी, अपने घरवालों या प्रियजन की बुरी बात जब कहते हैं तब यह कहावत काम में लाई जाती है कि अपने दुर्गुण अपने आप बतलाकर लोगों की निगाह से गिरना ! इसीलिए कहा है —

अर्थनाशं मनस्तापं गृहे दुश्चरितानि च !
वञ्चनं चापमानं च मतिमान् न प्रकाशयेत् !!

१८– आपणी गरी में कुत्ता भी शेर।

निर्बल व्यक्ति प्रायः अपने स्थान पर वीरता प्रदर्शन करने का प्रयत्न करता है जैसे कुत्ता अपने स्थान पर तो भौंक कर शेर के समान बनता है किन्तु दूसरे स्थान पर दुम दबा भागने का प्रयत्न करता है।

१९– ओढ़ बाई पोमचो ने चाल बाइ गाँव।

मायके से विदा होते समय पुत्री और मायके वाले परस्पर दुःख प्रकट करते है पर पुत्री के श्वसुरालय वाले दुखद घड़ी का अनुभव नहीं करते। उनकी दृष्टि में तो श्वसुरालय जाना पोमचा ओढ़ कर एक गांव से दूसरे गांव जाना मात्र है।

प्रस्तुत लोकोक्ति किसी कार्य को शीघ्रतया करने की प्रेरणा वाले व्यक्ति के विषय में प्रयोग में लाई जाती है। सुसराल वाले प्रायः अपनी पुत्रवधू को घर लेजाते समय बहुत शीघ्रता करते हैं। उनके लिए केवल पोमचा ओढ़कर घर चलना ही सब कुछ होता है, परन्तु मातापिता के वियोग से उत्पन्न विलम्ब को वे नहीं समझ सकते हैं। ठीक वैसी ही परिस्थिति

शीघ्रता करने वाले व्यक्ति के साथ महत्व रखती है।

२०– आप ही काजी आप ही मुल्ला।

जब किसी योग्य व्यक्ति के नहीं होने पर साधारण योग्यता वाला ही सर्वेसर्वा बन जाता है तब यह बात कही जाती है।

२१– आपणी भैंस रो घी हो को पर खावां।

अपनी भैंस का घी सौ कोस चल कर खायेंगे। अपनी खुद की वस्तु को जब चाहें उपयोग में ला सकते हैं। उसमें किसी की पराधीनता नहीं रहती।

२२– ओछो पातर झट झलके।

छोटे बरतन से पानी शीघ्र ही बाहर झलकने लग जाता है। जो मनुष्य इधर उधर से थोड़ा प्राप्त कर बहकने लग जाता है तब यह कहावत कही जाती है।

प्रायः निम्न श्रेणी के व्यक्ति द्रव्यलाभ तथा किंचित सम्मान प्राप्त होने पर बहुत अभिमान प्रदर्शित करने लगते हैं जैसे एक छोटे पात्र में कुछ विशेष जल भर जाने पर झलकता है।

२३– आसमान फाड़ी ने थेगरी देइ आवे।

आकाश को भी फाड़ कर उस पर कारी लगा देना। यह कहावत मनुष्य की असाधारण चपलता और शक्ति की द्योतक है।

२४– आदमी ने खटाई और औरत ने मिठाई बगाड़े।

अत्यधिक खटाई खाने से मनुष्य और अत्यधिक मिठाई खाने से औरत खराब हो जाती है ज्यादा खटाई आदमी के लिए व ज्यादा मिठाई औरत के स्वास्थ्य एवं चरित्र के लिए अहितकर है।

२५– आऊँ थारा हाट में ने मेलूँ थारी टाट में।

जिसकी दुकान से कुछ खरीदना उसी को धोखा देना। कोई मनुष्य उसीका अहित करता है जिससे कि उसके स्वार्थ की पूर्ति होती है तो उसके लिए यह कहावत कही जाती है।

२६– आखा रावला में एक घाघरो जो पेला उठे जो पेरे।

ठाकुर के यहाँ एक ही लहँगा होने से जो सर्व प्रथम निद्रा त्याग करती है वही उसको पहिनती है। कुटुम्ब में आवश्यक वस्तु कम होने पर यह कहावत कही जाती है। इसमे स्पष्ट दरिद्रता और अभाव की ओर संकेत है।

२७– आप न्यारा कस्याक चकखर्ती हो।

आप कौन से अजग चक्रवर्ती हैं व्यर्थ में ही बढ़ बढ़ कर बातें बनाने वाले और अपनी असाधारण शक्ति का परिचय देने वाले के मान मर्दन हेतु प्रश्नवत् इसका प्रयोग होता है।

२८– आंधा रो हाथ कांधा पे।

अंधे के हाथ मार्ग में उस से आगे जाने वाले व्यक्ति के कंधे पर पड़ जाने से उसका काम हो जाता है। कार्य में अचानक सफलता प्राप्त होने का सांकेतिक प्रयोग।

२९– आपणां रूपरो ने पराया धनरो थाह नी लागे।

स्वयं के सौन्दर्य का तथा अन्य की संपति का उचित अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। दोनों ही स्वयम् की कल्पना के परे होते हैं।

३०– आपणा हाथ से आपाणं पैर कुलाड़ी मारनी।

अपने हाथ से अपने पैर पर ही कुल्हाड़ी मारना। जो अपना अहित स्वयं करता है उसके लिए यह कहावत कही जाती है।

३१– आंखरे और कानरे चार आंगल री दूरी है।

आँख के और कान के बीच चार अंगुल की दूरी है। देखने और सुनने में बहुत अंतर होता है।

३२– आंखा देखी परशराम कदी नी भूठी होय।

आँखों से देखी हुई घटना असत्य नहीं होती।

३३– आपां कई धारां ने राम कई धारे।

मानव के संकल्पों को भाग्य प्रायः असफलता प्रदान करता है। जैसे– "Man Proposes and God disposes."

३४– आकाश ती पड्यो ने खजूर में अटक्यो।

आकाश से ऐच्छिक वस्तु गिरी पर गिरते २ खजूर जैसे लम्बे वृक्ष में अटक गई। अतः उस की प्राप्ति कठिन हो गई। जब सफलता मिलने ही वाली होती है किन्तु आकस्मिक बाधा के कारण सफलता दूर चली जाती है तब इस कहावत का प्रयोग होता है।

३५– आगे आगे गोरख जागे।

आगे आगे गोरखनाथ का प्रकट होना। भाग्य का निरन्तर सफलता में साथ देना।

३६– आँख रो फूटणो ने घोका रो लागणो।

आँख तो फूटनी ही थी किन्तु उस पर चोट लगने से आँख फूटने का कारण चोट सिद्ध हुई। जैसे काक का बैठना और टहनी का टूटना। किसी अकस्मात् योग की द्योतक है।

३७– आम खावा ती काम गठल्या गणवाती कई।

आम खाने से प्रयोजन गुठलियाँ गिनने से क्या लाभ? मुद्दे की बात करना चाहिये व्यर्थ का प्रपञ्च नहीं।

आटे की क्या कमी ? प्रस्तुत लोकोक्ति भ रतीय आतिथ्य सत्कार की द्योतक है । राजा या रंक दोनों ही भोजन को साधारणतया आतिथ्य सत्कार में महत्व देते हैं ।

३६– आग में बाग लगावणो ।

अग्नि में वाटिका लगाना । असम्भव स्थान पर सम्भव वस्तु की स्थापना करना । चातुर्य की द्योतक । असंभव को संभव करना । "The word impossible is in the diction-ary of fools" -Napoleon.

४०– आई मौत कुण फेरे ।

आई मृत्यु को कोई नहीं टाल सकता । जिसकी मृत्यु निश्चित है उसे बचाना असंभव है ।

४१– आलणी घर घालणी ने खाटो खबरदार ।
दार सरदार मारी छाती मती बार ॥

अत्यंत गरीबी में आलणी घर का निर्वाह चलाती है और गरीब कुटुम्ब आलणी से बढ़ कर कढ़ी को ही स्फूर्ति-दायक मानता है । इन दोनों के आगे गरीब कुटुम्ब के लिए कोई साग सुलभ नहीं समझी जाती । वहां दाल तो सरदारों (ठीक स्थिति वालों) के लिए खाई जाने वाली वस्तु मानी जाती है ।

गरीब कुटुम्ब में कोई अच्छी शाक के लिए हठ करते हैं तो उससे कहते हैं छाती मत जलाओ और अपनी स्थिति को

४२– आंखा हीठे अंधारो ।

आंखों के नीचे अंधेरा है। जहाँ जान बूझ कर ध्यान नही दिया जाता है वहां यह कहावत कही जाती है। जैसे दिया तले अंधेरा और "Nearer to the church far from the heaven".

४३– आंख में ती काजर काड़नो ।

आंख में से कज्जल निकालना। बाल की खाल निकालना। बहुत सूक्ष्मता से जांच करने वाले व्यक्ति के लिए यह कहावत कही जाती है।

४४– आकड़ा ऊगी ग्या ।

आक उग गये। वंश नष्ट हो गया। किसी का सर्वनाश बताने के लिये भावावेश में प्रस्तुत लोकोक्ति का प्रयोग होता है।

४५– आंधी रे आगे भुत्तारिया रो कई थाग ।

तेज आँधी के सामने साधारण बवंडर नहीं ठहर सकता। बलवान के आगे निर्बल नहीं टिक सकता।

४६– आदमी नी, खाली तसवीर है ।

यह केवल मनुष्य का चित्र है। अकर्मण्य आलसी, अगतिशील मनुष्य पर यह सुन्दर आक्षेप है।

४७– आवता रो बोलबालो, जाता रो मुँडो कालो।

जब कोई नया पदाधिकारी पदारूढ़ होता है तो उसका सब पर आतंक छा जाता है और उसकी आज्ञा सब मानते हैं किन्तु उसी के पदच्युत होने पर कोई पूछते तक नहीं। अर्थात्

उगते सूर्य को सब नमस्कार करते हैं।

४८– आ फस्या रा मोल कस्या ?

जब आदमी आ फँसता है तो उसका कोई सम्मान नहीं रहता।

४९– आसोज दूध ने चेत चणां, मरे नी तो दुख देखे घणां।

आश्विन में दूध और चैत्र में चने का उपयोग मनुष्य को मार नहीं सकता तो शारीरिक कष्ट तो अवश्य पहुँचाता है। अर्थात् आश्विन और चैत्र में क्रमशः दूध और चने अस्वास्थ्यकर समझे जाते हैं।

५०– आछी मारी टाटी जठे मले घी बाटी।

मेरी झोंपड़ी अच्छी जहाँ घी बाटी खाने को मिलती है। झोंपड़ी में रहकर भी सुख से जीवन व्यतीत करने वाला मनुष्य यह कहावत कह कर अपना महत्व उस मनुष्य के सामने प्रदर्शित करता है जो महलों और हवेलियों में रह कर भी सुख नहीं पाता।

५१– आंधा ने देखी आंख फूटे, ने आंधा बना हरेनी।

अंधे को देख कर आँख फूटे और अन्धे बिना काम नहीं चले। दो आदमी साथ साथ रहते हैं तो लड़ते हैं किन्तु अलग अलग होने पर भी एक दूसरे के लिए व्याकुल होते हैं।

५२– आंख आवण, वर वधावण, सोकड बेन्या नाम।

आंख में पीड़ा है पर उसके लिए कहा जाता है कि आंख आ गई। जामाता हमारी पाली पोषी पुत्री को ले जाता है फिर भी हम उसका स्वागत करते हैं। सौत के प्रति स्त्री की स्वाभाविक ईर्ष्या उग्रतम होते हुए भी वह उसको बहिन नाम से संबोधित करती है।

५३– आज ती कइ काल वइ गइ है ?

जब किसी को विशेष कारण वश उसकी वस्तु प्राप्त नहीं होती है तब उससे कहा जाता है कि 'आज से क्या कल हो गया है ?' अर्थात् सारा समय समाप्त नहीं हुआ है। निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं। इसमें भविष्य की आशावादिता की ओर संकेत है!

[इ]

५४– इ तो राणा जी रा हारा है।

ये तो राणाजी के साले हैं। मेवाड़ में किसी के मनमानी करते रहने पर उसके लिये यह कहावत कही जाती है।

[उ]

५५– उंट रे गरे बेल।

उंट के गले में बैल। कुजोड़ के लिए इसका प्रयोग होता है।

५६– उलटो चोर कोतवाल ने डाटे।

उलटा चोर कोतवाल को डाँटता है। जिसका अपराध हुआ है अथवा जिसने अपराधी को पकड़ा है उसे अपराधी जब डाटता है तब यह कहावत कही जाती है।

५७– उंट री लम्बी गरदन कइ काटवा वास्ते ?

जब एक ही आदमी पर सब वजन डाल दिया जाता है, जैसे कोई पैसे वाला हो और हर एक काम के लिए उसी से पैसा मांगा जाय, यह समझ कर कि यह तो पैसे वाला है तब वह पैसे वाला कह सकता है कि उँट की लंबी गरदन क्या काटने के वास्ते है ?

५८– उद्योग में कंगाली किसतर ?

उद्योग में दरिद्रता कैसी ? "उद्योगे दरिद्रता नास्ति" उद्योगी पुरुष भी जब चेष्टाहीन हो जाता है तो उसके पास दरिद्रता फटकने लगती है उस समय की स्थिति पर लोग इस कहावत के प्रयोग द्वारा उसकी स्थिति को जानना चाहते हैं। उद्योग में कंगाली कैसे रह सकती है ? जहाँ उद्योग है वहां कंगाली ठहर नहीं सकती।

५९– ऊ सोनो कस्यो जो कान ने खावे।

वह सोना किस काम का जो कानो को दुःख पहुँचाता है। हानिकारक मूल्यवान् वस्तुओं का उपयोग करना मूर्खता है।

६०– उछली ने गोड़ा फोड़ना।

उछल कर घुटने फोड़ना। स्वयं आपत्ति का आह्वान करना।

६१– उं कई ने थूं हुणनो।

हल्की बात कह कर हल्की बात सुनना।

६२– उल्टी गंगा कस्तरे वे ?

उल्टी गंगा कैसे बहे ? विधान के विपरीत कोई कार्य

नहीं हो सकता।

६३– उल्टा उंस्तरा तीं मुण्डावणों ।

कोई कार्य सीधी तरह से न करके, फिर उसी कार्य को हानि उठा कर करना।

[ए]

६४ एक लख पूत सवालख नाती, रावण रे घरे दीवो न वाती।

रावण के लक्ष पुत्र और सवा लक्ष रिश्तेदार थे। इतना कौटुम्बिक विस्तार होते हुए भी अन्त में उसके घर में दिया जलाने वाला न रहा। अत्याचारी के वैभव की निश्चित समाप्ति के समर्थन हेतु इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

६५– एकलो भीमड़ो लोड़ा री लाठ।

अकेला मजबूत व्यक्ति भी लोहे की लाठ के समान है। अर्थात् उसे कोई झुका नहीं सकता है।

६६– एँठो खाय मीठा रे लारे।

भोजन सामग्री में मिष्टान्न हो तो जूठन खाने को भी प्रस्तुत हो जाना। स्वार्थ सिद्धि के लिए अनुचित काम करने वाले के लिए यह कहावत कही जाती है।

६७– एक माछली आखा तलाब ने गंदो करे।

एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है। एक मनुष्य के बुरे कर्म से सारा समाज कलंकित होता है।

६८– एक तवा री रोटी कोई छोटी कोई मोटी।

एक स्थान से उत्पन्न वस्तुओं में कोई भेद नहीं होता।

इस कहावत का विशेष प्रयोग बहुधा दुकानदार उस ग्राहक के सम्मुख अपनी वस्तु के प्रति तुष्टि कराने के लिए करता है जो एक ही प्रकार की वस्तु में भेद भाव देखने की चेष्टा करता है।

६९– एक दन री वात ने हो दन री केणात।

किसी भी कार्य का सपादन करना थोड़ा कष्टदायक अवश्य होता है, परन्तु उसका नहीं करना हमेशा के लिए दुःखदायी होता है। किसी काम को करना केवल एक ही दिन की बात होती है किन्तु उसका न करना अपने को सर्वदा के लिए ताने बाजी का शिकार बना देता है

७०– एकान्तवासा ने झगड़ा ने झांसा।

एकान्तवासी झगड़े और प्रपञ्च से दूर रहता है।

७१– एक दन रो पामणो ने दूसरे दन रो पइ।
तीसरे दन रेवे तो वैंरी मति गई॥

मेहमान को किसी के घर केवल एक दिन ही रहना उचित है। दूसरे दिन वह आतिथ्य करने वाले के लिए बंधन रूप है। अगर तीसरे दिन भी वह मेहमान की तरह बैठा रह गया तो समझना चाहिए उसकी मति मारी गई है।

७२– एड़ी रो पसीनो चोटी तक आवणो।

एड़ी का पसीना चोटी तक आना। यह कठिन परिश्रम की द्योतक है।

७३– एक पापी आखी नाव ने डुबावे।

एक पापी सारी नाव को डुबोता है। एक ही पापी सारे कार्य को भ्रष्ट करने में समर्थ होता है।

७४- एक री मा ने खंखेरी ने बाले, सात री मा ने सियार खावे।

एक पुत्र की माँ का दाहसंस्कार पूरी तरह होता है किन्तु बहुत से पुत्रों की माँ के मृत शरीर को गीदड़ खाते हैं। अधिक लोगों की जिम्मेदारी पर किसी कार्य को छोड़ देने से वह बिगड़ जाता है।

७५- एमद्या री टोपी मेमद्या रे माथे, एमद्यो फरे उघाड़े माथे।

अहमद की टोपी मुहम्मद के सिर तो अहमद नंगे सिर फिरता है। एक की हानि कर दूसरे का लाभ करना उचित नहीं है।

[ओ]

७६- ओछे रोजगार रेणो पर ओछे कायदे नी रेणो

कम आय में इज्जत के साथ रहना अत्युत्तम है पर अधिक वेतन लेकर स्वप्रतिष्ठा और स्वाभिमान छोड़ कर रहना बुरा है। यह अपने स्वाभिमान के महत्व की द्योतक है।

७७- ओछी राड़ रो कारो मुण्डो, खाड़ा मार री होड़ नी वे।

मामूली तकरार कभी न हो, हो तो जूतेमार ही हो। मामूली तकरार में किसी भी पक्ष का निर्णय नहीं हो पाता।

७८- ओड़ला जोड़ला ने तीनी करम खोड़ला।

पहला और दोनों बाद के तीनों ही कर्महीन हैं। जहां सब के सब निकम्मे हों वहाँ यह कहावत कही जाती है।

[क]

७९– केरों केरों होच कराने, कणाने कणाने रोवां।
आराम बड़ी चीज है, मूंडो ढांकी ने हुवां ॥

निश्चिन्त और आराम पसन्द व्यक्ति कहा करता है कि संसार में किस २ की चिंता करें और किस २ के लिए आँसू बहाएँ। संसार में आराम ही सर्वश्रेष्ठ वस्तु है अतः आराम की नींद लेना अच्छा है।

८०– कां खेतरी, हुणे खरा री।

प्रश्न तो खेत के बारे में पूछा जाता है और सुनने वाला खलिहान के बारे में सुनता है। असावधानी से श्रवण करने वाला, अथवा मूर्ख कहने के विपरीत कुछ का कुछ समझ कर कार्य करने लगता है।

८१– कारा कारा सब कशन जी रा हारा।

समस्त काले मनुष्य कृष्ण के साले हैं। एक ही प्रकार की समस्त वस्तु का संबन्ध एक ही वस्तु विशेष से जोड़ना उचित नहीं है।

८२– काणी राणी ने विघन घणा।

एक चक्षु राणी को अनेक प्रकार के विघ्न हैं। योग्य व्यक्ति को केवल एक ही मुख्य कमी के कारण कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है। जब किसी असफलता पूर्ण काम में विघ्न उपस्थित हो जाते हैं तब यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है।

८३– करम पंसेरी का जोड़ा ठीक मिल्या।

सिर फोड़ने के लिए पंसेरी उपयुक्त वस्तु है। दो समान दुर्गुण वाली वस्तुओं के लिए यह कहावत कही जाती है।

८४– कालो अक्सर भैंस बरोबर।

काले अक्षर को भैंस तुल्य समझना। निरक्षर लिखी हुई तथा मुद्रित बात को नहीं समझ सकना।

८५– कागला रे केवातीं डोबलो नी मरे।

कौए के कहने मात्र से बैल मर नहीं जाता, परिश्रम करने पर कार्य बनता है और किसी के कहने मात्र से बड़ा अनर्थ नहीं हो सकता।

८६– कुत्तारी पूंछ जदी देखो जदी वांकी री वांकी।

कुत्ते की पूंछ हर समय टेढ़ी ही रहती है।

८७– कागला गो बैठणो ने डाल रो टूटणो।

कौए के बैठने ही डाली का टूट जाना। अकस्मात योग का परिचायक है। डाली तो टूटती ही चाहे कौआ बैठता या नहीं परन्तु कौए का बैठना हुआ और डाली टूटी इसलिए टूटने का कारण कौआ ही बना। वास्तव में वह उसके बैठने से नहीं टूटी थी।

८८– कइ फूस रो तापणो, कइ परदेशी री प्रीत।

घास फूस से प्रज्वलित अग्नि अधिक समय के लिए गर्मी पैदा नहीं कर सकती इसी तरह से परदेशी मनुष्य का प्रेम अस्थायी होता है।

८९– कपूत बेटा जाने जाय, पान सुपारी गांठ री खाय।

कुपुत्र दूसरों की बरात में भी पान सुपारी स्वयं की ही खाते हैं। उपयुक्त अवसर में स्वयं की वस्तु खो देने वाले मनुष्य के लिए यह कहावत कही जाती है।

९०– कांणा, खोड़ा, लूला, लंगड़ा, एक पग आत-राज वे।

एक चक्षु, खोड़ा (एक पैर पर कुछ दबाव के साथ चलने वाला), लूला (हाथ में लकवे का रोगी), लंगड़ा (एक पैर से चलने वाला) ये चारों मनुष्य दो पैर वाले मनुष्यों से भी एक पैर आगे रहते हैं यानी शरारत में ये दूसरो आदमी को भी पीछे रख देते हैं।

९१– कारा नाग रा खेलावणा है।

काले सर्प को खिलाना। घातक वस्तु से स्नेह करने या उसको वश में लाने के लिए या किसी बहुत कठिन काम को करने में इसका प्रयोग होता है।

९२– काट्या रो खाणो पर उगट्या रो नी खाणो।

मृतक दान ग्रहण-कर्त्ता (महा ब्राह्मण?) के यहाँ भोजन कर लेना अच्छा है पर ऐसे मनुष्य के यहाँ कभी नहीं खाना चाहिए जो खिला करके मुँह पर आ जाता है।

९३– कुमार री गद्दी जदी देखो जदी लद्दी री लद्दी।

कुम्हार की गधी हर समय बोझा ढोती ही दिखाई देती है। अधिक काम वाले के पास आराम नहीं मिल सकता। अधिक काम में व्यस्त रहने वाले के लिए यह कहावत काम

में लाई जाती है।

६४– करेगा जो भरेगा ने वावेगा जो लूणेगा।

काम जो मनुष्य करेगा उसका फल भी वही उठाएगा। और जो बोयगा, फसल काटने का अधिकारी भी वही होगा। जो जिस कार्य को करता है उसके फल का अधिकारी भी वही होता है।

६५– करा रे ढांकणो देवाय पर मुंड़ा रे ढांकणो नी देवाय।

मटके के ढक्कन लगाया जा सकता है पर मनुष्य के मुंह के ढक्कन नहीं लगाया जा सकता। लोक-निन्दा रोके नहीं रुकती।

६६– कदीक नाव गाड़ा पे, न कदीक गाड़ो नाव पे।

कहीं नाव गाड़ी पर और कहीं गाड़ी नाव पर। प्रत्येक वस्तु का अपने अपने स्थान पर महत्व होता है। नाव नदी में चलती है और गाड़ी सड़क पर चलती है और एक दूसरे में बिल्कुल संबन्ध मालूम नहीं होता। तथापि कभी ऐसा भी होता है कि नाव गाड़ी पर लादना पड़ता है और गाड़ी को नाव में रख कर नदी पार करनी पड़ती है। अतः संसार में एक दूसरे से काम पड़ता ही रहता है।

६७– कालो मूण्डो ने कतीर रा दाँत।

काला मुँह और राँगे के दांत करना। संबन्धित समाज से किसी अनैच्छिक व्यक्ति के दूर चले जाने पर या चले जाने

के लिए बाध्य करने पर इस कहावत का प्रयोग होता है।

९८– केक तो राखे राम ने केक राखे डाम।

मरणासन्न रोगी की या तो राम ही रक्षा करता है या उसके अंग विशेष को किसी गर्म वस्तु से दागने से ही वह बच सकता है। जहर को जला देना उस का सर्वोत्तम निदान है। इस प्रकार बहुत से रोगियों का उपचार किया जाता है।

९९– कीचड़ में भाटो फेंकी ने छांटा उड़ावणा।

कीचड़ में पत्थर फेंक कर छींटे उड़ाना। स्वयमेव अनुचित कार्य कर अपयश प्राप्त करना उचित नहीं है। जैसे-

"कछु कही नीच न छेड़िये, भलो न वाको संग।
पाहन मारे कीच में, उछल बिगाड़े अंग॥

१००– कांटा ती कांटो काड़नो।

काँटे से काँटा निकालना। एक शत्रु को भिड़ा कर अपना काम निकालना।

१०१– क्यारे क्यारे पाणी आई र्‌यो है।

क्रमशः एक के बाद दूसरी क्यारी में पानी आ रहा है। अर्थात् समय किसी को भी नहीं छोड़ता। आज जो किसी और पर बीत रही है वह कल हमारे ऊपर भी बीतेगी। समय का चक्र सब पर बारी से घूमता रहा है।

१०२– कण्डा बाप री खाद खाड़ी है।

किसी के बाप से अनाज उधार लाकर नहीं खा रहा हूँ अर्थात् किसी का 'देवेलदार' नहीं हूँ।

१०३– कण्डा पैसा थोड़ी आई र्‌या है।

भोजनार्थ किसी के यहाँ से सीधा नहीं आ रहा है। किसी के दान पर नहीं जी रहा हूँ। किसी का अहसानमन्द नहीं हूँ।

१०४– काठ री हांडी चूला पे नी चढ़े।

लकड़ी की हँडिया चूल्हे पर नहीं चढ़ती है। नकली तो आखिर नकली ही रहेगा। जब उसकी असलीसे परीक्षा होगी तो वह परीक्षा में नहीं ठहरेगा। काठ की हण्डी आग की परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो सकती।

जैसे 'हाण्डी काठ की चढ़े न दूजी बार।'

१०५– केवां तीं कुमार गद्दा पे नी बैठे।

कहने से कुम्हार गधे पर नहीं बैठता। किसी को उकसाने से कोई लज्जाजनक कार्य नहीं करता।

१०६– काजी रो घर है कसम खाओ ने घरे जाओ।

काजी का घर है शपथ खाओ और घर जाओ। विशेष कर किसी बड़े आदमी के यहाँ कोई जाता है और उसका आदर सत्कार भली भाँति नहीं होता है– तो कहा जाता है काजी का घर है कसम खाओ और घर जाओ। खाने को यहाँ केवल शपथ है और कुछ नहीं।

१०७– कोड़ी री हाबू ने दिन रो बाबू।

थोड़े साबुन से हुआ साफ सुथरा मनुष्य भी बाबूजी के नाम से संबोधित किया जाता है। ऋणी बाबू साफ सुथरा रह कर समाज में प्रतिष्ठित होना चाहता है।

१०८– केस मुण्डवा ती कई मुर्दा हलका वे ?

केश मुंडाने से लाश का वजन हलका थोड़े ही होता

है ? हजारों के खर्च में कुछ अनुचित बचाव करके खर्च का भार हलका करने की कोशिश करने वाले के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

१०९– काज़ी री कुरान में, मुल्ला री जबान में।

क़ाज़ी तो नियमों से अवगत होने के लिए समय समय पर कुरान का अवलोकन करते हैं पर मौलवी को तो जबान पर ही सारी कुरान याद होती है।

११०– कतवारी रो हदरे न वतवारी रो वगड़े।

सूत कातने वाली का कार्य सुधरता है और बात करने वाली का कार्य बिगड़ता है। कार्य निरन्तर करते रहने से सफलता होती है। खाली बात करने से किसी कार्य में सफलता नहीं मिलती है।

१११– कलम, करछी ने बरछी वालो कदी भूखो नी मरे।

कलम, चम्मच और बर्छी चलाने वाले कभी भूखों नहीं मरते। पढ़ा लिखा, रसोइया और योद्धा कभी बेरोजगार नहीं रह सकते।

११२– क्रोध हरिको जेर नी, ने दया हरिको अमृत नी।

क्रोध तुल्य जहर और दया तुल्य अमृत नहीं है। क्रोध मनुष्य का घातक और दया मनुष्य की रक्षक है।

११३– केक तो कण्डा वेई रेणो, केक कणी ने करी राखणो।

या तो किसी का हो कर रहना चाहिए या किसी को अपना बना कर रखना चाहिए। मिल कर रहना सदा अच्छा है। विना प्रेम और त्याग के किसी का हो कर तथा बन कर रहना दोनों असंभव है।

११४– कोड़ी हाटे हाथी जाय, पर कोड़ी वे जदी।

कोड़ी के बदले में हाथी जा रहा है पर हाथी की खरीद के लिए कोड़ी तो हो! निर्धनता में बहुत कम मूल्य वाली अच्छी वस्तु का उपभोग भी कठिन है।

११५– कमावे उ पइसा री कदर जाणे।

जो कमाता है वही पैसे का महत्व समझता है। परिश्रमी अपनी कमाई व्यर्थ में खर्च नहीं करता।

११६– करम धरम दीतवार।

धर्म कार्य प्रतिदिन करने का नहीं वह तो रविवार को ही होता है। स्वार्थी और अज्ञानी मनुष्य परमार्थ का महत्व प्रतिदिन के जीवन में नहीं समझते।

[ख]

११७– खोदी मरे ऊंदरो, मौज मारे मोग।

चूहे का बिल खोदना और सांप का उस पर अधिकार कर उसका उपभोग करना। परिश्रम तो कोई करे और लाभ कोई दूसरा उठावे उस पर यह कहावत चरितार्थ होती है।

११८– खूँटा रे बल बछड़ो कूदे।

खू ँटेके बल पर बछड़ा कूदता है। किसी दूसरे के बल पर बढ़ बढ़ कर बातें करना।

११६– खोटो नारेल होली देवरे ।

जब किसी पर झूठा दोषारोपण किया जाता है तो यह कहावत कही जाती है। होली में अक्सर लोग कूड़ा करकट लाकर डालते हैं और फिर नारियल तो जल जाता है सो खोटे खरे का ध्यान नहीं रक्खा जाता है। खोटा नारियल जलाने को होली ही और भेंट के लिये मन्दिर उपयुक्त माना जाता है।

१२०– खेती धनी हेती, आधी खेती बेटा हेती।
हारी हेती ने हींटा हेती ॥

घर के मालिक की देख रेख में खेती अच्छी तरह और पूरी फलदायक होती है और उस मालिक के पुत्र की देख रेख में आधी, पर इन दोनों की देख रेख से हट कर नौकर की देख रेख में खेती होतो उस खेती से कुछ भी प्राप्त नहीं होता।

१२१– खेती कोई कर जो मती, खेती धन रो नाश,
के धणी नी आयो पास।

स्वयं की देख देख में खेती न होने से कुछ नहीं मिला तब मालिक कहने लगा कि 'कोई खेती मत करना कारण कि खेती में धन का नाश होता है। इस पर स्वयं की देख रेख से कृषि-कार्य में लाभ उठाने वाले व्यक्ति ने उसको समझाया कि तुम इसलिए ऐसा कह रहे हो कि तुम्हारी देख रेख में खेती नहीं हुई है। कहा भी है:—

"खेती, पाती, वीनती, मोरातणी खुजार ।
जो सुख चावे आपणों, हाथों हाथ संभार ॥"

खेती का काम, साजे का काम, विनय करना पीठ पर खुजलाना यदि मनुष्य अपना भला चाहे तो स्वयं ही करे।

१२२– खोदेगा खाड़, तो पड़ेगा आप।

जो दूसरे के लिए गड्ढ़ा खोदेगा तो वह स्वयं ही उसमें पड़ेगा। जो आदमी दूसरों के लिए जाल रचता है वह खुद ही उसमें फँसता है। कहा भी है —

"खाड़ खने जो और को ताको कूप तैयार।"

१२३– खरो कमावे खोटो खाय।

जो आदमी परिश्रम करके कमाता है पर खाने में कन्जूसी करके खाता है, उसकी ओर संकेत करने में इस कहावत का प्रयोग होता है।

१२४- खावे नी ने ढोली देणो।

न खाकर के फेंक देना या उडेल देना। न खाना और न खाने देना। व्यर्थ ही वस्तु का नाश कर देने पर यह कहावत कही जाती है।

१२५– खानार पीनार ने राम देनार

खाने पीने वाले को राम देता ही है। शक्कर खोरे को शक्कर मिल ही जाती है।

१२६– खावा में आगे ने लड़वा में पाछे रेणो।

भोजन करने में सबसे आगे और युद्ध में सबसे पीछे रहना ही स्वार्थ की दृष्टि से उत्तम है। क्योंकि भोजन में पीछे रहने वाला अधिकतया या तो भूखा रहता है या सब वस्तुओं

का उपभोग नहीं कर सकता कारण कि जीमन में प्रायः पीछे से रसोई कम रह जाती, है इसी तरह लड़ाई में आगे रहने वाले तो अक्सर मारे जाते हैं परन्तु पीछे वाले विजयी हो कर लौटते हैं।

१२७- खूंटा री छूटी पाछी आइ जाय, पण जबान री छूटी पाछी नी आवे।

खूँट से छूटी गाय फिर आ ही जाती है पर जबान से एक बार निकली हुई बात फिर नहीं लौटाई जा सकती। मुंह से प्रत्येक बात उचितानुचित का निर्णय कर के ही कहना चाहिए।

१२८- खा'ड़ा में खीर वण्टीरी है।

खीर जैसा स्वादिष्ट पेय जूतों में परोसा जा रहा है। आनन्दोत्सव में भयंकर झगड़ा हो जाने पर यह कहावत कही जाती है।

[ग]

१२९- गोदड़ी में गोरख निकल्यो।

गोदड़ी में गोरख प्रकट हुआ। साधारण स्थान से उत्तम वस्तु प्राप्त होने पर यह कहावत कही जाती है।

१३०- गाड़ी देखी ने पग भारी पड़े।

गाड़ी देख कर पैर भारी पड़ते हैं। सुलभ साधन को देख कर परिश्रम की अवहेलना करने पर इस कहावत का प्रयोग होता है।

१३१- गदेड़ा रा गूणां में कई गबोरो।

गधे की गुणती में फर्क क्या ? गधे की गुणती में निश्चित वज़न ही समाता है और वह तौला नहीं जाता ; अतः निश्चित भाग की वस्तु को तौलने की दिक्कत न उठाने के समर्थन हेतु इस कहावत का प्रयोग होता ।

१३२– गाम में ता घर नी, ने मार में खेत नी ।

गांव में घर और मैदान में खेत नहीं हैं । यह कहावत अति निर्धन और निराधार मनुष्य की सूचक है ।

१३३– गोरी वे तो कई, गुण वे जदी ।

सुन्दरी हो तो क्या उस में गुण होना चाहिए । गुणहीन सुन्दरता व्यर्थ है ।

१३४– गुस्सो तीन पाव पे आवे, हवा हेर पे नी आवे ।

प्रत्येक अपने से निर्बल पर क्रोध करता है। तीन पाव पर ही क्रोध आता है, सवा सेर पर नहीं । जैसे 'देवो दुर्बल घातकः ।'

१३५– गाड़ो, घोड़ा और पगे सब एक जगा रात रे ।

गाड़ी, घोड़ा, और पैदल सब एक ही स्थान पर रात्रि बिताते हैं । सब को एक ही स्थान पर ठहरना है चाहे कोई शीघ्र चला जाय या देर से पहुँचे । यात्रा में ठहरने के स्थान प्रायः निश्चित होते हैं ।

१३६– गरज नीकली ने लोग परायो ।

स्वार्थ पूरा होने पर लोग पराये हो जाते हैं । कहा भी है

"सुर, नर, मुनि सब की यह रीति
स्वारथ लागि करे सब प्रीति।"

१३७– गाम छोटो ने बेएडा घणा।

गाम छोटा और पागल अर्थात् मूर्ख बहुत हैं। समझदार मनुष्य कम हैं। पहले तो गांव छोटा और उस में फिर पागल बहुत फिर वहां पर जाने वाले या बसने वाले की भगवान ही रक्षा करे

१३८– गरज बावली।

गरज बड़ी पागल होती है। काम पड़ने पर मनुष्य पागल की तरह इधर उधर दौड़ा फिरता है और किसी तरह अपना काम निकालता है। लोग अपने काम को सफल बनाने हेतु उचित अनुचित सब उपाय काम में लाते हैं।

१३९– गांठ रो गोपी चंदण लगावणों।

गांठ का गोपी चन्दन लगाना। दूसरे के लिए स्वयं का कार्य छोड़ देना और फिर उसका कार्य करते हुए अपना खर्च स्वय ही सहन करना उचित नहीं है। जैसे दूसरे के लिए बाबाजी तो बने फिर भी गांठ का गोपी चंदन लगा रहे हैं।

१४०– गाल थाप रे कइ छेटी है।

गाल और थप्पड के क्या दूरी है? कोई बुरा काम करेगा तो सजा जरूर मिलेगी।

१४१– गुरु गंडिया चेला अन्याइ।

गुरू गुण्डा और शिष्य इन्द्रियरत है। सच है गुरू ने

अपनी कमी को उस में भर दिया है। दुष्ट मार्ग प्रदर्शक अपने पीछे चलने वाले को स्वयं से भी बढ़ कर दुष्ट बना देता है।

१४२- गुरु, गण्डक, चेला, बग। चेलाए मांग्यो ज्ञान, ने गुरु सं प्या पग ॥

गुरू कुत्ते के समान है और शिष्य बग के समान, शिष्य गुरु से ज्ञान याचना करता है तो गुरु उसे पैर दिखाता है। कुत्ते के शरीर को जब बग काटती है तब वह अपने पैरों से उसे उड़ाने की चेष्टा करता है। इसी प्रकार सौजन्य हीन गुरु दुष्ट प्रकृति के शिष्य को ज्ञान नहीं दे सकता। वह उसकी प्रवृत्तियों पर क्रोध करके उसे भगाने की चेष्टा करता है।

१४३- गाम गया गमेती अवाय ।

दूसरे गांव जाना होता है तो जल्दी २ वापिस आने से काम नहीं बनता। वहाँ तो संतोष के साथ काम कर के ही लौटना पड़ता है। जब हम घर से बाहर दूसरे गांव जावें तो फिर जल्दी ही लौटना चाहिये, परंतु लौटने में देर हो जाती है तो कहा जाता है कि बाहर गाम जाने पर धीरे २ ही पीछा लौटा जाता है।

१४४- गाम गाम घर वसावणा ।

गांव गांव में घर बसाना। जब कोई व्यक्ति बाहर वालों का अच्छा आदर सत्कार करता है और उनसे अच्छा व्यवहार रखता है तो फिर वह मनुष्य भी जब बाहर जाता है तो उसका वहां अच्छा आदर सत्कार होता है और उसको

बाहर भी घर जैसा आराम मिलता है। इसलिए कहा जाता है कि इसने तो गांव गांव घर बसा रखे हैं।

१४५– गुजर गई गुजरान, कई झोंपड़ी कई मैदान।

गूजर उद्योग करने जहां जाते हैं वहां सब चौपट कर देते हैं। कहीं तो वे सुफला भूमि को बंजर बना देते हैं और कहीं २ सुंदर मकानों को झोंपड़ियों में बदल देते हैं। गूजर पशु चरा कर अथवा रख कर लोगों का रोजगार छीन लेते हैं।

१४६– गोयरा री गत बरगुण्डो जाणे।

गोयरा (विषैला जानवर) की गति बरगुण्डा ही जानता है। गोयरा एक विषैला जानवर होता है पर बरगुण्डे को उसके बारे में ऐसी जानकारी होती है कि वह उसे सहज ही में वश में कर लेता है। जब कोई बदमाश दूसरे बदमाश को वश में कर लेता है तो यह कहावत कही जाती है।

१४७– गधा नें जाफरान री कई कदर।

गधा जाफरान की महत्ता को क्या जाने। साधारण श्रेणी का व्यक्ति उच्च श्रेणी की वस्तु का महत्व नहीं समझ सकता।

१४८– गंदी बेटा बैठा खाय, मूर दाम कठे नी जाय।

कत्तार (इत्र का व्योपारी) का पुत्र बिना ही मेहनत बैठा २ व्याज से जीविकोपार्जन करता है कारण कि उसकी मूल पूंजी में घाटा नहीं पड़ता। अब व्योपारी बेकार सा

मालूम पड़ता है तब यह कहा जाता है कि भले ही यह बे रोजगार सा मालूम पड़ता है परंतु यह गांठ का खाने वाला नहीं है।

१४६– गमार री गारी ने हंसी ने टारी।

गंवार के अपशब्दों को हंस कर टाल देना चाहिए। नासमझ की बात का विचार नहीं किया जाता।

१५०– गाम बलाई तीं काम बणे तो पटेल रे पास नी जाणों।

गांव के बलाई से काम निकल जाय तो गांव के पटेल के पास जा उसकी खुशामद नहीं करनी चाहिए। जब छोटे साधन से काम बन जाय तो बड़े का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

१५१- गांठ रा गाबा फाड़ी ने देख चाल्या जैपुर।

जयपुर गये कि वहाँ जीविकोपार्जन कर सकेंगे और शहर भी देखेंगे। पर वहां तो जो कपड़े पहन कर गये थे उन्हीं को फाड़ कर लौटना पड़ा काम कमाई का नाम नहीं। उद्योगार्थ गया मनुष्य विदेश से पूञ्जी खोकर; उसका अनुभव कर खाली हाथ लौट पड़ता है तब यह कहावत कही जाती है।

१५२– गाम हाई गराड़ ने देश हाई डण्ड।

जैसा गांव वैसी लागत, जैसा देश वैसा दंड। गांव में किसी के यहां खेती में नुकसान होता है फिर वह चाहे सारे गांव वालों के यहां नहीं भी हुआ हो परंतु सारे गांव में शोर हो ही जाता है. इसी तरह देश में जब कोई कष्ट आता है, तब छोटे या बड़े सब को भोगना पड़ता है।

[घ]

१५३– घाणी रो बैल दन भर फरे तोइ घरे रो घरे।

घानी का बैल दिन भर फिरते रहने पर भी निश्चित स्थान से आगे नहीं बढ़ता। परिश्रम करने पर भी जब पूर्ण स्थिति बनी रहती है, तब यह कहावत कही जाती है।

१५४– घर री चून गंडकड़ा खाय ने चापड़ा हाटे पीसवा जाय।

घर का आटा तो कुत्ते खाते हैं और स्त्री चापड़े के बदले दूसरे का पीसना पीसती है। अपनी अमूल्य वस्तु को नष्ट करवा दूसरों की बेकार वस्तु की प्राप्ति के लिए परिश्रम करने वाले की हालत को बताने के लिए यह कहावत कही जाती है।

१५५– घी रा दीवा बारना।

घी के दीपक जलाना अर्थात् खूब आनंद मनाना।

१५६– घर रो ताप तापणो।

घर का ताप तापना। घर की गर्मी से सर्दी उड़ाना। स्वयं की सामग्री नष्ट कर जब कार्य सिद्ध किया जाता है तब यह कहावत कही जाती है।

१५७– घर रा तो घट्टी चाटे ने उपाण्या ने आटो घाले।

घर के मनुष्य तो मारे भूख के चक्की चाटते हैं और

उपाध्याय (मांगने वाले ब्राह्मण) को आटा दान में दिया जाता है। स्वयं घर में कमी भुगत कर दूसरों, बाहर वालों को सुविधा देने पर यह कहावत कही जाती है।

१५८– घर घर गारा रा चूल्हा।

घर घर मिट्टी के चूल्हे हैं। घर की स्थिति सब जगह एक समान है।

१५९– घर रो भेदू लंका ढावे।

घर का भेद जानने वाला (विभीषण) लंका का नाश करा देता है। घर के भेद को जानने वाला अनिष्टकारी होता है।

१६०– घोड़ा री मौत गाम में ने बलद री मौत मार में।

घोड़ा गांव में हैरान होता है और बैल माल में। घोड़े का सवार शान में आकर गांव में घोड़े का तेज दौड़ाता है और किसान लोग अपने खेत जोतते समय होड़ करते हैं इस में बैलों की आफत हो जाती है।

१६१– घी में घी सब कूड़े, तेल में घी कूण कूड़े।

घी के शामिल घी तो सब ही मिलाते हैं। पर तेल के शामिल घी कोई नहीं मिलाता। जो धनवान और साधन संपन्न हो उसको हर एक लाभ पहुँचाता है परतु जो गरीब हैं और साधन विहीन हैं उनको मदद देने की कोई नहीं सोचता।

१६२– घोड़ो घास तीं हेत करे तो भूखो मरे।

घोड़ा घास से प्रेम करने लगे तो भूखों मर जाय। जिसके बिना कार्य नहीं चलता मोहवश उसका उपयोग नहीं करना मूर्खता है। जब किसी से कोई काम करवाता है किन्तु उचित महनताना उसे नहीं मिलता है तब वह काम करने वाला वाजिब पैसे मांगता है और अपनी मांग को जोरदार बनाने को कहता है कि नहीं मांगे तो करें क्या?

१६३– घी घोर रा हारणा और छाती बारणा।

साग भाजी या किसी व्यंजन का अच्छा बनना न बनना उस में घी गुड़ आदि चीजों की मात्रा पर निर्भर रहता है। और इन से रहित भोजन तैयार करना तो छाती जलाना मात्र है।

१६४– घणा हेत टूटवाने मोटी आंख फूटवाने।

घनिष्ट प्रेम भंग होता है और बड़ी आंख फूटती है। बड़ी आंख में चोट लगने का ज्यादा अंदेशा रहता है। इस कहावत का यह अर्थ है कि 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' और 'Excess of every thing is bad.

१६५– घर जाया रा दन देखूँ के दांत।

जब बैल खरीदा जाता है तो उसकी उम्र और दाँतों की जांच पड़ताल की जाती है किंतु जो बैल अपने यहां पैदा हुआ है उसकी उम्र और दाँत देखना व्यर्थ है। जिससे हम पूरी तरह परिचित हैं उसके बारे में क्या पूछताछ की जाय?

१६६– घी पे माखी बैठे।

मक्खी घृत पर ही बैठती है। जहाँ तत्व होता है वहां सब कोई रहते हैं। मक्खी खाली जगह पर नहीं बैठती परंतु

जहां कुछ मीठा आदि होता है वहीं बैठती है, इसी तरह मनुष्य कहीं भी कुछ काम करता है तो वहां उसका स्वार्थ जरूर होता है।

[च]

१६७- चमार ने चमार बावजी केवे तो चौके चढ़े।

चमार को यदि आदर के साथ संबोधन करें तो वह पर चौके ही आ जायगा। दुष्ट को मुँह चढ़ाना स्वयं का अहित करना है।

१६८- चिकणा घड़ा परे पाणी ठेरावणों।

चिकने मटके पर पानी ठहराना। असंभव कार्य में हाथ लगाना।

१६९- चोर री मां रो कोठड़ा में मूण्डो।

चोर की माता का मुँह कोठे में ही रहता है। चोरी का माल चुपके २ ही देखा जाता है।

इसका दुसरा अर्थ भी हो सकता है। अपराधी हमेशां मुंह छिपा कर ही रहेगा। वह ऊँचा मुँह करके नहीं बोल सकता।

१७०- चोर ने कई मारो चोर री मां ने मारणी।

चोर को मारने से क्या चोर की मां का मारना अच्छा है जिससे चोर पैदा ही न हों। समस्त अनाचारों के आधार का सर्वनाश करना अत्युतम है। जैसे 'न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी।"

१७१- चूल्हे परेंडे हाथ लगाओ मती, घर बार

सब थाणों ।

चूल्हे और पानी रखने के स्थान को मत छूना बाकी सब घर बार तुम्हारा है । मूल वस्तु का अधिकार न देकर बाकी ऊपरी अधिकार देने पर इस कहावत का प्रयोग होता है ।

१७२– चोर ने के चोरी कर जे, ने घर धणी ने के के होंशियार रीजे !

चोर को चोरी करने के लिए कहना और मकान मालिक को चोर से सावधान रहने की सूचना देना । नारद विद्या फैला दो को आपस में भिड़ा देना ।

१७३– चार दनां री चांदणी, फेर अंधेरी रात ।

चांदनी का प्रकाश चार दिन तक ही होगा फिर पुनः अंधेरी रात्रियाँ होने लग जायगी । जब कोई थोड़ी सी प्रभुता पाकर अपने पैर छोड़ने लगता है तब कहा जाता है कि यह तो चार दिनों की चांदनी है फिर अंधेरी रात है ।

१७४– चमार री छोड़ी बेगार नी छूटे ।

चमार के छोड़ने से बेगार नहीं छूट सकती । निर्बल के मोटी मोटी बातें बनाने से कुछ नहीं होता । उसका शोषण तो जब तक सबल वर्ग की भावना परिष्कृत नहीं हो जाती या स्वयं निर्बल सबलता को प्राप्त नहीं हो जाता तब तक होता ही रहेगा

१७५– चट भी मारी ने पट भी मारी ।

इस ओर की और उस ओर की दोनों मेरी हैं । सभी

और अपना अधिकार चाहने वाले के लिए यह कहावत कही जाती है।

१७६– चोखा रो कण दबाई ने देखणो।

पकते हुए चांवलों में से एक कण को दबाकर सब के पकने की जांच की जाती है। एक ही प्रकार की कई वस्तुओं के गुण अवगुण की परीक्षा एक ही वस्तु की परीक्षा से हो जाती है। किसी मनुष्य या वस्तु की जांच करनी होती है तब यह कहावत कही जाती हैं।

१७७– चेत रो पाणी ने चमार री छा कई काम री।

चैत्र मास की वर्षा और चमार के यहां का मट्ठा किसी उपयोग के नहीं होते। असमय में प्राप्त वस्तु और अनुचित स्थान की वस्तु किसी कार्य की नहीं होती।

१७८– चतर कागलो मैला परे बैठे।

चतुर कौआ गंदगी पर बैठता है। अपने को समझदार एवं गुणवान् मानने वाले से बुरा कार्य हो जाने पर इस कहावत का प्रयोग होता है।

१७९– चोर चोरी करेने घर में बोले सांच।

चोर चोरी करता है पर चोरी की बात घर में सही २ बता देता है। दुष्ट आदमी अपनी नीचता सब के सामने अपना अहित होने की आशंका से नहीं कहते परन्तु जहां उन को अपने अहित की आशंका नहीं रहती वहां वे सही सही बता दिया करते हैं।

१८०– चमत्कार वनां नमस्कार नी।

बिना चमत्कार के कोई नमस्कार नहीं करता। बिना

गुण के कोई नहीं पूछता।

१८१- चालती ने गाड़ी केवे, ने गड़ी ने केवे ऊँखड़ी।

चलती हुई वस्तु को गाड़ी अर्थात् गड़ी हुई कहते हैं और गड़ी हुई वस्तु को ऊँखड़ी चलायमान कहते हैं दोनों में नाम और काम का विरोध है।

१८२- चमार गंगाजी ग्यो तो इ डेड़की माथा वे।

चमार गंगा स्नान करने गया तो वहां भी मेंढ़क उसके सिर पर। एक चमार गंगा स्नान करने गया। उसने सोचा कि यहां पर मुझ से बेगार लेने वाला कोई नहीं है। इतने में एक बड़ा मेंढ़क उसके सिर पर आकर बैठ गया। दुःख सभी जगह साथ रहता है।

१८३- चोखा बचे कणकी मोटी।

चांवलों के बनिस्पत चाँवलों के दाने मोटे। सहायक या गोण वस्तु प्रधान से बड़ी होती है जब इस कहावत का प्रयोग होता है। अधिकतर पत्नी जब पति से बड़ी होती है उस समय पत्नी की लम्बाई बताने हेतु यह कही जाती है।

१८४- चालणो सड़क रो चावे देर वे।
बैठणो भायां रो चावे बेर वे॥

भले ही समय ज्यादा खर्च हो पर सड़क के रास्ते जाना चाहिए और बैर होने पर भी हिलना मिलना तो भाइयों का ही अच्छा रहता है।

१८५- चून जे रो पून।

जो पेट भरने के लिए आटा देता है उसी को पुण्य होता है जिसकी सामग्री दान दी जाती है उसी को पुण्य लाभ होता है।

१८६– चोंच दीदी तो चुग्गो देगा।

जिस परमात्मा ने खाने को चोंच दी है तो वह चुगने के लिए दाने भी जरूर देगा। ईश्वर के भरोसे जीवन व्यतीत करने का समर्थन करने के लिए यह कहावत कही जाती है। कहा भी है:--

"अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम।
दास मलूका यूँ कहे सब के दाता राम॥"

[छ]

१८७– छछूँदरी रे माथा में चमेली रो तेल।

छछूँदर के सिर में चमेली का तेल। वस्तु विशेष का बहुत ही साधारण अथवा गलत स्थान बताने पर इस कहावत का प्रयोग होता है।

१८८– छत री बेन ने छत रो भाई, पीठ पछाड़ी नार पराई।

जब व्यक्ति के पास कुछ संपत्ति होती है तो सभी स्त्री पुरुष उसके भाई बहिन हो जाते हैं पर वक्त पड़ने पर औरत भी दूसरों की हो जाती है।

१८९– छींकता कोई डण्डे ?

छींकने से कोई दण्ड नहीं देता? कार्य के आरंभ में छींक अशुभ समझी जाती है। छींकना प्राकृतिक होता है

अतः छींकने वाले को कोई दण्ड नहीं दे सकता जब कोई किसी के विरोध में बोलना चाहता है तब यह कहा जाता है कि विरोध में बोलने से कोई मारता नहीं है, जिस प्रकार छींकने पर कोई दण्ड नहीं दे सकता, यद्यपि छींक अशुभ मानी जाती है तथापि एक प्राकृतिक चीज होने से विवश हो करनी ही पड़ती है। इसी तरह विरोध हमें कितना ही बुरा मालूम हो पर विरोध करने का प्रत्येक को अधिकार है इसलिए अत्यन्त विरोध करने पर कोई किसी को मार नहीं सकता।

१९०– छींकताज नाक कट्यो।

छींकते ही नाक कट गया। विरोध में अपनी बात कहते ही जब बात उचित उत्तर द्वारा काट दी जाती है तब यह कहावत कही जाती है।

१९१– छोड़ी ईस ने बैठो बीस।

पलंग की ईस को छोड़ कर उस पर बीच में अधिक आदमी बैठ सकते हैं।

१९२– छोरा हाते चोर मरवणों।

बच्चों के द्वारा चोर को दण्ड देना। छोटे साधन से बड़ा लक्ष्य सिद्ध करने पर इस कहावत का प्रयोग होता है।

१९३– छठी रो दूध याद आवणों।

सब सुख भूल जाना। बहुत हैरानी होना।

१९४– छोंगावारा रो छेडों काढ़े ने, वींछा वारी रे पगे लागे।

सिर पर कलंगी लगाए हुए का घूंघट निकालती है और बिछुए वाली महिला के पांवों में धोक देती है । शिष्टाचार में भी पैसा और मान देखा जाता है। अगर मनुष्य उम्र में बड़ा है और गरीब है तो औरतें उसका घूंघट नहीं निकालती। इसी प्रकार उम्र में बड़ी पर निर्धन औरत के पावों पडने की रस्म भी पूरा नहीं करती ।

[ज]

१६५– जण जण रा नखरा राखती वेश्या रइगी वांझ ।

अलग अलग कई मनुष्यों के नाज उठाते २ भी वेश्या वांझ रह गई। हर एक का काम करने पर भी किसी की ओर से तनिक सा यश भी नहीं प्राप्त होता है तो यह कहावत कही जाती है ।

१६६– जो बोले जो सांकल खोले ।

जो किसी के पुकारने पर बोलेगा, वही उठकर सांकल (किवाड़ बंद करने की अर्गला) भी खोलेगा। साधारण समर्थन अथवा साधारण कार्य करने की इच्छा प्रकट करने पर जब सारे कार्य का भार आ पड़ता है तब यह कहावत कही जाती है ।

१६७– जवानी में बुढ़ापा रो मजो लेणो ।

जवानी में बुढ़ापे का आनंद उठाना । किसी भी कार्य को इसलिए नहीं करना है कि उसमें तो बहुत कष्ट उठाना पड़ेगा, जब ऐसी बातें युवकों के मुँह से सुनी जाती हैं तो

उनसे कहा जाता है कि तुम तो जवानी में भी बुढ़ापे का आनन्द ले रहे हो। कारण कि ऐसी बातें बुड्ढों से सुनी जाती हैं। जवान लोगों से ऐसी बातों की आशा नहीं की जाती।

१९८ जागता री पाड़ी ने ऊँगता रो पाड़ो।

जागने वाले की पाड़ी और ऊँगने वाले का पाड़ा। सावधान रहने पर ही श्रेष्ठ वस्तु मिल सकती है।

१९९ जएडी लाठी पएडी भैंस।

जिसके पास शक्ति का साधन है वही प्रत्येक वस्तु पर अधिकार जमा सकता है। अंग्रेजी की कहावत है 'Might is Right'। जैसे एक व्यक्ति भैंस लेकर जा रहा है। रास्ते में एक चोर लाठी लिए हुए मिला और उससे कहा कि भैंस लाओ अन्यथा अभी लाठी सिर में देकर छीन लूंगा। उसने सोचा कि मामला निकट है और कहा कि भैंस भले ही लेलो पर बदले में लाठी तो दो। चोर ने सहर्ष लाठी देकर भैंस ले ली और वह चला ही था कि उसने पुकारा "भैंस ला वरना लाठी मार कर भैंस छीन लूंगा। इस पर चोर ने भैंस देकर लाठी देने को कहा। तब सरदार बोल उठा कि लाठी कैसे दूं? जानते नहीं हो कि जिसकी लाठी उसकी भैंस होती है।

२०० जीवती माखी नी नगलाय।

जीवित मक्खी नहीं निगली जा सकती। जीवित मक्खी के पेट में चले जाने से तत्काल कै हो जाती है और वह बाहर चली जाती है। बहुत कठिन कार्य होने की दशा में यह कहावत कही जाती है।

२०१– जेठ रा जो पेट रा।

स्त्री के लिए कहा है कि पति के ज्येष्ट भ्राता की सन्तान को अपनी सन्तान के तुल्य ही माना जाना चाहिए।

२०२–जनम, मरण ने परण कदी नी रूके।

जन्म मृत्यु और विवाह के लग्न कभी नहीं टाले जा सकते। कैसी भी परिस्थिति हो यह तीनों काम तो होते ही हैं।

२०३– जणडो माणडो वणडा गीत।

जिसका माणडा (ब्याह) हो उसी के गीत गाये जाते। समयानुकूल व्यवहार करने पर यह कहावत कही जाती।

२०४– जो नी माने बड़ा री हीख, तो घर घर मांगे भीख।

जो अपने से अधिक अनुभवी मनुष्य की शिक्षा ग्रहण नहीं करता है वह घर घर भीख मांगता है। बिना बड़े आदमियों की देख रेख और शिक्षा के मनुष्य योग्य नहीं बन सकता।

२०५– जाणनी पेछाणा नी ने खाला बीबी सलाम।

जान पहिचान कुछ नहीं पर मौसीजी कह कर नमस्कार करना। बिना जान पहचान और परिचय के ही कोई मनुष्य आत्मीयता प्रकट करता है तो यह कहावत कही जाती है।

२०६– जणडे दुखे वणडे पीड़।

जिसके दर्द है वही पीड़ा का अनुभव करता है। जैसे- 'जिसके पैर न फटी बिवाई वह क्या जाने पीर पराई'। और

"Only the wearer kniws where the she pinches"

२०७- जीभ रो अंगीरो करनो ।

जिह्वा को अंगारा बनाना । परिस्थिति वश ऐसा कार्य करना जिससे अपने आपको महान् कष्ट मे डालना पड़े ।

२०८- जूना कन्टारियो ने नवो कापड़ियो फाइदा में रे ।

पुराना पंसारी (दवाइयाँ और नुस्खे बेचने वाला) और नया कपड़े का व्यापारी लाभ उठाते हैं । क्योंकि पंसारी का अधिकतर सौदा पुराना होने से अधिक दाम पर बिकता है और नये दुकानदार का नई भांत का कपड़ा अधिक पसंद किया जाता है

२०९- जल्या पे लूण लगावणो ।

जले पर नमक लगाना । दुःखी मन को और अधिक दुःखी करना ठीक नहीं ।

२१०- जणडे हाथ में वे वणडो हथियार ।

हथियार उसी का है जिसने उसको अपने हाथ में पकड़ रखा है ।

२११- जेब में वे नगदुल्ला तो खेले बेटा अबदुल्ला ।

जेब में नकद हो तो बेटा अबदुल्ला मौज करता है । सब पैसे का खेल है ।

२१२- जाजो लाख ने रीजो हाक ।

भले ही लाखों खर्च हो जाए पर पैठ रह जानी चाहिए ।

धन से भी पैठ बढ़कर है जिससे पुनः धनार्जन किया जा सकता है।

२१३– जतरो गोर नाके वतरो मीठो वे ।

जितना गुड़ डाला जायगा खाद्य पदार्थ उतना ही मीठा होगा। अच्छी सामग्री की अधिकता होने पर ही वस्तु श्रेष्ठ बन सकती है। जो काम जितने अधिक परिमाण में किया जायगा फल भी उतना ही अधिक अच्छा होगा।

२१४– जण्डो कोड़ो वण्डो घोड़ो ।

जिसके पास कोड़ा है घोड़ा भी उसी का है। जिसको वश में करने का साधन जिसके पास है उसका उपभोक्ता भी वही समझा जाता है।

२१५ – जेरु चाली सासरे सौ घरां संताप ।

चरित्रहीन (कुलटा) स्त्री जब पीहर से श्वसुरालय जाती है तब उसके चाहने वाले अनेक होने से उन सब को दुःख होता है।

२१६– जठे मल्या तीन दरजी वठे ही बात उलझी ।

जहाँ ज्यादा काम करने वाले एकत्रित होते हैं वहाँ कार्य बिगड़ जाता है।

२१७– जस्या ने तस्यो ने गदेड़ा ने भैंसो ।

जैसे के साथ तैसा ही करना चाहिए। कोई गधे के समान वर्ताव करे तो उसका बदला भैंसे के से वर्ताव से चुकाना चाहिए। जैसे-ईंट का जवाब पत्थर से देना।

२१८– जब्त करवा ने हवा हात रो कारजो छावे ।

संतोषी को सवा हाथ का हृदय चाहिए । जैसे 'क्षमा वीरस्य भूषणम् ।'

२१९– जै रूघनाथ रा झड़ाका लागे, चढ़वा मोटी घोड़ी ।

अन्न तन रा फाका पड़े ने पग में फाटी जोड़ी ॥

वह ठाकुर जो समाज में प्रतिष्ठित है, जिसके चढ़ने को बड़ी घोड़ी है और प्रत्येक मनुष्य जय रघुनाथजी की कह कर अभिवादन करता है उसके लिए कहा है कि उसकी स्थिति बड़ी खराब है, अन्न वस्त्र की कमी है और पैर में पहिनने को फटी हुई जूतियाँ हैं । जहाँ शरीर की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती तथा जहाँ पैसा सब ऊपरी टीप टाम में खर्च किया जाता है ऐसी परिस्थिति का दिग्दर्शन यह कहावत कराती है ।

२२०– जमाइ जी रूपारा घणा पर मरगी रा झोला आवे ।

जामाता बहुत सुन्दर है पर मिरगी का दौरा आता है । बाहर से अच्छी दीखने वाली वस्तु के यदि अन्तर में भयंकर बुराई हो तो वह किसी काम की नहीं समझी जाती ।

२२१– जनम्यां पेलां जनम पत्री वांचणी ।

शिशु के जन्म के पहले ही उसकी जन्म पत्री बांचना । भावी वस्तु के शुभाशुभ का वर्तमान में अन्दाजा लगाना ठीक नहीं ।

२– जीव जाय पण जीवका नी जाणी चाहिजे।

भले ही प्राण चले जांय पर जीते जी जीविका का साधन नहीं नष्ट होना चाहिए। जीवित रहने के साधनों को प्राप्त करने में भले ही प्राण चले जांय, उन्हें प्राप्त करना ही चाहिए। क्योंकि भावी सन्तति के लिये उसकी परमावश्यकता मानी जाती

२२३– जे री घटी ए बैणां, वणडो गीत गावणो।

जिसकी चक्की के आगे पीसने बैठा जाय गीत भी उसी चक्की के मालिक का गाना चाहिए। उसकी प्रशंसा करनी चाहिए, जिसके साधन से स्वयं की कार्य सिद्धि हो।

२२४– जीवते हा खालड़ी नी फाटे।

जब तक मनुष्य में तनिक भी श्वास बाकी है, तब तक उसकी चमड़ी नहीं निकाली जा सकती। जब तक सांस रहता है तब तक स्वय की इच्छा से स्वयं की हानि नहीं होती अर्थात् मनुष्य अंतिम समय तक अपने स्वत्व की रक्षा करता ही रहता है।

[ट]

२२५– टाटी री आड़ में शिकार खेलणी।

टट्टी की आड़ में शिकार खेलना। किसी दूसरे कार्य की आड़ में अपना काम निकालने के लिए यह कहावत कही जाती है।

२२६– टूटी री कइ बूंटी।

विनाश को प्राप्त वस्तु का कोई उपाय नहीं होता। कार्य

के बिगड़ने के बाद उसका सुधारना कठिन होता है।

२२७– टीपे टीपे समुन्दर भराय।

बूंद बूंद करके समुद्र भरता है। थोड़ी थोड़ी किन्तु निरंतर बचत करने से अधिक संग्रह हो जाता है जैसे-

'कण कण जोरे मन जुरैं, खाते नियरे होय।
बूंद बूंद से घट भरे, टपकत रीते होय॥

२२८– टोटा में रोटा री राड़।

निर्धनता में रोटियों के पीछे घर के लोगों में झगड़ा होता है। जो घर सर्व-सम्पन्न होता है वहाँ सर्व वस्तु सुलभ होती है परन्तु वहीं व्यापार आदि में दिवाला निकल जाने पर रोटी जैसी- साधारण वस्तु के लिए भी लड़ाई होने लगती है। मनुष्य वही है पर परिस्थिति सब कुछ कराती है।

[ठ]

२२९– ठण्डे पाणी खे उतारनी।

कभी कभी शीतल पानी में स्नान करते करते खुजली जैसा रोग दूर हो जाता है। स्वच्छता सब से बड़ी दवा है। किसी भयंकर आफत से सहने में पार पा जाने पर इस कहावत का प्रयोग होता है।

२३०– ठाकर लोग ठोरी, ने या मरी ने या ढ़ोरी।

ठाकुर लोग प्रायः सब जागीरदार होते हैं और उनको जीविकोपार्जन की कोई चिन्ता नहीं रहती। सारे दिन किसी को भरते हैं और किसी का काम करते हैं अर्थात् व्यर्थ के कार्य करते रहते हैं।

२३१– ठग ठगा रे पामणां ने जीवां री लापा लोर।

ठग के यहां आने वाले ठग मेहमान को आपसी बकवाद ही मिलती है।

२३२– ठाकर खावे ठीकरी ने चाकर खावे चूरयो।

ठाकुर भले ही मिट्टी के बर्तन के टुकड़े को चाटे पर चाकर तो वी शक्कर का चूरा ही खाता है। हालत यहां तक बिगड़ी है कि उनके नोकर तो पकवान खाते हैं और स्वयं उनको साधारण भोजन पर निर्भर रहना पड़ता है।

[ड]

२३३– डूबता ने टीनका रो आसरो।

डूबते को तिनके का सहारा। भारी विपत्ति में जरा सी भी सहायता महत्वपूर्ण होती है।

२३४– डाचा में हणाया।

मुँह के कोर में भी सचय वृत्ति रखना। भोजन में कमी कर संचय वृत्ति रखना मूर्खता है

२३५– डोकरी मरी ने दादो परण्यो, फेर तीन रा तीन।

बुढ़िया मां के मर जाने पर बड़े भाइ ने विवाह कर लिया और घर में फिर तीन आदमी हो गये। मूल पूंजी के नुकसान को किसी अन्य साधन से पूरा कर देने पर मूल पूंजी का मूल्य पहले सा ही हो जाता है। कभी किसी वस्तु की हानि हो जाती है किन्तु फिर लग भग उसी समय एक वस्तु

का लाभ भी हो जाता है तब यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है।

२३६– डाढ़ी में ती हांप पैदा वे।

दाढ़ी में सर्प का पैदा होना। कभी कभी अपने निकट संबन्धी व आत्मीय भी शत्रु का कार्य कर बैठते हैं। तब हम कहते हैं दाढ़ी मे सांप पैदा हुआ है।

२३७– डोड़ चोखो न्यारो होजे।

डेढ़ चावल बर्तन में अलग ही पकना है। जैसे तीन लोक मे मथुरा न्यारी। कोई मनुष्य अपनी अलग ही बात करता रहता है वहाँ इसका प्रयोग होता है

२३८– डेड़ बखाण ने मियांजी बाग में।

बखाण के डेढ़ वृक्ष के तले आराम करके बाग में आराम करने की कल्पना करना। मामूली सी स्थिति को बढ़ा कर प्रकट करना ठीक नहीं।

२३९– डूंगर परती राखोड़ो उड़ावणों।

पहाड़ पर से राख उड़ाना। पहाड़ की ऊँचाई से उड़ाई गई राख पास के सारे वातावरण को राखयुक्त एवं गन्दा बना देती है। उच्चासन पर स्थित होकर निकृष्ट बातों का प्रचार एवं प्रसार करना नीचता है।

[ढ]

२४०– ढाल तो करे खड़बड़, तलवार करे सरगवाई
मन केवे के जाई पड़ूं, जीव केवे के नी भाई

अस्त्र शस्त्र धारी वीर युद्ध में जाने को प्रस्तुत है। उसकी ढाल खड़बड़ आवाज कर रही है। तलवार उसको

आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रही है। मन कहता है कि जाकर धड़ाधड़ मारकाट मचाएं पर जी करता है कि नहीं वहां पर मृत्यु है। जी का मोह मनुष्य के कर्तव्य में बाधक होता है।

२४१–ढेड़ री गाड़ी अगाड़ी चाले।

ढेढ़ की गाड़ी आगे चलती है। उस गाड़ी से बचने के लिए उसे आगे जाने देते हैं। बुराइ को आगे जाने देकर उससे बचना ही समझदारी है।

२४२–ढोल में पोल।

ढोल के अन्दर पोल (रिक्तता) होती है। बाहरी ठाट-बाट के भीतर कुछ तत्व नहीं होता तो इस कहावत का प्रयोग होता है।

[त]

२४३–तेरे बरस री तीरिया ने पन्दरे बरस रो पूरख।
अकल आइ तो आइ, नीतर रेइग्यो जरख॥

स्त्रियों में तेरह वर्ष की आयु तक और पुरुषों में पन्द्रह वर्ष की आयु तक अपने अपने अनुकूल मानवोचित गुणों का प्रस्फुटन माना जाता है। उसमें बुद्धि का अंश और उसका उपयोग दिखाई पड़ता है। यदि १३ और १५ वर्ष निकल जाने पर भी यदि स्त्री और पुरुषमें क्रमशः बुद्धि नहीं आई तब उनमें फिर बुद्धि का प्रकाश होने की आशा करना व्यर्थ है। फिर तो वे उम्र पर्यन्त जरख ही रहेंगे।

२४४–तीना तेगड़ ।

तीन तेरह होना। अस्त व्यस्त होने पर यह कहावत कही जाती है।

२४५–तीन पाव मेदो ने आखा गाम में बेदो ।

तीन पाव मैदे का तो भोजन बनाया जा रहा है पर जीमने की हा हू सारे गांव में फैली हुई है। छोटे से कार्य में अधिक प्रचार होने पर यह कहावत कही जाती है।

२४६–तीन कोड़ी रो पाजी ।

अयोग्य व्यक्ति के डींगे मारने पर या उसके व्यर्थ की अनधिकार चेष्टा करने पर इस कहावत का प्रयोग होता है।

२४७–तोतरा घोड़ा दौड़ावणा ।

तुतलाने वाला बालक जो अपने भावों को स्पष्ट व्यक्त नही कर सकता लाठी, छड़ आदि चीजों पर सवार होकर अपने हाव भाव, क्रिया कलाप आदि से अनुभव करता है कि वह वास्तविक घोड़े पर सवार है। इसी तरह सारहीन कल्पना करने पर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। जैसे अंग्रेजी में— 'To make castles in the air".

२४८–तांबी हाटे तलवाड़े जाय ।

तांबे के मामूली पैसों की खातिर तलवाड़े तक जाना। यह बांसवाड़े की स्थानीय कहावत है और लोभवश अधिक परिश्रम करने को तैयार होने पर इस कहावत का प्रयोग होता है।

२४६—तेली रा तीनी मरो ने ऊपर पड़ो लाठ ।

तेली के तीनों-ही तेली, उसकी पत्नी औ उसका बैल मर जांय और मरे हुए पर लाठ भी पड़ जाय तो क्या? किसी का सर्वनाश हो हमें क्या पड़ी है जो चिन्ता करें?

२५१—तीन रा ढाई करदो पर नाम दारोगा धरदो ।

तीन रुपैये वेतन के बजाय ढाई रुपैये ही रखो पर पदवी 'दारोगा' की करदो । कम वैतन में भी ऊंचे पद की अथवा नाम की नौकरी चाहना । मनुष्य पैसा नहीं चाहता सम्मान चाहता है क्योंकि सम्मान साध्य है और पैसा साधन ।

२५२—तलाव में रेइने मगर ती वैर ।

तालाब में रह कर मगर से वैर । जिस स्थान पर रहना है उस स्थान के सामर्थ्यवान व्यक्ति से वैर करना घातक है ।

२५३—तुरन्त दान ने महा पुन्न ।

तत्त्तण किया हुआ कार्य अधिक फलप्रद होता है ।

२५४—तीरे जो वींरे ।

जो अपने अधिकार में है वही अपना है । स्वयं की अधिकृत वस्तु का ही इच्छानुसार उपयोग हो सकता है और उसीसे संकट निवारण भी अच्छी तरह से होता है ।

२५५—तोसे जो भरोसे ।

जो चीज अपने पास है उसी का भरोसा किया जा सकता है ।

२५६-तीन तेरे ने वात वखेरे।

तीन से तेरह होने पर बात बिगड़ जाती है। आवश्यकता से अधिक निर्णायक एक मत पर नहीं पहुँच सकते। कारण कि प्रत्येक की विचारधारा स्वभावतः अलग २ होती है।

२५७-तोरण री टचको पड़े कई ?

तोरण को छूने की आशा है क्या ? दुल्हा जब पाणिग्रहण करने दुल्हिन के घर में प्रवेश करता है तो द्वार पर वह तलवार से तोरण को छूकर उसे मारने की प्रथा पूरी करता है। जब किसी को विवाह करने की जल्दी होती है तो यह कहावत कही जाती है।

२५८-तीरिया तेल हमीर हठ, चढ़े नी दूजी वार।

स्त्री का विवाह (तैल हल्दी चढ़ना) दो बार नहीं होता है और राजा हमीर ने एक बार हठ पकड़ ली तो उसे पूरी कर ही शान्ति ली। दोनों किसी के लिये अपने निश्चित विचार को नहीं बदलते। कहावत का पूरा दोहा इस प्रकार है-

सिंहगमन सापुरस वचन, कजली फले एक बार।
तिरिया तैल हमीर हठ, चढ़े न दूजी बार॥

२५९-तूं गधी कुमार री, थारे राम ती कइ काम।

सारे दिन कुम्हार के लद्दू गधे की तरह सांसारिक कामों में रत रहने वाले मनुष्य को ईश्वर चिन्तन का अवसर नहीं रहता, उसके लिये यह कहावत कही जाती है।

[थ]

२६०—थां कइ आम्बा मउड़ा गाड्या के ?

आम और महुआ छायादार और फलदार वृक्ष हैं। जब कोई मनुष्य किन्हीं खेतों पर या किसी जमीन पर व्यर्थ में ही किसी अधिकार की मांग रखता है तो उसे कहा जाता है कि तूने क्या यहां आम और महुए के पेड़ लगाये हैं ?

२६१—थारी काण के थारा धणी री काण।

तेरी लज्जा रक्खी जाय या तेरे धणी की। जब किसी आदमी के कारण किसी का पक्ष लिया जाता है तब यह कहावत कही जाती है।

२६२—थांबे थांबे मुन्शी बैठा, कीने करूं सलाम।

अदालत या सरकारी कार्यालयों में ; र देखो उधर अधिकारी ही अधिकारी दिखाई देते हैं और प्रत्येक से काम होता है। अतः वहां किस किस को अभिवादन किया जाय ? जहां कुछ को आदर देने पर अधिक का अनादर होता है वहां यह कहावत कही जाती है या जहां पर कार्य थोड़ा हो पर करने वाले अनेक हों वहां पर इस कहावत का प्रयोग होता है।

२६३—थारी भी खाऊं ने मारी भी खाऊं ने कइ इनाम पाऊं?

तेरा भाग भी खा जाऊंगा और मेरा भाग भी खा जाऊंगा॥ दोनों का भोजन मैं अकेला करूंगा तो मुझे पुर-

स्कार क्या मिलेगा? इधर उधर से स्वार्थ पूरा करने पर भी सन्तोष न होना और ऊपर से अपनी होशियारी का पुरस्कार चाहना अनुचित है।

२६४–थूंकचंदजी कहो के अमीचंदजी कहो, एक री एक।

थूकचंदजी कहिये या अमीचन्दजी बात एकही है। नाम परिवर्तन से किसी का अवगुण दूर नहीं होता। जैसे— "नागराज कहो या सांपराज कहो" एक ही बात का द्योतक है।

[द]

२६५–दन हार दानगी ने खेतहार खारी।
जनमहार इस्त्री, ने वर हार हारी॥

कसी काम में खराब मजदूर सारे दिन की मजदूरी और परिश्रम को व्यर्थ कर देता है। खेत में बरसाती नाली खेत की बर्बादी का कारण होती है। अयोग्य स्त्री के मिलने से मनुष्य का सारा जीवन और खराब हाली मिलने से सारे वर्ष भर का कृषि–कार्य नष्ट हो जाता है।

२६६–दाता तीं सूम भलो, जो वेगो उत्तर दे।

दाता से सूम भला जो जल्दी जवाब देता है। रीं रीं करके दान करने वाले दाता से सूम (कंजूस) अच्छा जो तत्क्षण नहीं का उत्तर तो दे देता है जिससे मनुष्य को अपना समय नहीं खोना पड़ता, व्यर्थ की आशा नहीं रखनी पड़ती। समय मूल्यवान होता है।

२६७–दुखती चोट ने कनावड़े भेंट।

दुखती चोट और अपने से उपकृत मनुष्य का घनिष्ट सम्बन्ध अच्छा नहीं। जिस प्रकार दुखते पर चोट लगना बुरा होता है उसी प्रकार अवांछित मनुष्य से मिलना भी दुखदाई होता है। जब किसी मनुष्य से हम मिलना नहीं चाहते किन्तु आकस्मिक साक्षात्कार हो जाता है तब इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

२६८–दाणा नाकी ने कूकड़ा लड़ावणा।

मुर्गों को चुगने के दाने डाल कर आपस में लड़ाना और तमाशा देखना। नारद की तरह नई बात उत्पन्न कर आपस में लड़ा देना अच्छा नहीं।

२६९–दाणा दाणा पे मोर वे।

अन्न के दाने दाने पर मोहर होती है। जब अकस्मात ही कोई ऐसा मनुष्य आकर भोजन में सम्मिलित हो जाता है या किसी चीज का उपयोग करता है जिसके उपयोग करने की कोई सम्भावना नहीं होती वहां यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है।

३७०–दुबला ने रीस घणी।

निर्बल अत्यन्त क्रोधी समझे जाते है।

२७१–दूध रो दूध ने पाणी रो पाणी।

दूध का दूध पानी का पानी। न्याय करने पर इसका विशेषतः प्रयोग होता है। एक गूजर दूध के बराबर पानी

मिला कर बेचा करता था। कुछ वर्ष पश्चात् इस व्यवसाय से उसने कुछ रुपैये इकट्ठे किए। एक दिन आभूषण खरीदने की इच्छा से वह उन सब रुपैयों की थैली लेकर शहर को रवाना हुआ। रास्ते में एक तालाब की पाल पर नाश्ता करने बैठा। इतने में उधर से एक बन्दर आया और वह रुपैयों की थैली जो पास ही पड़ी थी लेकर भग गया। बन्दर कुछ आगे जाकर एक पेड़ पर चढ़ गया। गूजर भी उसके पीछे पीछे दौड़ा। बन्दर थैली खोल कर रुपैयों में से गिन कर एक पानी में और एक जमीन पर डालने लगा। कुल रुपैयों में से आधे जमीन पर गिरे जिनको गूजर ने उठा लिये और आधे पानी में फैंक दिये गये। इस प्रकार बन्दर ने दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया।

२७२-दबतो वाण्यो नमतो तोले।

बनिया उस मनुष्य को हमेशा कुछ अधिक तोलता है जिससे वह दबा हुआ होता है। जो मनुष्य जिस क्षेत्र में काम करता है उस क्षेत्र में वह अपने पर अहसान करने वाले मनुष्य को कुछ न कुछ लाभ काम पड़ने पर पहुँचा ही दिया करता है।

२७२-दांता ने कइ जीभ री भरावण देणी है।

जिह्वा तो हमेशा दांतों के बीच में ही रहती है और दांत उसकी निरन्तर रक्षा करते ही हैं। दांत तो जिह्वा की रक्षा के लिये सदैव सावधान होते ही हैं तो इसके लिये उनको क्या कहा जाय?

२७४—दाद दूखणा, दायमो ने खटमल माछर जूं।
मू पूछूं भगवान ने अतरा बणाया क्यूं !

मैं भगवान से पूछता हूँ कि उसने, दाद, फोड़ा, फुन्सी, दायमा (ब्राह्मण), खटमल, मच्छर, और जूं आदि का निर्माण ही क्यों किया ? इन छहों प्राणियों का सिवाय लोक को दुख पहुँचाने के और कोई काम नहीं माना जाता।

२७५—दिल्ली देखी दखण देख्या, देख्या सैर राणा रा।
तीन जणा रो संग नी कीजे लूला लंगड़ा काणा रा॥

दिल्ली, राणाजी का शहर (उदयपुर) और समस्त दक्षिण प्रान्त में घूम कर मैंने यही निर्णय निकाला है कि लूले, लंगड़े और काने का कभी साथ नहीं करना चाहिये क्योंकि इससे हानि होती है।

२७६—दीदा दन आपरा है।

किसी व्यक्ति द्वारा विद्या प्राप्त कर एक दिन वैभवशाली हो जाने पर प्रत्येक उस व्यक्ति का यह कह कर महत्व प्रदर्शन करता है कि जो कुछ मेरी इस समय सामर्थ्य है उसके मूल कारण आपही हैं।

२७७—दुध ने पूत छिपायां नी छिपे।

दुध और सुपुत्र छिपाने पर भी नहीं छिप सकते। अपने स्वाभाविक गुणों के द्वारा वे अपने आप ही प्रकट हो जाते हैं और इनकी बातें भी छिपाये नहीं छिपती है जैसे—

इश्क मुश्क, खांसी, खुशी, खेर, खून, मद्पान ।
ऐने छिपाये ना छिपे, कोशिश करो निधान ॥

२७८–दूध रा धोया कोयला उजला नी वे ।

दूध के धोने पर भी कोयला श्वेत नहीं हो सकता। नाना प्रकार से असंभव कार्य को सिद्ध करने के हठ के लिये इस कहावत के प्रयोग द्वारा काम करने वाले को उसकी मूर्खता का ज्ञान कराया जाता है। जैसे—

"कोयला होय न ऊजरा, सौ मन साबुन धोय।"

२७९–दूध री नदियां वह री है।

दूध की नदियां बह रही हैं अर्थात् आनन्द ही आनन्द है।

२८०–दूरी दीदी धीयड़ी जो मलवा रा इ सांसा ।

पुत्री का विवाह बहुत दूर स्थान में कराने पर घर वालों को संशय रहता है कि विवाहोपरान्त मिलना हो सकेगा या नहीं।

२८१–देर है पण अन्धेर नी है।

ईश्वर के लिये कहा जाता है कि दुष्टों और अत्याचारियों को दण्ड देने में उसके दरबार मे देर अवश्य है पर अन्धेर नहीं है। याने कभी न कभी दुष्टों को अपने कर्मों का फल मिल के ही रहता है। ईश्वर के दरबार में उन्हें कभी माफ नहीं किया जाता।

२८२ देवालेवा ने कइ नी, लड़वा ने मौजूद ।

देने लेने को कुछ नहीं होने पर भी निठल्ला आदमी लड़ने

को हर समय तय्यार रहता है।

२८३-दोड़तो घोड़ो दाणो पावे।

दौड़ लगाने वाले घोड़े को प्रतिदिन दाना मिलता है। मेहनत का फल हमेशां मीठा होता है और आलसी की तरह पड़े रहने पर भूखा रहना पड़ता है जैसे। जैसे—

"फरे सो चरे ने बन्ध्यो भूखो मरे।"

२८४-दो भाटा वचे ईंट ने दांता बचे जीब।

दांतों से घिर कर भी जीभ अपना काम करती है लेकिन उसकी स्थिति दो पत्थरों के बीच वाली ईंट के समान है जो पत्थरों द्वारा आसानी से पीसी जा सकती है। दुष्टों से घिर कर अपना काम उनसे हिलमिल कर निकालना चाहिये, बिगाड़ करने पर काम करना तो दूर रहा स्वयं के जीवन का भी धोखा रहता है।

२८५-दो लड़े तो एक पड़े।

दो पक्षों के संघर्ष में निश्चय ही एक पराजित होता है।

२८६-दो हाथ वचे पेट है।

पेट भरने को भोजन चाहिये तो कहा जाता है कि भोजन सामग्री जुटाने के लिये परिश्रम के साधन हाथ भी प्रकृति ने दिये हैं। हाथों से मेहनत करने वाला आदमी भूखों नहीं मर सकता।

[ध]

२८७—धन जा वएडी मत जा।

जिसका धन नाश हो जाता है उसकी बुद्धि भी मारी जाती है। भौतिक संपर्क में धन ही मनुष्य का एक मात्र सहारा है। धन द्वारा संसार में वह ऐश्वर्य का उपभोग करता है पर उसी धन के नाश होने पर उसकी बुद्धि विचलित हो जाती है। प्राय: इस कहावत का प्रयोग उस समय होता है जब कोई मनुष्य अपनी किसी वस्तु के चोरे जाने पर अपने आत्मीय व दूसरे ईमानदार व्यक्तियों पर भी सन्देह करता है।

२८८—धन जावा केड़े अक़ल आवे।

धन के नाश हो जाने पर मनुष्य की बुद्धि ठिकाने आती है। जब तक मनुष्य के पास धन है तब तक उसको अन्धाधुन्ध काम करने की लगी रहती है। पर जब उसके धन का नाश हो जाता है तब वह आगे सदा संभल कर रहने की चेष्टा करता है।

२८९—धर करवत मोची रो मोची।

एक मोची काशी में करवत लेने गया। माथे पर 'करोत' रख कर भी उसने प्रार्थना की कि हे प्रभो! मुझको मोची ही करना। अतः सुअवसर प्राप्त करके भी जो अपनी स्थिति को नहीं सुधारना चाहता उसके लिये यह कहावत कही जाती है। ऐसा कहा जाता है कि प्राचीनकाल में जो अत्यन्त दुखी होता था वह काशी में जाता था जहां पर एक बड़ी

करवत रक्खी हुई थी। वह दुखी मनुष्य इस करवत के नीचे बैठता और जो उसको भविष्य में बनने की इच्छा होती उसकी चाहना करने पर वह करवत उस पर डाल दी जाती थी।

२६०–धरम री गाय रा कइ दांत देखणा।

गाय खरीदते समय दांत वगैरह देख कर उसके लिये शुभ अशुभ व उम्र का निर्णय किया जाता है। पर जो गाय दान में दी जाती है उसके शुभ अशुभ का निर्णय नहीं किया जाता, जो मिली सो अच्छी। बिना परिश्रम के मुफ्त में ही कोई वस्तु प्राप्त हो जाय तो उसके बारे में अच्छी बुरी आदि का निर्णय करना व्यर्थ है। जो भी मिले लेकर अपना अधिकार करना चाहिये।

२६१–धरती रा पड्या धरती पेइज थोड़ी रेगा।

धरती पर पड़े हुए हमेशां धरती पर थोड़े ही पड़े रहते हैं? जो आज हीनावस्था में है वह कल अवश्य उन्नति करेगा कारण कि उत्थान-पतन संसार का सामान्य नियम है।

२६२–धूणी, धान, धपाउ घास, मांग्या नी देवे किसी को, तो घोड़ा जीवे बरस अस्सी को।

घोड़े को मांगने पर किसी को न दे और उसको पेट भर कर घास खिलावे, प्रतिदिन धान (रातब) दे तथा वक्त जरूरत धूणी देता रहे तो कहा जाता है कि घोड़ा अस्सी वर्ष तक जीवित रहता है।

२६३-धोया ने रांया।

यह कहावत ऐसे कपड़े के लिये कही जाती है जिसकी धोने पर पहली जैसी अवस्था नहीं रहती।

२६४-धोरा धोरा सब दूध नी वे।

समस्त सफेद द्रव पदार्थ दूध नहीं होते। एक ही वर्ण की सब वस्तुएँ उत्तम गुणों वाली ही हों ऐसा सम्भव नहीं। "All that glitters is not gold."

[न]

२६५-नंगारखाना में तूती री आवाज कुण हुणे ?

जहां नगारे बजते हों वहां तूती की आवाज़ को कोई नहीं सुनता। जहां बड़े बड़े मनुष्यों का बोलवाला हो वहां छोटे आदमी की कोई नहीं सुनता ?

२६६-नकटा नकटी नगर वसे, घड़ीक हँसे ने घड़ीक भसे

मानापमान का ध्यान नहीं रखने वाले स्त्री पुरुष यदि किसी स्थान में रहेंगे तो वे समाज और पड़ोसियों में सहिष्णुतापूर्ण जीवन न बिता कर कुछ ऐसे काम करेंगे जो इज्जत को बिगाड़ने वाले ही होंगे। वे कभी तो बहुत हँसेंगे और कभी आपस में ऐसे लड़ेंगे कि आपस में गाली गलौज करने लगेंगे।

२६७-नकटो नाक है तोई नाक पे माखी नी बैठवा दे।

नाक कटा हुआ है तो भी नाक के स्थान पर मक्खी नहीं

पर भविष्य में वह ऐसे काम नहीं करता जिससे बिगड़ी हुई इज्जत फिर बिगड़ जाय तब यह कहावत कही जाती है।

२९८–नट्यो वाएयो आर में नी आवे।

बनिया यदि किसी बात के लिये एक बार मना कर देता है तो वह बाद में धमकाने आदि पर भी हां नहीं करता है।

२९९–नफा आगे पूंजी रो कई थाग।

जिस मनुष्य को खूब नफा होता है वह खर्च करने में मूल पूंजी की कभी परवाह नहीं करता और मनमाना अनाप-शनाप खर्च करता है।

३००–नफा में नूतो आवे ने टोटा में आवे पामणा।

घर में खाने पीने का ठाठ रहता है तब तो इधर उधर से काफी निमन्त्रण आते हैं पर जब घर में टोटा पड़ जाता है तो मेहमान आने लगते हैं जिससे अधिक खर्च पड़ता है और घर की इज्जत भी कम होती है।

३०१–नर चिंती रोती रही, हर चिंती सो होय।

मनुष्य के विचार करने से कुछ नहीं होगा। जो कुछ भगवान को स्वीकार होगा वही होगा। "Man proposes and God disposes."

३०२–नर है फांकड़ा पण थैली रा मूंडा हांकड़ा।

मनुष्य तो फक्कड़ है पर क्या करे थैली में पैसे की गुंजाइश कम है। जो निर्धन है परन्तु दिल वाला होता है

उसके लिये यह कहावत कही जाती है।

३०३–नव में तीं तेरे तोके।

जो आदमी बहुत चालाक और होशियार होता है उसकी होशियारी व चालाकी बताने के लिये यह कहावत कही जाती है कि यह तो इतना चालाक और होशियार है कि नो में से तेरह उठाने की फिक्र में रहता है।

३०४–नवरोइ एंठो हाथ माथे लुवे।

व्यर्थ ही झूठा हाथ सिर में पोंछना। मुफ्त का पहस्मान कराने पर यह कहावत कही जाती है।

३०५–नवी आई पुराणी ने दूर करां।

नई वस्तु के प्राप्त हो जाने पर पुरानी को दूर कर देना चाहिये। अपने आपको नये वातावरण के अनुसार पुरानी समस्त रूढ़ियों को त्याग कर बनाने के लिये इस कहावत का प्रयोग होता है। जैसे— 'Old order changeth yielding place to new."

३०६–नवो वकील ने पुराणो हकीम।

नया वकील और पुराना (अनुभवी) वैद्य बहुधा अपने कामों में सफल होते हैं।

३०७–नाचणबाई रे नेवलो पाको।

नाचणबाई का नाखून पक गया। ज्यादा नखरे वाले को थोड़ासा भी दर्द होता है तो वह हाय तोबा मचा देता है। उस

समय उनके दर्द की उपेक्षा के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

३०८– नाइ धोई कोढ़ मांगणी।

नहा धोकर कोढ़ के लिए प्रार्थना करना। अच्छा काम करके बुरे फल की याचना करना।

३०९– नाक जाय तो जाय पर हाक नी जाय।

इज्जत भले ही चली जाय पर समाज में लेनदेन का विश्वास नहीं उठना चाहिए।

३१०– नागो कइ धोवे ने कइ निचोवे।

नंगा मनुष्य क्या धोवे और क्या निचोवे जिसके पास जिसका पूर्ण रूपेण अभाव है वह उस वस्तु सम्बन्धी कोई कार्य नहीं कर सकता।

३११– नाणो मली जाय पर ताणो नी मले।

रुपया पैसा तो फिर भी मिल सकता है पर गया हुआ समय दुबारा हाथ नहीं आता। धन से भी समय मूल्यवान है।

३१२– नाता री लुगाई री ने बजार री छींक री कइ इज्जत।

नाते की औरत और बाजार की छींक का कोई ध्यान नहीं रखा जाता। छींक से शकुन विचार किया जाता है पर बाजार की छींक का कोई महत्व नहीं है। ठीक इसी तरह एक पति के पास रही हुई औरत की इज्जत दूसरे पति के यहां

कुछ भी नहीं होती।

३१३- नादान दोस्त तीं दाना दुश्मन हाउ ।

नादान दोस्त से वृद्ध वैरी अच्छा होता है। कम उम्र का अनुभव हीन व्यक्ति दोस्त होते हुए भी किसी काम का नहीं। इसके विपरीत पकी हुई उम्र का अनुभवी वैरी अच्छा जिससे कुछ सीखने को तो मिलता है।

३१४- नावी नावी री हजामत रो पईसो नी ले।

नाई नाई के बाल बनाने की मजदूरी नहीं लेता। एक ही क्षेत्र में और एक ही प्रकार का काम करने वाले मनुष्य को उसी काम में परस्पर एक दूसरों से कुछ भी मजदूरी नहीं लेन के लिए अथवा नहीं लेने पर यह कहावत कही जाती है।

३१५- नींद् वेंची ने उजरको मोल लेणो।

नींद बेच कर उजरके की आफत सिर पर लेना। रात्रि के समय किसी का अपनी नींद बेकार कर काम किया जाय पर वह इसका अहसान न मानकर उलटा सिर पर बिगाड़ करने का अपराध लगावे तो यह कहावत कही जाती है। स्वयं की हानि करके उल्टे सिर पर आफत मोल लेना अच्छा नहीं होता।

३१६- नी नव मण तेल वे ने नी राधा नाचे ।

न नो मण तेल होगा और न राधा नाचेगी। जब किसी को काम करने की इच्छा नहीं होती है तो वह ऐसा बहाना उपस्थित करता है जिसका निदान असंभव होता है तब यह कहावत कही जाती है।

३१७– नोक पर चोक ।

जरासी नोक पर बड़ी लम्बी चौड़ी चौकोर वस्तु लगाना। दो पक्षों में बढ़ बढ़ कर होड़ा होड़ से काम करने पर इस कहावत का प्रयोग होता है।

३१८– नौकर आगे चाकर ने चाकर आगे कूकर।

नौकर को काम बताने पर वह खुद न करके अपनी बला उतारने खातिर चाकर को वह काम करने को कह देता है। पर चाकर भी वह काम न करके कूकर (गाँव बलाई आदि) को बता देता है। इस प्रकार जिस ढंग से काम होना चाहिए वैसा नहीं हो पाता। सच है जहाँ एक कार्य के लिये कई आदमी होते हैं वहाँ कोई आदमी पूर्ण जिम्मेदारी और लगन से काम नहीं करना चाहता।

३१९– पइसा री राते कोई नी जन्म्यो।

पैसे की रात में किसी ने जन्म नहीं लिया। अच्छे अच्छे पुरुषार्थियों को भी पैसे का सहारा लेना पड़ता है। अतः, पैसे को सर्वशक्ति-संपन्न सिद्ध करने के हेतु यह कहावत कही जाती है।

३२०– पइसा वारा री पेसी ने गरीब री ऐसी तेसी

अदालतों में मुकद्दमे बाजी के समय तारीख पेशी पर पैसे वाले पक्ष की ही पूछ होती है और न्यायाधीश आदि बहुधा अपनी जेबें गर्म कर फैसला उसी पक्ष में देते हैं। गरीब की वहाँ कोई पूछ नहीं है।

३२१- पइसा रे वास्ते पावला रो तेल बालणो।

पैसे के खातिर चार आने का तेल जला देना। मामूली लाभ के लिए कई गुना अधिक खर्च करने पर और साथ साथ व्यर्थ का परिश्रम करने पर यह कहावत कही जाती है। इस कहावत का प्रयोग इस प्रकार से भी होता है कि व्यापारी लोग अपने हिसाब में एक पैसे का फर्क होने पर उस फर्क को निकालने के लिए चार आने तक का तेल जला देते हैं। सिद्धान्त के लिए थोड़ी सी वस्तु के लिए भले ही ज्यादा खर्च हो जाय उसकी चिंता नहीं करना चाहिए।

३२२- पइसो मिले न कोड़ी और बाई फरे दौड़ी।

पैसे तो क्या कोड़ी भी हाथ नहीं लगती फिर भी बाई इधर उधर सब के पास आत्मीयता दिखाने को दौड़ी फिरती है। तनिक लाभ न होने पर भी इधर उधर सब की मिन्नत करने वाले व्यक्ति के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

३२३- पची पची ने मरी जाणो।

पच पच कर मर जाना। अत्यधिक परिश्रम करने पर यह कहावत कही जाती है।

३२४- पटेल रो पाड़ो मरे तो आखो गाम आवे।
ने पटेल मरे तो कोई नी आवे॥

जब तक पटेल जीवित रहता है तो सारे गांव वाले को उसकी गरज रहती है अतः पटेल के मामूली से दुःख तक में संवेदना प्रकट करने गांव का प्रत्येक व्यक्ति उसके पास चला जाता है परन्तु पटेल की मृत्यु होते ही वह गरज समाप्त

हो जाती है। अतः उस मृत्युघड़ी में उसके वहां कोई नहीं फटकता। लोक की स्वार्थवश चापलूसी को बताने हेतु इस कहावत का प्रयोग होता है।

३२५– पड़्या लखण मर्‌याँ मटसी।

मनुष्य में घर कर जाने वाले लक्षणों की समाप्ति उस मनुष्य की मृत्यु के साथ होती है। अक्सर इस कहावत का प्रयोग किसी के बुरे गुणों को जीवन में छोड़ देने की बात को असंभव बताने हेतु होता है।

नीम न मीठा होय सींचो गुड़ घीयसूँ
जांका पड़्या स्वभाव जासी जीवसूँ

३२६– पड़का रो भुजंग वे।

सांप का बच्चा एक दिन भयंकर सर्प बनता है। कोई सूक्ष्म वस्तु भविष्य में हानिकारक रूप में सामने आती है तो उससे निपट लेने को इस कहावत का प्रयोग होता है।

३२७– पतिवरता भूखे मरे ने पेड़ा खाय छिनाल।

पतिव्रता स्त्री तो भूखों मरती है पर व्यभिचारिणी स्त्री पेड़ा खाती है। इस कहावत में आज की परिस्थिति का भी दिग्दर्शन कराया गया है, जहाँ ईमानदार भूखों मरते हैं और बेईमान मौज उड़ाते हैं।

३२८– पर घर नाचे तीन जणा, वेद वकील दलाल।

चिकित्सक, वकील और दलाल ये तीनों ही व्यक्ति हमेशा दूसरों के घरों पर ही मौज करते हैं।

३२९– परदेश जमाई फूल बराबर, गाम जमाई आधो।
घर जमाई गधा बराबर, मन आवे जद लादो॥

परदेश का जामाता अपने श्वसुरालय में फूल की तरह आदर पाता है कारण कि वह श्वसुरालय कभी कभी आता है। गांव का जामाता परदेश के जामाता से आधी इज्जत पाता है कारण कि उनका साक्षात्कार प्रतिदिन ही हुआ करता है। किन्तु घर पर पुत्र के स्थान पर हुए जामाता (घर जमाई) की इज्जत श्वसुरालय वाले गधे की तरह करते हैं। यानी जब चाहते हैं तब ही उस से हर प्रकार का काम लिया करते हैं।

३३०– परदेश में क्लेश नरेशन को।

परदेश में राजाओं को भी कष्ट उठाना पड़ता है। परदेश में रहना प्रत्येक के लिए कष्ट कर होता है।

३३१– पोबारा पच्चीस है।

काम किया हुआ तैयार है। कार्य प्रारम्भ के समय सिद्धि योग मालूम हो जाने पर इस कहावत का प्रयोग होता है।

३३२– परबारे ने पौबारे।

दूसरों द्वारा बाला बाला ही काम सिद्ध हो जाना।

३३३– पराया चांदा नीचे जाड़े बैठणों ने फेर कराज्जणों।

दूसरों के घर नीचे पाखाना, फिरने बैठना और फिर पाखाना फिरते समय आवाज करना। किसी वस्तु को उपयोग में लाना और फिर उस पर जोर जमाना उचित नहीं।

३३४— पराये मुण्डे तमोल चावणा है ।

दूसरे के मुँह पान चबाना सरल है ; किसी ऐसी बात के लिए प्रयत्न करना जिसका पूरा करना अपने हाथ में न हो और दूसरे पर निर्भर रहना पड़ता हो तो इस कहावत का प्रयोग होता है कि यह बात अपने वश की नहीं है यह तो दूसरे के मुँह से पान खाता है।

३३५— परायो घर थूंकवा डर, आपणों घर हांगी ने भर।

दूसरों के घर पर थूंकते हुए भी डरना पड़ता है; परन्तु अपने घर में पाखाना फिरे तो भी कोई कहने वाला नहीं होता इस कहावत में यह बात बतलाई गई है कि अपना घर चाहे कितना भी खराब हो हम उस में पूरी स्वाधीनता से रह सकते हैं और दूसरों का घर चाहे जितना ही अच्छा हो वहां उस स्वतंत्रता का उपयोग हम नहीं कर सकते।

३३६— पांचई आंगऱ्यां एक हरीकी नी वे ।

पांचों ही उँगलियां एक समान नहीं होती है । समान वर्ग के सदस्यों के पारस्परिक अन्तर के समर्थन हेतु यह कहावत कही जाती है।

३३७— पांचई पराया, लाड़ा मरद घणी ।

अक्सर दुल्हे की पांचों वस्तुएँ (कपड़े, गहने, घोड़ा सईस और बाजेगाजे) दूसरों की होती हैं फिर भी वह दुल्हा राजा कहलाता है। कोई आदमी व्यर्थ में ही जरूरत से ज्यादा अपने को बताने की कोशिश करता है तो यह कहावत कही जाती है ।

३३८– पांच जणा के जो कीजे काज ।
हार्या जीत्या री नी है लाज ॥

किसी भी कार्य के लिए पांच व्यक्तियों की यानी बहुमत की राय के अनुसार काम करना ठीक है। अपनी हार जीत की बात बीच में नहीं लाना चाहिए। लोकमत की अवहेलना करने वाले के लिये यह कहावत कही जाती है।

३३९– पांच मरजो पण पांच ने पालवा वालो मरो मती।

पाँचों का मर जाना अच्छा है, पर उन पाँचों के पोषण करने वाले की मृत्यु अच्छी नहीं।

३४०– पांच ही आंगला घी में न सर कढाई में ।

सब आनन्द ही आनन्द है। पांचों उँगलियाँ घी में हैं और सिर कढ़ाई में है। चाहे जितना घी खाओ कोई रोकने वाला नहीं है।

३४१– पांती होली मेली।

साझे का बँटवारा क्या होता है, बंटवारा और होलिका दहन साथ साथ होता है। बंटवारे में अक्सर लड़ाई झगड़ा होता है और आपसी झगड़े में होलिका के पदार्थों की तरह साझे की वस्तुएँ भी कसाकसी में नष्ट कर दी जाती हैं।
जैसे पांती की हन्डिया चौराहे पर फूटती है।

३४२– पाकी डाल पर बैठणो।

पक्के फलों से युक्त टहनी पर बैठना। किसी को उपयोग के लिए बिना ही परिश्रम समस्त इच्छित सामग्री प्राप्त करने की लालसा होती है तो इस कहावत का प्रयोग होता है।

३४३– पाड़ा दूवणां है।

भैंसे का दूध निकालना है। असंभव काम को करने पर उतारू होने वाले को यह कहावत कही जाती है।

३४४– पाणी पी नेपूछे घर, आंगरी राखी ने देखे दर।
मुट्ठी राखे खन्जर पर, और मौत पेलां जावे मर॥

पानी पी लेने के पश्चात जाति आदि से घर का परिचय पूछने वाला, अंगुली डाल कर बिल की जांच करने वाला, हर समय मुट्ठी में तलवार रखने वाला ये उपरोक्त बातें किसी की अयोग्यता की सूचक है और समय से पहले ही मौत लाने वाली है।

३४५– पाणी पेलां पाल बांधणी।

पानी आने के पहले ही पाल बांधना। भावी कार्य का पहले से ही उचित प्रबन्ध करने पर यह कहावत कही जाती है।

३४६– पाणी थारो रंग कस्यो के जण में मलावे जस्यो।

पानी तेरा रंग कैसा? जिसमें मिला दो वैसा ही। हर क्षेत्र में सफलतापूर्वक कार्य करने वाले व हर एक से मिलकर रहने वाले के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

३४७– पाणी बतावे वटे गादो नजरे नी आवे।

जहां पानी बतावे वहां कीचड़ तक नहीं दिखाई देता है। जिस आदमी की बात में कुछ भी सार नहीं होता है, वहां पर यह बात कही जाती है।

३४८– पानां फूलां में रेणों ।

पान और फूलों में जीवन के दिन बिताना । अत्यन्त आनन्द और फैशन में रहने वाले के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है ।

३४९– पाने पाने भागणो ।

जो आदमी किसी की पकड़ में नहीं आता है तब यह कहा जाता है कि यह तो पत्ते पत्ते भागता है ।

३५०– पाप मगरे चढ़ी ने बोले ।

पाप पहाड़ पर चढ़कर अपना परिचय देता है । ईश्वरीय व्यवस्था ही ऐसी है कि कोई कैसा ही छिप कर पाप करे वह प्रकट होकर ही रहता है ।

३५१– पाप में पुण्य रो छेरो ।

पाप पूर्ण कार्यों में अवसरवश साधारण सा पुण्य कार्य हो जाता है तो यह कहावत कही जाती है ।

३५२– पापो पाप समाप्तौ ।

जब एक आदमी किसी के साथ पाप करता है तो दूसरा भी उसके साथ वैसा ही पाप का व्यवहार करता है । फल यह होता है कि पाप पाप को खा जाता है और दोनों नष्ट हो जाते हैं ।

३५३– पामणा हाथे चोर मरावणो ।

मेहमान के हाथ से चोर को पिटवाना । जिस व्यक्ति को हमारे नफे नुकसान से कोई सरोकार नहीं, उसका हमारा

शिष्टाचार का सम्बन्ध है और उसी के हाथ से हमारे हक में नुकसान पहुँचाने वाले को दण्ड दिलाने की सोचना ठीक नहीं है। कारण कि उसको क्या गरज पड़ी कि वह उसको दण्ड दे।

३५४- पाव मूं पूणी ई नी कती।

पाव रुई में से अभी तक एक पूणी भी नहीं काती गई है। कार्य का सूक्ष्मांश भी पूर्ण न किये जाने पर यह कहावत कही जाती है।

३५५- पीठ पछाड़ी ठाहरा वारो।

पीठ पीछे डेरा उठाए फिरने वाला। घुमक्कड़ के अस्थिर निवास को प्रकट करने हेतु इस कहावत का प्रयोग होता है।

३५६- पीठ पाछे तो राजाजी ने भी बके।

पीठ पीछे तो राजा की भी बुराई की जाती है। कोई व्यक्ति यह दोष मढ़े कि अमुक व्यक्ति मेरी पीठ पीछे बुराई करता है तो उसको यह कहावत सुना कर उसकी बात को नगण्य ठहराने की चेष्टा की जाती है।

३५७- पीस्या ने कई पीसणो।

पीसे हुए को दुबारा नहीं पीसा जाता है। किए हुए कार्य को फिर करने पर इस कहावत का प्रयोग कर उस कार्य को करने की अनावश्यकता बताई जाती है।

३५८- पीवे वेरा आंगणा, ने खावे वेरो घर।
सूंघे वेरा छींतरा, ने तीनई बराबर॥

तम्बाखू का प्रयोग हर तरह से अनुचित है। देखिये पीने वाला धुएँ से घर का वायु मण्डल खराब करता है और आंगन में राख बिखरी हुई रहती है। खाने वाला थूंक थूंक कर घर बिगाड़ता है और सूंघने वाला नाक सींक सींक कर अपने कपड़े खराब करता है।

३५९- पुराणी पगरखी काटवा लागे।

पुरानी जूती काटने लग जाती है। पुरानी वस्तु को नहीं बदलने या जोड़ने पर वह दुखदायी हो जाती है।

३६०- पूतरा लक्खण पालणे ने बऊरा लक्खण आंगणे

माता को पुत्र के लक्षण का भान पालने में ही हो जाता है परन्तु पुत्रवधू के लक्षणों का भान उसके घर आंगन आदि की सफाई देख कर किया जाता है।

३६१- पेटे पड़े जो पतीजा।

पेट में जितना अन्न पड़ जाता है मनुष्य की आत्मा को वही सन्तोषप्रद होता है। इधर उधर कितनी ही सामग्री क्यों न हो परन्तु मनुष्य को संतोष उतनी ही से होगा जितनी कि वह स्वयं के हाथों उपभोग कर सकेगा। अन्त तक ऐसा कोई न कोई कारण उपस्थित हो ही जाता है कि मुँह के सामने का निवाला मुंह के मुँह में रह जाता है। अंग्रेजी में भी कहावत है:—There are many slips the cup and lip.

३६२-पेलाइ मूँ मनवार री काची फेर गांव रा लोग लुच्चा।

पहले ही तो मैं मनुहार की कच्ची हूँ और फिर गाँव के

मनुष्य लुच्चे हैं। सीधा आदमी अपने भोले स्वभाव से प्रत्येक के आह्वान पर प्रस्तुत हो जाते हैं और बिचारा कभी लफंगों के हाथों पड़ गया तो वे लोग उस सीधे साधे से अपना मन माफिक फायदा उठा लेते हैं।

३६३– पेलां तो वऊ बावरी ने पछे खादी भांग।

पहले ही वह पगली है और फिर उसने भंग खाई है अतः उसका पागलपन द्विगुणित हो गया है जैसे "करेला और नीम चढ़ा।"

३६४– पेली मञ्जिल बादशा ने भी मुश्किल।

किसी भी काम में प्राथमिक लक्ष्य तक पहुँचना तो राजाओं के लिये भी दुष्कर है। किसी भी कार्य में पहले पहल तो कष्ट उठाना ही पड़ता है।

३६५– पेलां मारे सो मीर।

पहले मारे सो मीर। सबसे पहले सचेत होकर काम पूरा करने वाला हमेशा लाभ में रहता है।

३६६– पोतडा रा अमीर ।

जन्म से धनवान पुरुष के लिये यह कहावत कही जाती है—Born with silver spoon in the mouth.

३६७– पोपांबाई री पायगा।

यह पोपांबाई का अस्तबल है यहां घोड़ों की देखभाल की कोई भी व्यवस्था नहीं है। इसका प्रयोग और भी तरह से होता है जैसे 'पोपांबाई रो राज है" पोपांबाई रो काम काज है आदि।

[फ]

३६८—फरे वाण्यां रो, फरे बामणां रो, फरतो लादे सेजो
थूँ क्यूँ फरे बलाई छोरा, थारे घरे वणजे रेजो,

बनिया, ब्राह्मण और कहीं पर हिला हुआ आदमी ये तीनो हमेशा फिरते हुए दिखाई पड़ते हैं कारण कि इनको फिरने से लाभ होता है। परन्तु बलाई के छोकरे! तुझे इस तरह डाँवाडोल फिरने से कुछ भी लाभ नहीं होगा तू तो लाभ के लिये अपने घर पर बैठकर रेजा (खादी) बुन।

३६९—फिसल पड्यां री हर गंगा।

जलाशय में नहाने की इच्छा नहीं है परन्तु पानी में फिसल जाने पर फिसलने की बात को ताक में रखकर खूब पानी उछाल उछाल कर नहाना। किसी काम को करने की इच्छा न होते हुए भी अवसर आने पर अवसर का लाभ उठा लेने पर यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है। इस कहावत में अवसरवादिता की ओर संकेत है।

३७०— फूंकी फूंकी ने पग मेलणो।

फूंक फूंक कर पैर रखना। अत्यन्त सावधानी से काम करने के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

३७१— फूलां री फांस लागे ने दीवा री लू लागे।

फूल की फाँस चुभती है और दीपक की लौ से तप्त वायु (लू) लगती है। अत्यधिक नाजुकपन के लिए अतिशयोक्ति रूप में यह कहावत कही जाती है।

"करकि करेजो गड़ी रही, वचन वृक्ष की फांस।
निकसाए निकसे नहीं, रही सो काहु गास॥"

' नख पानन की काढ़ हेरी ।
अधर न गड़ै फाँस तेही केरी ॥'' जायसी-
' अमृत ऐसे वचन में रहिमन रस की गांस ।
जैसे मिसरि हू में मिले निरस बांस की फांस ॥— रहीम

३७२–फेर मूछां पर हाथ ।

मूँछ पर हाथ लगा । किसी को कोई काम करने के लिए उसकी हिम्मत का प्रदर्शन कराने हेतु इस कहावत का प्रयोग होता है ।

[ब]

३७३– बकरो रोवे जीव ने, कसाई रोवे खाल ने ।

बकरा अपने जीवित रहने की बात को सोचकर आवाज करता है और उसका बधिक कसाई उसकी खाल प्राप्त करने पर उतारू है । निर्बल व्यक्ति अपने बचाव के लिए गिड़गिड़ाता रहे तो क्रूर स्वार्थी उसको कुचल कर अपना स्वार्थ सिद्ध कर ही लेता है ।

३७४– बद हाऊ ने बदनाम बुरो ।

वह स्थिति फिर भी अच्छी है कि हम बुराइयों के घर हैं और लोक स्पष्ट रूप से हमारे बारे में कुछ नहीं जानता परन्तु बदनामी हो जाने के बाद तो संसार में मुँह दिखाना तक भारी पड़ जाता है ।

३७५– बंधी पार तोड़नी ।

बंधी पाल को तोड़ना । किसी बने बनाये काम को बिगाड़ने पर यह कहावत कही जाती है ।

३७६-- बन्दर कई जाणे अदरक रो ह्वाद।

बन्दर क्या जाने अद्रक का स्वाद मूर्ख आदमी सुन्दर वस्तु के गुणों को नहीं समझते हैं।

३७७-- बम्बई राण्ड मावली ने कमावे रीप्यो ने रइजा पावली।

बम्बई शहर में पैसा स्वभावतः अधिक खर्च होता है इसलिए कहा जाता है कि बम्बई मावली प्रदेश की तरह है जहां रुपया कमाने पर घर पहुँचते पहुँचते चार आने ही जेब में बचते हैं।

३७८-- बरे जा ओलाओ।

जले जहां ही बुझे। किसी जगह कुछ भी होता हो उससे हमें क्या? किसी बात की परवाह न कर निश्चिन्त होने के लिए यह कहावत कही जाती है।

३७९-- बलाई रो बेच्यो घोड़ो नी बेंचाय।

गाँव बलाई जो सरकारी कर्मचारियों के घोड़ों की देख रेख करता है अगर किसी सरकारी घोड़े को बेचने की बात करे तो व्यर्थ है। उसके बेचने से घोड़ा बिकता थोड़े ही है। देखभाल करने वाला वस्तु का अधिकारी नहीं होता अतः वस्तु के बारे में उसके मालिक का निर्णय ही विचारणीय होता है

३८०-- बलाण ने भाभी कई तो चोके चढ़वा लागी।

बलायण को भाभी नाम से संबोधित किया तो तत्क्षण उसने चौके पर चढ़ने की चेष्टा की। निम्न कोटि के व्यक्ति का थोड़ासा सम्मान करने पर उसको तत्क्षण और अधिक सम्मान प्राप्त करने की धुन सवार हो जाती है। और वह

दिये हुवे सम्मान का दुरुपयोग करता है तब यह कहावत काम में लाई जाती है।

३८१-- बांधजे मकान तो राखजे वाड़ो।
करजे खेती तो राखजे गाड़ो॥

रहने के मकान के साथ घर के चौपायों को बाँधने के लिए अलग रूप से बाड़े की आवश्यकता होती है। उसी तरह कृषि कार्य में बैलगाड़ी अत्यावश्यक वस्तु है।

३८२- बाइ रा फूल बाइ रे सर।

बाई के फूल बाई के सिर पर ही चढ़ाना। जिसकी वस्तु उसी के काम आने पर यह कहावत कही जाती है।

३८३- बापरो बैर ने पाड़ोसी री जगा मौका तीज हाथ आवे।

पिता के बैरी से बदला उचित समय आने पर ही चुकाया जाता है और पड़ौसी की जगह भी मौके से ही हाथ आती है।

३८४- बाबा उठ्या ने लेखा पूरा।

साधु या फक्कड़ों के एक स्थान को छोड़ते ही उस स्थान पर उनके उधार के हिसाब-किताब भी पूरे समझे जाते हैं चाहे उनसे कुछ मिला हो या नहीं। कारण कि स्थान छोड़ते ही उनके अस्थायी जीवन में फिर कुछ मिलने की आशा नहीं रहती।

३८५- बाबा उठ्या ने बगल में हाथ।

साधुओं को या बेपरवाह आदमियों को उधार देने से

मन में शंका रहती है कि उनसे कुछ मिल सकेगा या नहीं। क्योंकि उनका निवास कहीं भी स्थाई नहीं समझा जाता।

३८६– बाबा रे छोरो वे ने गाम पे भार।

बिना काम कमाई वाले व्यक्ति के संतान होने से गांव पर उसके भरण पोषण का भार पड़ता है। कारण कि वे कुछ नहीं कमाते।

३८७– बामण थारी गाय ने नार मारे।
तो के वण ने राम मारेगा॥

ब्राह्मण तेरी गाय को शेर मारता है, तो उसको ईश्वर मारेंगे। ब्राह्मण पुरुषार्थी एवं ताकतवर नहीं समझा जाता वह अपने अपकारी से स्वय निपटने के बजाय परमात्मा से उसको मजा चखाने की बात कहा करता है।

३८८– बाल री खाल निकालणी।

प्रत्येक कार्य में सूक्ष्म से सूक्ष्म दृष्टि रखने वाले आदमी के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

३८९– बिना घरनी घर भूत का डेरा।

बिना पत्नी के घर पिशाच का निवास माना गया है। गृहस्थी-जीवन में भार्या ही तो मनुष्य की मुख्य सहयोगिनी है। कहा भी है—

भार्यावियोग: स्वजनापवाद: ऋणस्य शेष: कृपणस्य सेवा
दरिद्र काले प्रिय दर्शनं च विनाऽग्निनां पंच दहन्ति कायम्

३९०– बूढ़ो बैल बसावणो नी, मगरे खेती करणी
नी और करणी तो फेर डरनो नी।

वृद्ध बैल खरीदना अच्छा नहीं और पहाड़ी धरती में कृषि-कार्य करना भी अच्छा नहीं परन्तु ऐसा हमने निश्चित ही कर लिया है तो फिर डरने की आवश्यकता नहीं है।

३६१- बूंद री चूकी होज तो नी भराय
और जबान री छूटी हाथ नी आवे।

समय पर बूँद का महत्व नहीं समझकर गवाँ देने से उस महत्व की पूर्ति हौज भी भर दिया जाय तो नहीं होती और एक बार जिह्वा से जो भी बात निकल जाती है उसको कितना भी परिश्रम करें लौटा नहीं सकते। प्रत्येक शब्द का तौल कर उच्चारण करना चाहिए और प्रतिक्षण प्रत्येक वस्तु का महत्व समझना चाहिए एक बार एक राजा ने भरे दरबार में इत्र की बूंद जो नीचे गिरी हुई थी लगाली, उस पर सभासद हंस पड़े। दूसरे दिन राजा ने उस झेंप को मिटाने और दरियादिली दिखाने को इत्र के हौज भरवा दिए। इस पर किसी ने कहा बूंद से हुई चूक हौज से नहीं भरी जाती।

३६२- सोंचतो वाणियो ने खेलतो जुआरी कदी नी ठगाय।

व्यापार करते रहने वाला बनिया और निरन्तर खेलने वाला जुएबाज ये दोनों व्यक्ति कभी घाटे में नहीं रहते। क्योंकि इस प्रकार साधारण हानि पूरी होती रहती है।

३६३- बेटा वया वीस विसवा, खोज गया तीस विसवा।

पैदा होते समय किसी भी पुत्र में किसी भी तरह की कोई कमी न थी, भविष्य में उनसे बड़ी आशाएँ थी परन्तु बाद

में जाकर सब के सब संपूर्ण रूप से नीच साबित हुए और उन्होंने कुल को बदनाम करने में तीस बिस्वा अर्थात् सीमा से भी बढ़कर काम किया।

३६४– बैंठी गा उठावणी।

बैठी हुई गाय को उठाना। अपना कुछ भी बिगाड़ न करने वालों की शान्ति में बाधा पहुँचाना नीचता है।

३६५– बैल चाले पांच कोस, हाजी चाले दस कोस।

गाँव के बनिए चलने में बहुत तेज होते हैं इसलिए कहा जाता है कि बैल जितनी देर में पांच कोस चल सकता है उतनी ही देर में सेठजी दस कोस की दूरी तय करते हैं।

३६६– बोया पेड़ बंबूल रा आम कठे ती खाय।

बंबूल का पेड़ बोकर उससे आम प्राप्त होने की आशा करना व्यर्थ है। बुरे कार्य से अच्छा फल चाहना उचित नहीं है।

३६७– बोल बोल्या ने धन पराया।

अपनी वस्तु का विक्रय उसी समय पूर्ण होना माना जाता है जबकि एक बार हम रजामन्दी दे देते हैं मुँह से बोल निकलने के बाद चीज दूसरों की हो जाती है।

३६८– बोलूं तो बाप ने हांप खाय और नी बोलूं तो मां ने चोर लई जाय।

किसी घर में एक सुन्दरी का अपहरण करने चोर घुसे। सुन्दरी का पति जिस ओर सो रहा था भाग्यवश उस ओर एक भयंकर सर्प बैठा हुआ था। इतने में सुन्दरी के बालक की नींद उड़ गई और उसने सारी परिस्थिति को देखा तो

घबरा गया कि अगर वह पिता को आवाज देता है तो निश्चित है कि सांप उसके बाप को काट खाएगा और नहीं बोलता है तो मां को चोर ले जाते हैं। बच्चे ने स्वय पुरुषार्थ दिखाया। पहले साँप पर प्रहार कर उसका काम तमाम किया और बाद में पिता पुत्र दोनों ने चोरों को भगा दिया। बिषम परिस्थिति आने पर इस कहावत का प्रयोग होता है।

३९९– बोले नी पण बोवे।

जो बोलता नहीं, पर मन ही मन षड़यन्त्र रचता रहता है उसके लिए यह कहावत कही जाती है।

४००– बोले वण्डा बुरा वेंचाय नी बोले वण्डी जवार पड़ी रे।

अपनी चीजों के गुणों का बखान करते रहने वाले का बुरा' भी बिक जाता है परन्तु इसके विपरीत न बोलने वाले की ज्वार भी पड़ी रह जाती है।

[भ]

४०१– भगवान गंज्या ने नख नी दे।

जिसके सिर में गंज है परमात्मा उसको नाखून नहीं दे तो अच्छा। भगवान ऐसे आदमी को साधन संपन्न नहीं बनावे तो अच्छा जो कि उन साधनों का दुरुपयोग करते हैं।

४०२– भगवान थारी अवरी गति, कुण कमावे कण्डी वती।

पुंजीपति कुछ भी मेहनत नहीं करता है फिर भी उसका पैसा निरन्तर बढ़ता ही रहता है। इसलिए कहा जाता है कि

भगवान के घर अन्धेर है कि मेहनत कौन करता है और फल कौन पाता है। प्रायः इस कहावत का प्रयोग उस जगह भी होता है जहां कि एक कन्जूस आदमी कमा कमा कर मर जाता है और दूसरा उस कमाई पर मौज उड़ाता है।

४०३– भगवान दे तो छप्पर फाड़ी ने दे।

कहा जाता है कि किसी ओर से कोई आशा न होने पर भी परमात्मा को जो देना होता है वह देता ही है।

४०४– भज्या पेली तेल चाटे।

सब्र नहीं रखने वाला व्यक्ति पकोड़े के तैयार होने के पहले ही तेल चाटने की इच्छा करता है। कार्य प्रारम्भ होने के पहले ही फलके लिये आतुर होने वाले के लिये इस कहावत का प्रयोग होता है।

४०५– भजो पूछे भाभा ने, जो मले जो खावा ने।

भजा (आदमी का नाम) भाभा से पूछता है कि अपने को जिस किसी से पाला पड़ता है वही अपना कस निकालने में ही रहता है। जब निस्वार्थ भाव से काम करने वाला कोई भी संबंधी या प्रेमी नहीं मिलता तब यह कहावत कही जाती है।

४०६– भण्या पण गुण्या नी।

पुस्तकीय ज्ञान तो प्राप्त कर लिया पर व्यवहार कुशल न हो सके। कहा भी हैः—

सर्व शास्त्रेण संपन्ना, लोकाचार विवर्जिताः।
तेऽपिप्रहास्यतां यानि, यथा ते मूर्खपंडिताः।

४०७– भय बिना प्रीत नी वे।

बिना भय के कोई किसी से प्रीत नहीं करता।

जैसे 'भय बिनु प्रीति न होई गुंसाई'—तुलसी—

४०८— भर्‌या में सब भरे।

पूर्णसम्पन्न को पूर्ण करने की इच्छा सब ही रखते हैं पर रिक्त को पूर्ण करने कोई तैयार नहीं होता।

४०९— भँवर जाल में पड़नो।

भँवर के जाल के फँसना। घोर आपत्ति में फँस जाने पर इसका प्रयोग होता है।

४१०— भाई हरीखो सेण नी ने भाई हरीखो दुश्मण नी।

अपनी बेबसी की हालत में और किसी को नहीं तो भाई को तो तरस आ जाता है परन्तु वही भाई पैतृक संपति के बंट-वारे में दुश्मन से भी बढ़कर लोहा लेता है। अतः कहा जाता है कि भाई के समान न अपना कोई हितैषी हो सकता है और न भाई के समान कोई दुश्मन ही हो सकता है।

४११— भाग्या छुटे के भुगत्या।

भागने से छुटकारा पाते हैं या भुगतने से। विषम परि-स्थिति में छुटकारा पलायन से नहीं होता है परन्तु सामना करने से होता है। विपत्ति का सामना करने से उसका सदा के लिए फैसला हो जाता है।

४१२— भांग पीणी होरी है पण लेरां लेणी दोरी है।

भंग पी लेना तो आसान है परन्तु उसके नशे में होश संभाले रहना बड़ा कठिन है। किसी अनुचित कार्य को करना तो सरल है परन्तु उसके परिणाम को भोगना अत्यन्त कठिन है।

४१३– भाग में कण्डी भागीदारी ।

भाग्य में कौन हिस्सेदार ? अर्थात् कोई नहीं ।

४१४– भागवानां रे आकाश में हल चाले है ।

निरन्तर पृथ्वी का उदर फाड़ने वाला किसान पूंजी-पतियों की तुलना में धनोपार्जन नहीं कर पाता अतः क ा जाता है कि पूंजीपतियों के आकाश में हल चलते हैं ।

४१५– भागवाना रे भूत कमावे, अण कमायो आवे

पूंजीपतियों के धन की वृद्धि बिना परिश्रम के शोषण द्वारा निरन्तर होती रहती है अतः कहा जाता है कि उनके घर शैतान कमाता है और बिना कमाया (जिस पैसे पर न्याय से उनका अधिकार नहीं है) धन उनको प्राप्त होता रहता है ।

४१६–भागी तोइ भदेर है ने टूटी तोइ टाटी है ।

जागीरदारी शान नष्ट हो जाने पर भदेसर का स्थानीय महत्व नष्ट नहीं हुआ है । इसी प्रकार टाटी के पुरानी हो जाने पर या कुछ बिखर जाने पर उसका उपयोग और महत्व कम नहीं होता ।

४१७– भाट, जाट, तेली, बोरा, पड़े जूता करे नोरा ।

भाट, जाट, तेली, बोहरे आदि जाति की ऐसी प्रकृति होती है कि ये लोग सीधी तरह से नहीं मानते । इनके साथ सख्ती से बर्ताव होने पर फिर ये लोग खुशामद करने लगते हैं

४१८–भाजीरो जो ताजी रो, ने लूणी रो जो पूणी रो ।

गाँव वाले शाक भाजी से ही संतुष्ट रहते हैं उन्हें मक्खन आदि स्वादिष्ट पदार्थों की परवाह नहीं रहती । अतः वे लोग कहा करते हैं कि शाक भाजी से पोषित मजदूर स्वस्थ रहता

है और मक्खन से पोषित बड़े घर का व्यक्ति रूई की पूणी के समान दुबला और श्वेत होता है।

४१९– भिड्या नी, भागी निकल्या।

भिड़े नहीं और भाग निकले। किसी नीच से पाला पड़ जाने पर उससे सामना न करके उसके चंगुल से भाग निकलने के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

४२०– भींज्यो जो निचोवणो ज पड़ेगा।

कोई बात हम नहीं चाहते परन्तु उसके हो जाने पर उसके निराकरण की आवश्यकता के लिए इस कहावत का प्रयोग करते हुए कहते हैं जो भींग गया है उसे निचोना ही पड़ेगा।

४२१– भींज्यो थको कई भींजे और खोया रो कई खोवाय।

जो मनुष्य भींग चुका है फिर वह पानी से क्यों डरे? जिस व्यक्ति के पास से एक दफा सब कुछ खो गया है दुबारा उसके पास खोने को बच ही क्या रहता है। जो आदमी एक बार विपत्ति से बरबाद हो जाता है वह विपत्ति से नहीं डरता है।

४२२– भूए पड़ी तलवार।

पृथ्वी पर पड़ी तलवार जो उठाए उसी की। केवल उसको चलाने की क्षमता होनी चाहिए। संसार में पुरुषार्थ से सब संभव है।

४२३– भूख नी देखे झूठो भात, नींद नी देखे टूटो खाट, और इश्क नी देखे जात कुजात।

क्षुधा तृप्ति के लिए समय पड़ने पर लोगों का झूठा भात भी खाना पड़ता है, नींद समय पड़ने पर टूटे खाट पर आ जाती है और प्रेम में जाति कुजाति का ध्यान नहीं रखा जाता।

४२४– भूख नी देखे भाजी, ने नींद नी देखे बछावणों

करारी भूख शाक वगैरह की परवाह न करके रूखा सूखा भोजन ग्रहण कर लेती है। उसी तरह नींद बिना बिछौने ही आदमी को सोने के लिए विवश कर देती है।

४२५– भूखा हुवे ने धाप्या उठे है भागवान।

पूंजीपतियों को पैसे के मद का नशा रहता है अतः कहा जाता है कि वे बिना खाए पीए भी निद्रा ले सकते हैं और निद्रा त्याग करने पर भी ऐसा मालूम होता है कि उनका पेट भरा हुआ है। कहने का तात्पर्य है कि पैसे वाले को प्रतिक्षण तृप्ति रहती है। दूसरी बात यह है कि गरीब आदमी तो मेहनत करता है तभी पैसा पाता है और पूंजीपति सोते रहते हैं तो भी उनको आमदनी होती रहती है।

४२६– भूत रो ठिकाणों आमली में।

इमली के पेड़ के लिए कहा जाता है कि उसके तले प्रायः भूत, प्रेत का निवास होता है। जैसे एक मित्र के यहां दूसरा मित्र जमा ही रहता है और जब दूसरे मित्र के घर पर कोई उसे ढूंढने को जाता है तब उसके घर वाले कहते हैं कि उसे यहां क्या ढूंढते हो वह तो उसके मित्र के घर होगा।

४२७– भूल चूक लेणी देणी ।

आपसी लेनदेन में अगर भूल रह जाती है तो फिर मालूम होने पर लेना होतो ले लिया जाता है और देना हो तो दे भी दिया जाता है। लेन देन के हिसाब में आपसी विश्वास के लिए इसका प्रयोग होता है।

४२८– भूली गया राग रंग और भूली गया छेकड़ी।
तीन बात याद री लूण, तेल, लकड़ी ॥

जब बिना परिश्रम सीधी कमाई हाथ पड़ती है तो सब ऐश असरत दिखाई पड़ते हैं जब रोजी कमाने में परिश्रम उठाना पड़ता है तब बड़ी कठिन स्थिति उपस्थित होती है। अतः उस समय राग रंग और स्वाभिमान सब को तिलाञ्जलि देकर गृहस्थी का काम चलाने के लिए नमक, तेल और लकड़ी की चिंता आ घेरती है।

४२९– भेगी भेगी भागीरथी।

छोटे मोटे सब ही नदी नालों के सम्मिलित होने पर भ गंगा नदी का नाम भागीरथी ही कहलाता है जिससे उन नदी नालों का भी महत्व बढ़ जाता है। एक बड़े काम के साथी छोटे मोटे अन्य कामों को भी उसी के साथ निपटा लेने के महत्व को प्रकट करने हेतु इस कहावत का प्रयोग होता है।

४३०– भेड़ वाली चाल।

कोई एक आदमी भला बुरा कार्य करे और दूसरे बिना सोचे विचारे उसके साथ हो जावें तो यह कहावत कही जाती है।

४३१– भेरा बइ ने कवा गणना।

शामिल बैठकर भोजन करना और फिर यह हिसाब रखना कि किसने कितने निवाले खाये। साथ में रहकर 'दूज भाव' रखने के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

३२– भेरूजी तो भलो माने, ने भोपा खावे खीर।

इस विचार से भैरूंजी (ग्राम देवता) के भैंट चढ़ाई जाती है कि भैरूंजी रोगादि नष्ट निवारण करेंगे। उस भैंट का उपभोग भैरूंजी का सेवक (भोपा) करता है अतः उस भोपे की मौज के लिए कहा जाता है कि भैरूंजी तो केवल भला ही मान कर सब्र करते हैं परन्तु भोपा भैरूंजी के ढोंग के पीछे खीर उड़ाता है।

३३– भेला री हान्डी चोरा पै फूटे।

साझे की हन्डिया चौराहे पर फूटती है। साझेदारों की अपनी अपनी अटल मांग के कारण अन्त में वस्तु नाश को प्राप्त होती है और साझेदारों में से कोई उसका उपयोग नहीं कर पाता।

३ – भैंस रे आगे भागवत वांचणी।

भैंस को भागवत पुराण श्रवण कराना। मूर्ख के आगे ज्ञान का क्या उपयोग!

३५– भोजन ने भजन परदा रा।

भोजन और भजन हमेशा पर्दे में अर्थात् बिना दिखावे के करना चाहिए।

[म]

४३६- मक्की रो रोटो हाथ माते पोवे ।

निकृष्ट अन्न (मक्की, बाजरा आदि) की रोटी हमेशा हाथों पर ही पोई जाती है। बेलन तथा चगरोटे का उपयोग उनके लिए हो ही नहीं सकता। अतः उनमें समय भी ज्यादा खर्च होता है और परिश्रम भी विशेष करना पड़ता है मामूली आदमी की जब ज्यादा खुशामद करनी पड़ती है तो यह कहावत कही जाती है।

४३७- मंगता आगे मंगतो मांगे [illegible] अकल कम ।

भिक्षुक के आगे यदि कोई भिक्षुक बनकर याचना करे तो समझना चाहिए कि वह कम बुद्धि वाला [illegible] है।

४३८- मजाक तो मोची करे जो सीप्या [illegible] रीप्या लेवे ने जूता दे ।

गंभीरता के साथ मजाक की सी बात करने पर श्रोता यदि कहे कि यह मजाक तो नहीं कर रहे हो? तो कहा जाता है कि मजाक तो मोची किया करते हैं जो रो कड़ रुपया लेकर जूते देते हैं। मेरी बात तो सत्य है।

४३९- मधु कहे मालती, वाएया वद कीजिए ।
जो गुड़ से मर जाय ताको विष क्यों दीजिए ॥

मधु मालती को कहता है कि बनिए की सी बुद्धि के उपयोग द्वारा दूसरों को प्रेम मय ढ़ंग से चपेट में लाकर अपना स्वार्थ पूरा करना चाहिए। जब कि गुड़ द्वारा ही हमारी शिकार को फांसा जा सकता है तो उसे विष क्यों देना चाहिए ?

४४०– मनकी ने हपना में ऊंदराज नजर आवे ।

बिल्ली को स्वप्न में चूहे ही दिखाई देते हैं । किसी वस्तु-विशेष से विशेष प्रयोजन होने पर उसका मन चेतना और अचेतना में उसी वस्तु पर लगा रहता है ।

४४१– मनकी रे टोकर कुण बांधे ।

कुछ चुहों ने पंचायत कर फैसला किया कि बिल्ली के गले में घंटी बांध देनी चाहिए ताकि उसके आगमन की सूचना उन्हें मिल जाय और वे जान बचाकर भाग खड़े हों। पर 'घंटी कौन बांधेगा ?' प्रश्न उठाया गया तो एक एक कर सब चलते बने और सारी बात मिट्टी में मिल गई । अत्यन्त कठिन कार्य के लिये कोई तैयार नहीं होता।

४४२– मन केवे मौज करूँ, करम केवे करमदा वींणवा जाऊँ ।

मन तो मौज करने के लिए कहता है और इसके विपरीत कर्तव्य कहता है कि करौंदे बीनने जाओ ताकि कुछ प्राप्त हो। मन तो ऐश्वर्योपभोग की ऊँची कल्पना करता है परन्तु जीवन भाग्य के इशारे पर चलता है और विवश होकर मजदूरी मेहनत करनी पड़ती है ।

४४३– मनख ती मनख मली जाय पर कूड़ा ती कूड़ो नी मले ।

मनुष्य मनुष्य का मेल हो जाना तो संभव है परन्तु कुए कुए का मेल होना संभव नहीं। तात्पर्य यह है कि मनमुटाव के मिट जाने पर दो हृदयों का मिलना हो सकता है परन्तु

४४४– मन रा लाड् फीका क्यूँ ।

मन के मोदक कभी कम मीठे नहीं होते। कल्पनात्मक वस्तुओं में कमी नहीं होती

४४५– मने दूजी ठोर नी—थारे कोई ओर नी।

जब दो आदमी लड़ते भी जाते हैं और फिर एक को दूसरे के बिना रहा भी नहीं जाता है तब कहा जाता है कि मेरे लिए दूसरा ठिकाना नहीं है और तुझे दूसरा साथी नहीं है।

४४६– मर्‌या ने कई मारणो ।

मरे हुए को क्या मारना। जो पहले ही मरणासन्न है उसको मारने से क्या लाभ ? जो पहले ही अत्यन्त दुखी है उनको अधिक दुख पहुँचाने में कोई समझदारी नहीं है

४४७– मरयां पेलां कबर खोदणी।

मरने से पहले ही कब्र खोदना। मृत्यु से पहले ही मृत्यु की चिंता करके उसके लिए साधन प्रस्तुत कर रखने वाले के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है। आपत्ति नहीं आवे उसके पहले से ही घबराने वाले की स्थिति का दिग्दर्शन इसमें कराया गया है।

४४८– मरता मरता मेवाड़ हामो मूण्डो।

मेवाडी वीरों के लिए प्रसिद्ध है कि रण-भूमि में प्राण देते समय भी उनका मुँह जननी जन्मभूमि मेवाड़ की ओर ही रहता है। कोई अपने प्रण पर या हठ पर अड़ा रहता है तब इस कहावत का प्रयोग होता है।

४४६- मरतो आकड़ो पीवे ।

मरणासन्न आक भी पीने को तैयार होता है। यद्यपि आक जहर होता है और मरणासन्न को कहा जाय कि आक पान से तू जी उठेगा तो निश्चय है वह इसके लिए भी प्रस्तुत हो जायगा। जब आदमी अत्यन्त संकटापन्न अवस्था में गिर जाता है तो फिर वह बचाव के लिये सब कुछ करने को तैयार हो जाता है।

४५०- मरद री गरद वे रेणो, हींजड़ा री हीम नी रेणों।

मर्द पुरुषों की चरणों की धूलि बनकर रहना उत्तम है परन्तु नपुंसक या कापुरुष की सीमा में भी रहना उचित नहीं।

४५१- मरदां रा दीवाला मसाणा में।

जो बहादुर आदमी होते हैं वे दुनियां के नफे नुकसान से डर कर हिम्मत नहीं छोड़ते अपितु निरन्तर लाभ हानि की कुछ भी परवाह न कर उन्नति की ओर अग्रसर होते हैं। इस-लिए वो कहते हैं मर्द आदमी के दीवाले श्मशान में जाकर भले ही निकले, जीते जी उनका काम कभी नष्ट नहीं होता है।

४५२- मरीग्या ने मारीग्या।

मृत्यु को प्राप्त होकर स्वयं तो संसार से बिदा हुआ परन्तु अपने आश्रय पर जीने वाले अन्य प्राणियों का कोई प्रबन्ध न करके उनको भी जीवितावस्था में ही मृतवत् बना गया।

४५३- मां ए मां मामा रे जाऊँ, जानी बेटा भाई तो मॉराज है।

माता के कठोर नियन्त्रण से घबरा कर पुत्र ने माता के सन्मुख प्रस्ताव रखा कि वह मामा के यहां जाना चाहता है। इस पर मां ने कहा कि बेटा जा सकते हो पर याद रखो भाई तो मेरा ही है। एक आपत्ति को छोड़ कर दूसरी ग्रहण करने वालों के लिये यह कहावत कही जाती है

४५४- घर में तो होली बले ने बारने दीवाली है।

घर के अन्दर कष्ट उठाकर भी बाहरी आडम्बर बनाए रखने वाले के लिए अथवा मानसिक दुःख को दबाकर बाहरी रागरंग से उसको प्रकट नहीं होने देने की चेष्टा करने वाले के लिए कहा जाता है कि भीतर तो होलिका दहन हो रहा है और बाहर दीपावली का प्रकाश।

४५५- मांगी खाय ऊ भूखो नी मरे, नातो करे वण्डो खोज नी जाय।

कहा जाता है कि भिक्षावृत्ति से उदर पोषण करने वाला कभी भूखों नहीं मरता है और नाता करने वाले का कुल कभी नाश को प्राप्त नहीं होता है।

४५६- मां न मां रो जायो देश ही परायो।

परदेश में न तो मां ही होता है और न मां जाया भाई ही होता है। वहां अपने साथ आत्मीयता रखने वाला कोई नहीं होता इसलिए कहा जाता है कि वह देश दूसरों का है।

४५७- मां राण्ड रो तो पतोड़ नी ने मासी ने रोवा जाय।

मौसी का रिश्ता मां के आधार पर होता है अतः बिना मां की उत्पत्ति जाने मौसी के लिए संवेदना प्रकट करना अज्ञानता से बढ़कर कुछ नहीं है। बिना मूल को सही जाने उस पर आधारित वस्तु के लिए क्रियाशील होना उचित नहीं है।

४५८– माण्डो के के माण्डी देख, घर के क्रे पाड़ी देख।

बच्चे व बच्ची की शादी करने में और घर की मरम्मत कराने में हर तरह से प्रबन्ध की आवश्यकता में कठिनाई उठानी पड़ती है और खर्च का बोझा भी आ पड़ता है। अतः 'ब्याह कहता है कि मुझे कर देख और घर कहता है कि मुझे गिरा कर फिर से चुन कर देख' मालूम पड़ जाएगा कि ये काम उतने सरल नहीं हैं जैसा सोच रखा है। आशय यह है कि इन दोनों कार्यों में निर्धारित रकम से ज्यादा ही व्यय हो जाता है।

४५९– माणी मार रो खावा वारो।

बहुत पीटने पर भी जब कुछ असर नहीं होता तो कहा जाता है कि यह माणी (१२ मन) भर मार खाने वाला है अर्थात् ढीठ है।

४६०– माणी भैंस रे भी कदी पाड़ी वेगा।

दूसरों के प्रभु की दया से आनन्द ही आनन्द है परन्तु खुद के नहीं होने से आशान्वित होकर कहा करते हैं कि हमारी भैंस के पाड़े ही पाड़े हुए हैं कभी तो पाड़ी होगी। अर्थात् हमारे दिन भी जरूर फिरेंगे।

४६१– माथा पे तो मरी ने मने इ चौका में आवा दीज्यो।

भीलनी ने सिर पर तो लकड़ी का गट्ठा ले रखा है और कहती है कि मुझे भी चौके पर आने दें। एक अयोग्य व्यक्ति योग्यता वाले पद की या वस्तु की चाहना करता है तब इस कहावत का प्रयोग होता है।

४६२– मानतो त्रे तो मान, नी तो ई घोड़ा ने ई चौगान।

समझौते की भरसक चेष्टा करने पर भी अगर कोई नहीं मानता तो उसको इच्छानुकूल छोड़ दिया जाता है और कहा जाता है कि तेरी इच्छा हो सो कर। यह घोड़ा और यह चौगान जी भर कर दौड़ लगा।

४६३– मान नी मान मूँ थारो मेमान।

जबरदस्ती आकर बिना ही जान पहचान के कोई मेहमान बन बैठता है अथवा काम करवाता है तो उसके लिए यह कहावत कही जाती है।

४६४– मानो तो देव नी मानो तो भाटो।

श्रद्धा होने पर ही वस्तु विशेष का महत्व मनुष्य के हृदय में जम पाता है अतः देवमूर्ति के लिए कहा जाता है कि श्रद्धा होने पर उसको प्रत्यक्ष देवता के रूप में स्वीकार किया जाता है। अन्यथा केवल पत्थर है कहकर तिरस्कार किया जाता है– जैसे:– 'श्रद्धावान् लाभते ज्ञानं संशयात्मा विनश्यति।'

४६५– मानो तो मानो नी तो आपाणी राधा ने याद करो।

गोपियाँ श्रीकृष्ण को कहा करती थी कि हमारी बात मानो तो आपकी इच्छा और नहीं मानो तो अपनी प्रियतमा राधा का नाम रटते रहो। ठीक इसी तरह लोग इस कहावत को सुना कर अपनी बात स्वीकार कराने के लिए कहा करते हैं।

४६६– मामा रे घरे मांडो ने मां परोसवा वाली।

मामा के घर विवाह है और परोसने वाली अपनी ही माता है। सब अपना ही अपना माल है फिर उसके उपभोग में अड़चन भी कोई नहीं, क्यों न उसका डटकर उपभोग किया जाय?

४६७– मार गया गप्प, बारे हाथ री काकड़ी ने तेरे हाथ रो बीज

गप्पें मारने वाले निराधार और ऐसी ऊटपटांग बातें बना जाया करते हैं कि जिनका कोई महत्व नहीं होता। वे ककड़ी बारह हाथ की बताएँगे और उसके बीज को तेरह हाथ का।

४६८– मारा बाप ने आटो मलो मती, नीतो माने छाणा वीणवा जाणो पड़ेगा।

भिक्षावृत्ति से उदर पोषण करने वाले पिता का महान् आलसी पुत्र कहता है कि पिताजी को आटा नहीं मिले तो अच्छा नहीं तो मुझे कंडे बीनने जाना पड़ेगा। आलसियों को भूखों भी मरना पड़े और घर में हानि भी हो तो स्वीकार है।

४६९– मारी कुटी ने मागी जाणो, खाइ पी ने हुइ जाणो।

मार पीट कर भग जाना और खा पीकर सो जाना अच्छा है। अनैतिक काम समाज से बचाव चाहता है और पेट भर जाने बाद विश्राम की आवश्यकता होती है।

४७०– मारो नाक कटे तो कटे पर थारा तो हुकन बगड़े।

काम के लिए जाते समय नकटे का सामने मिल जाना अपशकुन होता है। इसलिए वह कहता है मेरा नाक भले ही कट जाय पर तेरे शकुन बिगड़ जाने चाहिए। अपने द्रोही की नगण्य हानि के लिए अपनी महान हानि कर बैठने वाले के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

४७१– माल उड़े माराज रा ने मिरजा खेले फाग।

राज्य कर्मचारी मिरज़ा राज्य के धन का उपयोग अपने आनन्द के लिए करता है। कर्तव्य को भूल कर राज्य के पैसे का अपने लिए उपयोग करने वाले राज-कर्मचारियों के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

४७२– माला पेरी मार में, तलक कीदो खार में, जोगी वया उबतार में।

जीवन में संघर्ष से घबराकर संसार त्यागने की सोची, उसने मार अर्थात् कष्टों के कारण माला पहिनी और 'खार' ईर्षा-द्वेष में तिलक छापे लगाकर जल्दी जल्दी में साधुवेष बना लिया। परिस्थिति से घबरा कर तत्क्षण दैन्य स्थिति बना लेने वाले तथा कर्म ज्ञान रहित ढोंगी साधु के लिए इसका प्रयोग होता है।

४७३– मालिक मेरबान तो गधा पेलवान ।

मालिक के मेहरबान होने पर गधा भी पहलवानी दिखाता है। अपने मालिक की मेहरबानी होने पर बढ़ २ कर काम करने वालों तथा बढ़ २ कर हेकड़ी जताने वालों के लिये इस कहावत का प्रयोग होता है।

४७४– माह उबारे ने फागण बाले ।

ऐसा कहा जाता है कि माघ मास की ठंड मे तो फसलें दाह (पाला) लगने से बच जाया करती है परन्तु फाल्गुन की सर्दी कभी कभी दाह लगा जाती है।

४७५– मिन्की रा मैलती काम पड़े तो छाजा पर जाइ बैठे ।

बिल्ली की विष्ठा की जरूरत पड़े तो बिल्ली छत पर जाकर बैठे। नीच व्यक्ती की निकृष्ट वस्तु से भी काम पड़ जाय तो वह इतना गर्व दिखाता है कि वह इधर उधर फिरता रहता है। और काम वालों को उसकी खुशामद करने के लिये पीछे २ फिराता है तब इस कहावत का प्रयोग होता है।

४७६– मियां तो मियां पर पिंजाराइ मियां।

रोबदोब से रहने वाला खानदानी मुसलमान अपने आप को मियाजी कहे तो ठीक भी है परन्तु पिंजारा भी अपने को मिया कहे तो यह बात उसके वृथा स्वाभिमान से बढ़कर कुछ नहीं है। सामान्य स्थिति का व्यक्ति जब अपने आपको ऊँची थिति का व्यक्ति बताता है तब निराकरण स्वरूप इस कहा-वत का प्रयोग होना है।

४७७- मियांजी री छाती फाटे ने, बीबीजी शिकार बांटे ।

बीबी उदार होकर गोश्त बाँटती है परन्तु उसकी इस उदारता पर पतिदेव की छाती फटी जाती है। पति के मूँजी और पत्नी के उदार भावों के संघर्षों मे उत्पन्न परिस्थिति के लिये इस कहावत का प्रयोग होता है। या जिस पति की आमदनी कम हो और उस की पत्नी विशेष खर्चीली हो उस स्थिति का दिग्दर्शन कराने को भी इस कहावत का प्रयोग होता है।

४७८- मीणा, मोगा ने बामण जोधाणा ।
अणा ने घड़ी ने राम पछताणा ॥

मीणा मोगा और जोधाणा ब्राह्मण इन तीनों के लिये कहना है कि इनका निर्माण करके भगवान को भी पश्चाताप हुआ कारण कि लोक हित में इनका सहयोग नहीं माना जाता।

४७९- मुर्गी की जान गई और मियांजी ने मजो नी आयो ।

पुलाव पकाने के लिये मुर्गी हलाल कर दी गई परन्तु मियाँजी को खाने का मजा नहीं आया। उपयोग की वस्तु खर्च कर देने पर भी उपयोग से तृप्ति नहीं होती है तो इस कहावत का प्रयोग होता है।

४८०- मुँडा आगे हांजी हांजी पीठ पाछे काजी काजी ।

काजीजी के डर के मारे सामने तो कुछ नहीं कह सकता अपितु जी हाँ जी हाँ करता है परन्तु पीठ पीछे बुराई करता

कि वह तो ऐसा काजी,है वैसा है आदि । पीठ पीछे बुराई करने वाले डरपोक व्यक्तियों के लिये यह कहावत कही जाती है।

४८१-- मुद्दई सुस्त ने गवाह चुस्त ।

वादी तो अपने मुकद्दमे की पेरवी में सुस्त है परन्तु गवाह हर तरह से चुस्त है। प्रधान व्यक्ति से जब दूसरा व्यक्ति बढ़कर काम करता है तो इस कहावत का प्रयोग होता है।

४८२-- मूंग री वीणनो ने लूण तमाखू भेली ।

मजदूरनी से कहा कि मूंग बिनना है तो उसने मजदूरी की पूछी। इस पर उसे बताया गया कि मूंग में नमक और तम्बाकू शामिल है सो इन चीजों को बिनाई पेटे ले लेना। देना तो कुछ नहीं केवल मामूली कीमत की कचरे से प्राप्त देकर काम निकालने पर यह कहावत कही जाती है।

४८३- मूंछ पर नीम्बू ठेरावणो ।

अपनी शक्ति पर गर्व करके जिद्द पर अड़जाने वाले पर इस कहावत का प्रयोग होता है

४८४- मूंछ री पूंछ पर उतरी ।

मूंछ बचगई और पूंछ उतर गई । भारी नुक्सान की सम्भावना पर हल्का सा नुक्सान होजाय तो यह कह कर तसल्ली धारण करना कि भगवान ने भारी नुकसान से बचा लिया ।

४८५- मूंछ रो बाल वेई जाणो ।

कोई व्यक्ति जब किसी का अतीव कृपा पात्र होजाता

है तो उसके लिए कहा जाता है कि यह तो फलाँ की मूँछ का बाल अर्थात् कृपापात्र है।

४८६– मूं जाऊँ डाल डाल ने थूं फरे पाने पाने।

मैं तो डाली डाली पर फिरता हूँ कि तुझे पकड़ पाऊँ पर तू तो पत्ते पत्ते पर फिरता है जहां आना मेरे लिए कठिन है। एक ही क्षेत्र में जब कोई दूसरे की बराबरी में किसी भी तरह नहीं पहुँच पाता है तो यह कहावत कही जाती है।

४८७– मूण्डो देख्या री प्रीत है।

प्रेम का ढोंग केवल मुँह देखने के लिए ही है कुछ लाभ पहुँचाने के लिए नहीं। किसी भी आदमी का लिहाज तभी तक रहता है, जब तक वो सामने रहता है। बाद में कोई किसी की उतनी परवाह नहीं करता है। इसलिए 'मुँह देखे की प्रीत' 'दो आंखों की शर्म' यह कहावत इसी बात की ओर संकेत करती है।

४८८– मूत हाइ मान, थान हाई शान।

वीर्य के अनुसार स्वाभिमान और स्तन के अनुसार शान। कहा जाता है कि संतान में स्वाभिमान पिता की और व्यवहार-कुशलता माता की देन होती है।

४८६– मूल ती व्याज वालो।

मूल से व्याज प्यारा होता है। पुत्र से भी बढ़कर पौत्र और प्रपौत्र को दादा दादी प्यार करते हैं तब इस कहावत का प्रयोग होता है।

४६०– मोटा हाण्डा री घरचण ही भली।

जिस तरह बड़े बर्तन की खुर्चन से ही कइयों का उदर

पोषण हो जाता है। इसी प्रकार कोई परिवार जो कि पहले उन्नत था अवनति की हालत में भी बहुतों को लाभ पहुँचा सकता है।

४६१– मोर आपणा पग देखी ने रोवे।

मोर अपने पैर देख कर रोता है। मोर का सारा शरीर बहुत सुन्दर होता है परन्तु उसके पैर उसके शरीर के मुकाबले में बदसूरत होते हैं परन्तु उसको तो अपने पैर ही नजर आते हैं किसी को अपनी श्रेष्ठता विदित नहीं होती है केवल कमी ही दीखती है और जब वह इस पर दुखी होता है तो इस कहावत का प्रयोग होता है।

४६२– मोरां पाछे मोकलोइ मेल।

पीठ पर काफी मैल जम जाता है। जहां अपनी दृष्टि नहीं पड़ती वहां गड़बड़ हुआ ही करती है।

[र]

४६३– रजक ने मौत कणडे हाथ में।

रोजी और मौत किसी के हाथ में नहीं है। भाग्यानुसार ही दोनों वस्तुएँ प्राप्त हुआ करती हैं।

४६४– रस रे लारे फजीतो।

रसास्वाद के पीछे बदनामी। अपने लालच के पीछे अपनी बदनामी होती है।

४६५– रांड री कई रांड वे।

विधवा से क्या विधवा हो? जब आदमी अत्यन्त निराशावस्था में पहुँच जाता है तब वह प्रत्येक प्रकार की हानि सहन करने को तैयार हो जाता है।

४९६– रांड तो रंडापो काटे पर रंडवा नी काटवा दे।

विधवा तो वैधव्य भोगने के लिए तैयार रहती है परन्तु रंडवे (कामीजन) उसके ऐसा करने में रोड़ा अटकाते हैं और प्रलोभन आदि देकर अपने साथ उसे भी पथभ्रष्ट करने की चेष्टा करते हैं।

४९७– रांडी पुतर शाहजादा।

बिना नियन्त्रण का बालक उच्छृंखल हो जाता है और विधवा के पुत्र पर तो बिना पिता के कौन नियन्त्रण रखे? विधवा का पुत्र शाहजादे की तरह फैल फितूर करने वाला समझा जाता है।

४९८– रांधवा वारी एक दाण चाखेज।

भोजन पकाने वाली एक बार तो उसे चख ही लेती है। जिससे काम कराया जावेगा वह उस काम से कुछ न कुछ अतिरिक्त लाभ अवश्य उठावेगा।

४९९– रांडोरांड रो रेंट्यो माटी।

विधवा स्त्रियां सूत कात कर जीविकोपार्जन करने में समर्थ रही हैं अतः कहा जाता है कि विधवा स्त्री का पति चरखा है जो उसका पालन करता है।

५००– रांडीरांड रे हवागण पगे लागी तो बेन थूँ भी मारे हरीखी वीजे।

विधवा के सुहागिन चरण स्पर्श करे तो विधवा सुहागिन को यह कहे कि 'हे बहिन! तू भी मेरे समान ही हो जाना।' किसी बात की कमी भुगतने वाला ईर्ष्यावश अपने प्रति सम्मान प्रकट करने वाले उस व्यक्ति के लिए जिसके

जीवन में उसकी तरह कमी नहीं है, अपने जैसा हो जाने की कामना करता है तब यह कहावत कही जाती है।

५०१– रांडी रे घरे भींडी।

गरीब विधवा के घर भींडी (मुड़े हुए छोटे सींग वाली सीधी गाय) होना; कठिनाई में सुविधा मिल जाती है तो यह कहावत कही जाती है।

५०२– रांडी रोवे, भीन्डी रोवे, सात बेटा री मां भी घड़ा फाड़ी ने रोवे।

विधवा स्त्री रोती है, भीन्डी रोती है और सात बेटों की माता भी गला फाड़ फाड़ कर रोती है। जब असाधारण परिस्थिति उत्पन्न होने पर गरीब लोग घबरा जाते हैं परन्तु जहां साधन संपन्न लोग भी घबराने का दिखावा करते हैं उस परिस्थिति का दिग्दर्शन कराने में उपरोक्त कहावत प्रयोग में लाई जाती है।

५०३– राई रो पर्वत।

राई का पर्वत। बात का बतंगड़ बना देना। जैसे– To make mountain out of a mole hill.

५०४– राज तो पोपाबाई रो पर लेखो राई राई रो।

राज्य पोपाबाई का होने पर भी प्रत्येक छोटी वस्तु का भी हिसाब पूछा जाता है। गड़बड़ी होने पर भी सजगता होने पर यह कहावत कही जाती है।

५०५– राजा बोले ने ठाड़ी आवे।

राजा की बात सुनने वाले को राजा के शब्दोच्चारण के पूर्व कंपन हो जाता है कारण कि वह न जाने क्या हुक्म दे दे इस बात का भय लगा रहता है।

५०६– राजा माथा रो धणी है पर नाक रो धणी नी है।

राजा अपने राज्य में रहने वाले के सिर का मालिक हो सकता है परन्तु नाक का मालिक नहीं है। अप्रसन्न होकर वह सिर भले ही कटवा सकता है परन्तु इज्जत भ्रष्ट नहीं कर सकता।

५०७– राजा माने जो राणी, छाणां वीणती आणी।

चाहे कण्डे ही क्यों न बिनती रही हो परन्तु राजा द्वारा स्वीकार की जाने पर तो वह राणी ही कहलाएगी।

५०८– राजा रे कान वे, शान नी वे।

राजा जैसी सुनता है वैसी कार्यवाही करता है परन्तु उसमें उतनी स्वतन्त्र बुद्धि नहीं होती कि उसने जो कुछ सुना है वह सही है या झूँठ। उसकी जांच कर कार्यवाही करे। राजाओं के पास भिड़ाने वाले चापलूसों की बन आती है और राजा भी उनके कहने के अनुसार खराखोटा किया करता है। उसी बात को हृदय में रखकर इस कहावत का प्रयोग होता है।

४०६– राम राखे वणाने कोई नी चाखे।

जिसको ईश्वर बचाना चाहता है उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

५१०– रांदी हांडी काल पटकणो।

घर में कोई क्लेशी व्यक्ति होता है तो उसके क्लेश कर बैठने से सब व्यक्तियों का तैयार भोजन जहर–तुल्य हो जाता है। अतः उस व्यक्ति की प्रकृति के लिए कहा जाता है कि यह तैयार भोजन में काल पटक देने वाला है।

५११– रावड़ी में राम वे तो राते क्यूँ खवाय ।

रावड़ी बहुत जल्दी पच जाने वाली मानी जाती है। इसलिए वे कहा करते हैं कि रावड़ी में कुछ तत्व होता तो हमें शाम को पुनः भूख नहीं सताती।

५१२– राम री जै ने रावण री जै ।

राम की भी जय और रावण की भी जय। दोनों ओर मिले रह कर अपना स्वार्थ पूरा करने वाले के लिए यह कहावत कही जाती है।

५१३– रीछ री जांघ में बाल रो कई टोटो ।

रींछ की जंघा पर बालों की कमी नहीं होती। जिस स्थान पर जिसकी उत्पत्ति पर्याप्त मात्रा में हो वहां उसकी कमी नहीं कही जा सकती।

५१४– रूठेड़ो भोपाल, इटेड़ो वाणियो ।
खीसे नाक्यो हाथ जदी पेछाणियों ॥

राजा रुष्ट है और बनिया गरीब है इसका पता इनके अपनी जेबों में हाथ डालने पर लगता है। जेब से कुछ न निकलने पर भान हो जाता है कि राजा कुछ देना नहीं चाहता और बनिया गरीब है।

५१५– रेंट वाली घेड़ है।

रहँट की घेड़ भरती रहती है और साथ साथ खाली भी होती रहती है। खाली होना भर जाना यही उसका परिचलन है अतः बारबार पूर्णता को प्राप्त होकर खाली हो जाने पर यह कहावत कही जाती है।

५१६– रेगा नर, तो करेगा घर ।

घर में पुरुषार्थी मनुष्य जीवित रहा तो निश्चय ही वह किसी न किसी दिन घर की स्थिति सुधार लेगा । गरीब परिस्थिति आ जाने पर घर के कमाउ पुरुष को लक्ष्य करके संतोष धारण करने और आशा बंधाने के हेतु इस कहावत का प्रयोग होता है ।

५१७– रोजीना नाव नदी पे कदीक नदी नाव पे ।

सदा नाव नदी पर और कभी नदी नाव पर । समय सदा एकसा नहीं रहता है । कभी नीचे वाले ऊपर कभी ऊपर वाले नीचे आते ही रहते हैं । यह कहावत समय के हेरफेर की सूचक है ।

५१८– रोटी रो मार्‌यो नीचो, चांटा रो मार्‌यो ऊँचो

आदमी जितना रोब से दबकर काम नहीं करता है उतना भोजनादि के एहसान से दबकर किसी का काम कर देता है इसलिए कहा है कि थप्पड़ का मारा हुआ आदमी कभी ऊँचा उठकर सामना कर सकता है परन्तु भोजन के अहसान का मारा हुआ आदमी कदापि सामना नहीं कर सकता ।

५१९– रोवे रुई वालो, पींजारा रे कई जाय ।

रुई में कितना ही कचरा निकले इससे पिंजारे का क्या बिगड़ता है हानि तो रुई के मालिक की होती है । माल की बुराई का फल उसके स्वामी को ही सहन करना पड़ता है ।

[ल]

५२०–लंका में वाण्यो नी थो जो यो राज चल्यो गयो ।

वणिक की तरह नीतिज्ञ होना अपनी जड़ जमाए रखने

के लिए जरुरी है कहा जाता है कि रावण के राज्य में अनिया अथवा नीति का जानकार नहीं होने से लंका का सर्वनाश हो गया।

५२१- लड़ाई रो घर हांसी, रोग रो घर खांसी।

कहा जाता है कि हँसी हँसी में ही लड़ाई हो जाया करती है और खाँसी बढ़कर भंयकर रोग का रूप धारण कर लेती है। अतः किसी से ज्यादा हँसी करना उचित नहीं और खाँसी का इलाज न कर उसकी उपेक्षा करना भी उचित नहीं।

५२२- लक्ष्मी रा चौगुणा लेवाल, चतुर ने चौगुणी ने पुरख ने सौगुणी वदर आवे।

धन के ग्राहक अनुमान मे भी चौगुने हुआ करते हैं परन्तु याद रखना चाहिए कि नीति से लक्ष्मी का सेवन करने वाले की सम्पदा चौगुनी हो जाया करती है और परिश्रम के साथ लक्ष्मी को उपयोग में लाने पर संपदा सौगुनी हो जाती है। धन का उचित उपयोग करने के लिये इसका प्रयोग होता है।

५२३- लाड़ा लाड़ी दोई ने हँपड़ावणा।

वर वधू दोनों को स्नान कराना। अर्थात् दोनों पक्ष वालों को खुश रखना उचित है।

५२४- लाड़ी रो ने पाड़ी रो खादो, कदी अवरथा नी जाय।

पुत्र वधू को और भैंस को खिलाया गया पदार्थ कभी व्यर्थ नहीं जाता। क्योंकि दोनों का फल अन्त में मिलता ही है।

५२५– लाडू री कोर कसी खाटी ने कसी मीठी।

प्राय: माता पिता अपने बच्चों को यह बताने के लिए कि उनकी नजरों में तो सब बच्चे समान हैं इस कहावत का प्रयोग करते हैं कि लड्डू री किनार कौनसी खट्टी और कौनसी मीठी। सब एकसी मीठी है।

५२६– लाड़ो मरे के लाड़ी तोरण रो टको तो मेल।

भविष्य में भले ही वर वधू में से कोई भी मर जाय इससे तोरण बनाने वाले का कोई वास्ता नहीं उसको तो उसकी मजदूरी से मतलब है।

५२७– लाड़ो मरे के लाड़ी तोरण दान तो कठेई नी जाय।

विवाह क्रिया संपन्न कराने वाले ब्राह्मण को दक्षिणा मिल ही जाती है चाहे वर वधू का भविष्य कैसा हो क्यों न हो ? आवश्यक खर्च कार्य-फल के पूर्व करना ही पड़ता है।

५२८– लादूया जदी पलाण्या।

जब सामान लादने की जरूरत होगी तभी घोड़ा पलाण दिया जायगा। काम पड़ते ही साधन तैयार मिले तो यह कहावत कही जाती है।

५२९– लाम्बी मेल्यां लार मेले।

काम को लम्बा छोड़ देने से अर्थात् काम में ढीलाई करने से काम का भार बढ़ जाया करता है। प्रत्येक कार्य निश्चित समय में पूरा करना चाहिये।

५३०– लखेसरी तोई भीखेसरी।

लखपति होने पर भी मन का मूँजी हो तो वह लखपति न माना जाकर भिखारी ही समझा जाता है।

५३१– लेणां लक्कड़ ने देणां पत्थर।

जिस आदमी का लेन देन का व्यवहार अच्छा नहीं हो उसके लिये इस कहावत का प्रयोग होता है।

५३२– लोभ आगे थोभ नी।

लोभ के मारे संतोष नहीं होता है।

५३३– लोभ गलो कटावे।

लालच से कभी कभी मनुष्य की जान पर आ बनती है।

५३४– लोभ पाप रो मूल।

लोभ पाप की जड़ है। लोभ के मारे मनुष्य को उचित अनुचित का ध्यान नहीं होता है।

५३५– लोभी आगे दूतारो।

लोभी से छुटकारा पाना बड़ा ही कठिन है। सच है बिना स्वार्थ पूरा हुए लालची पिंड नहीं छोड़ा करते।

[व]

५३६– व्याज ने घोड़ो नी पूगे।

उधार मूल धन पर व्याज दिन रात बढ़ता रहता है। प्रारंभ में मामूली दिखाई पड़ते हुए अन्त में चुकाना भारी पड़ जाया करता है अतः कहा जाता है कि व्याज की चाल को घोड़ा भी पार नहीं पा सकता।

५३७– वंश रो कराड़ो है।

वंश के लिए कुल्हाड़ा है यानी वंश का नाशक है।

५३८– वंश रो भागीरथ ।

वंश में भागीरथ के समान होना । भूलोक पर गंगा को लाकर अपने पूर्वजों को मोक्ष प्रदान करवाने वाले सगर-कुल के सुपुत्र भगीरथ इतिहास प्रसिद्ध है । अतः वंश को उन्नति पर पहुचाने वाला पुत्र आज भी वंश का भागीरथ कहलाता है ।

५३६– वगत खराब आवे तो कपड़ा इ वैरी वे जाय ।

दुर्दिन आने पर मित्र भी दुश्मन हो जाते हैं जैसा कि अपने शरीर के पहनने के कपड़े भी वैरी का काम करने लगते हैं

५४०– वगत वगत रा मोती ।

मूल्य वस्तु का नहीं समय का है एक मोती समय पर लाखों में बिक जाता है और समय पर उसी मोती को कौड़ी में भी लेने को कोई तैयार नहीं होता। समय,समान नहीं रहता ।

५४१– वगत पड्या रे वान्दरा भू पड्या फल खाय ।

समय पड़ने पर बन्दर पृथ्वी पर पड़े फल खाता है कारण कि शक्ति का ह्रास हो जाने पर उसके लिए पेड़ पर के फल प्राप्त करना संभव नहीं। आपत्ति के समय अपनी मर्यादा से तुच्छ वस्तु का उपयोग विवश होकर करना पड़ता है । 'आपत्ति काले मर्यादा नास्ति ।' रहीम ने कहा है:—

"रहिमन दुर्दिन के पड़े, बड़न किए घटि काज ।
पाँच रूप पाँडव भये, रथवाहक नल राज ॥

५४२– वगत चली जाय ने वात रेइ जाय ।

हमेशा सोच समझ कर बुद्धि-युक्त बात करनी चाहिए। कारण कि जिस समय को देख कर हम अन्धाधुन्ध बात कर दिया करते हैं वह समय तो नष्ट हो जाता है परन्तु उस बात का प्रभाव हमेशां अक्षुण्ण बना रहता है।

५४३– वगर मन रा पामणा, थने घी गालूं के गोर।

गृह-स्वामी की इच्छा के विरुद्ध आये हुए मेहमान तुझे घी परोसा जावे या गुड़? किसी के लिये 'मान न मान, मैं तेरा मेहमान' बनना उचित नहीं।

५४४– वणज करे सो वाणियो ने चोरी करे सो चोर

कार्य विशेष में जाति का ही ठेका नहीं होता, किसी भी जाति का क्यों न हो अगर वह वाणिज्य व्यापार करेगा तो निश्चित है वह व्यापारी कहलाएगा और चोरी करेगा तो चोर कहलाएगा। मनुष्य जाति से नहीं कर्म से जाना जाता है।

५४५– वणज करयां रे नाथा, पगां की झाल आई माथा।

व्यापारी कहता है प्रभो! अब मालूम हुआ है व्यापार करना कैसा होता है? मेरे तो पैरों की गर्मी मस्तिष्क तक चढ़ आई है। तात्पर्य यह है कि व्यापार करना सरल काम नहीं है। चोटी का पसीना एड़ी तक आता है तब कहीं जाकर लाभ मिलता है।

५४६- वणिज पुत्र कागज लिखे, काना मात नहीं देत।
हींग, मरच, जीरो लिखे, हग, मर, जर लिख देत।

महाजन इस ढग से बिना काना मात्रा के लिखते हैं

कि महाजन के सिवाय अन्य पाठक कुछ का कुछ पढ़ते हैं यह लिपी महाजनी नाम से प्रसिद्ध है। अतः बनिए की इस लिखावट के लिए लोग कहा करते हैं कि बनिए का बेटा कागज लिखने में काना मात्रा का प्रयोग नहीं करता अतः वह हींग मिर्च जीरा लिखेगा तो पढ़ने वाला उसे हंग, मर, जर पढ़ेगा। सदा शुद्ध लिखना चाहिये।

५४७–वना पींदा रो लोट्यो।

बिना पैंदा का लोटा अर्थात् एक ओर स्थिर न रह कर जिधर मुड़ाया जाय उसी ओर मुड़ जाने वाला जो अपने निश्चित मत नहीं रखते और प्रत्येक की बात सुन कर या अवसर देखकर ढुल जाया करते हैं। उनके लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

५४८–वना नाथ मोरा रो बैल।

बिना नाथ मोहरों का बैल। निरंकुश और उच्छृंखल व्यक्ति के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

५४९–वना बेटी जमाई रो लाड़ नी वे।

बेटी के पीछे ही जमाता का महत्व है। बेटी की अनुपस्थिति में जमाई को सुसराल वाले प्यार नहीं करते।

५५०–वागजीरो बैठणो ने भानाजी रो कातणो।

वागजी का भानाजी के पास उस समय आकर बैठना जब भानाजी कातना प्रारंभ करते हैं। बातूनी और बात सुनने वाले का योग मिल जाने से काम नहीं होने पर यह कहावत कही जाती है।

५५१–वागर रा चुंख्या में कई रस रे।

वागर गन्ने को ऐसा चूसती है कि उसमें फिर एक बूंद भी रस शेष नहीं रहता। इसी तरह जब कोई चीज किसी ऐसे आदमी के पास चली जाती है जो उसका सब सार ग्रहण कर लेता है तब यह कहावत काम में लाई जाती है।

५५२–वाट ने वैरी काट्यों ही कटे।

मार्ग और दुश्मन काटे जाने पर ही कटते हैं। रास्ता निरंतर चलते रहने से ही पूरा होता है और दुश्मन से निरन्तर लोहा लेते रहने से ही उसकी शक्ति का ह्रास होता है।

५५३–वाड़ उठी ने वेलड़ा ने खाय थोड़े ही।

काशीफल, तुरई, ककड़ी आदि की बेलें जब प्रसार पाती हैं और इन पर फल वगैरह आने लगते है तब इनकी रक्षा के लिए वाड़ की जाती है। जब वाड़ ही बेलों को खा जाय तो वे कैसे फूल सकती हैं। रक्षक ही भक्षक बन जाय तो फिर कोई उद्धार नहीं कर सकता।

५५४–वाड़ पर वेलड़ो नी चढ़े तो कण पर चढ़े।

वाड़ पर बेलें प्रसार नहीं पावे तो किस पर पावें। यानी जो काम जिस स्थान पर स्वभावतः होने का है वह होकर ही रहता है।

५५५–वात और बाट जें फेरे नें फेरे।

बात और मार्ग जिधर घुमाने को कहा जाए उधर ही घूम सकते हैं। मनुष्य अपनी इच्छानुकूल रास्ता पकड़ सकता है और इसी तरह बात को भी घुमा फिरा कर स्वयं के इच्छित

निष्कर्ष पर ले जा सकता है।

५५६—बात मूतरा रेला में जाणी

बात का मूत्र की धार में जानी है। किसी की बात पर ध्यान नहीं दिया जाय तब इस कहावत का प्रयोग होता है।

५५७—वातां वेवाररी ने लक्खण दीवारिया।

बातचीत से तो व्यवहार-कुशल जान पड़ता है पर लक्षण दीव लिए से हैं। घर के बाहर बन ठन कर फिरने वाले और बढ़कर बातें बनाने वाले उस व्यक्ति के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है जो सीधी कमाई को उड़ाने में रहता है।

५५८—वान्दरा रे हाथ में लकड़ी दो तो भी हुकूमत करे।

बन्दर के हाथ में भी यदि लकड़ी दे दी जाय तो वह भी हुकूमत जमाएगा। दण्ड देने की शक्ति प्राप्त होने पर साधारण व्यक्ति भी शासन कर सकता है।

५५९—वान्दरा री चाल चालणी।

बन्दर सी चाल चलना। प्रत्येक कार्य में कूद फाद मचाना उचित नहीं।

५६०—वी दन नी रया तो ई दन थोड़ी रेगा।

जीवन-परिवर्तन शील है अतः जीवन में सुख दुख का आवर्तन होता ही रहता है। वो दिन नहीं रहे अतः निश्चित है कि ये दिन भी नहीं रहेंगे। धैर्य के साथ समय का सामना

करना चाहिये।

५६१–शेर में छूटो वाएयो गामड़ा में हदरे।

शहर में हानि उठाने वाला बनिया गांव में रह कर व्यापार करने से पुनः अपनी स्थिति सुधार लेता है, क्योंकि गांवों के लोग प्रायः अशिक्षित होते हैं जिन्हें बनिए अधिक ठगते हैं। गांवों में शहर की अपेक्षा कम खर्च में जीवन यापन हो जाता है।

५६२–संख वाजे ने हल्ला उड़े।

जहां सुन सान होता है और किसी प्रकार की समृद्धि नहीं होती वहां कहा जाता है कि यहां तो शंख बजते है और पिस्यू उड़ते हैं।

५६३–सती सराप देई नी, ने कर्कशा रो सराप लागेई नी।

सती स्त्रियां किसी का अनहित नहीं चाहती अतः आप उनके मुख से दुर्वचन संभव नहीं और इसके विपरीत कर्कशा औरतें ऊल जलूल बका करती हैं परन्तु उनके दुर्वचनों का तनिक भी असर नहीं होता। सब को निश्चित होकर अपना कर्तव्य करते हुए दूसरों की बातों की परवाह नहीं करनी चाहिये।

५६४–सदा दीवाली संत की बारह मास बसंत।

साधु लोगों को हमेशा दीवाली और हमेशा बसंत रहता है। संत सदा आनन्द में रहते हैं।

५६५–सब दन हरीखा नी वे।

सब दिन समान रूप से व्यतीत नहीं होते। समय परिवर्तन शील है।

५६६–सप्त बीसी रा सैंकड़ा, ने मणरा छप्पन सेर।

सात बीसी के सौ और मन के छप्पन सेर। एक खरीददार ने किसी से कुछ माल खरीदते समय एक मन चालीस सेर के बजाय छप्पन सेर का गिना। बाद में जब माल बेचने वाले को भान हुआ और उसने खरीददार के बारे में इससे कहा तो उसने उस समय बात टाल दी। बाद में जब रुपये चुकाने का समय आया तो माल बेचने वाले ने पांच बीसी के स्थान पर सप्त बीसी का सैंकड़ा मुकर्रर किया। असमान व्यवहार करने पर इस कहावत का प्रयोग होता है।

५६७–सब रा घर पीरी लीप्यां है।

सब के घर पीली से लीपे हुए हैं। सामाजिक जीवन एवं मूल भावनाएँ प्रत्येक घर में समान रूप से हैं।

५६८–सब संग आई जाय पर वारां संग नी आवे।

यात्रा में और सब तो साथ आ सकते हैं परन्तु पैरों पर नहीं चलने वाले बच्चे बच्ची नहीं आ सकते। क्योंकि उनको साथ लिया जाता है तो मार्ग में उनको उठाना पड़ता है जिससे कष्ट होता है। यात्रा में बच्चों को साथ नहीं रखने के लिये इस कहावत का प्रयोग होता है।

५६९-सरग में कदी नीसेणी नी लागे।

स्वर्ग तक कभी सीढ़ी नहीं लगती। असंभव बात कभी

संभव नहीं।

५७०–सपूत रे सदा कपूत वेता आया है।

सपूत के घर कपूत पैदा होते आये हैं।

५७१–सस्ता रोवे बारबार मूंगा रोवे एक वार।

मंहगी किन्तु टिकाऊ चीज खरीदने वाला तो एक बार केवल यही अफसोस करता है कि पैसा ज्यादा लगा परन्तु पैसे से डर कर घटिया चीज खरीदने वाला बार बार तकलीफ उठाता है।

५७२–सांची के तो पूत मंडावे।

सच्ची बात बताने पर गालियां सुनना और पुत्र आदि के मर जाने की अशुभ बातें सुनना पड़ता है। कटु सत्य किसी को सुहावना नहीं लगा करता अतः चुभने वाली सच्ची बात भी नहीं बताना श्रेयस्कर है।

५७३–सांप को कतरोई दूध पावे तो भी जेर उगलेगा।

सांप को कितना ही दूध पिलाया जाय वह जहर ही उगलेगा। दुष्ट पर हमदर्दी का कुछ भी असर नहीं होता इसके विपरीत गुण युक्त वस्तुएँ भी दुष्ट के सम्पर्क से दूषित हो जाती हैं।

५७४–सांपड़ी ने कोई नी पछताय।

किसी भी स्थिति का या कैसी भी प्रवृति का मनुष्य हो स्नान सब के लिए लाभ दायक है।

५७५–सांप रा टपारा में हाथ नाकणो।

सांप के पिटारे में हाथ डालना। जान करके आपत्ति का आह्वान करना मूर्खता है।

५७६–साधु रे कस्यो स्वाद।

साधुवेष में कोई यदि स्वादु हो तो समझना चाहिये कि वह स्वयं को और समाज को धोखा देने वाला है।

५७७–सारस्वत को संग न कीजे, कालो सांप सराणे न दीजे।

सारस्वत का संग करना और काले साँप को तकिए रखना समान है। सारस्वत ब्राह्मण को विश्वास-पात्र नहीं समझा जाता।

५७८–सासरा में समाय नी और पीयर से समाय नी।

सुसराल में और पितृगृह में दोनों जगह किसी से नहीं पटती। सुसराल तथा पीहर दोनों पक्षों को तंग करने वाली स्त्री और सबसे लड़ने वाले व्यक्ति के लिए यह कहावत कही जाती है।

५७९–सूरत रो जनम ने काशी रो मरण।

सूरत का इहलौकिक महत्व है और काशी का पारलौकिक महत्व माना जाता है अतः कहा जाता है कि सारा जीवन तो सूरत में जन्म लेकर ही बिताना अच्छा है और मरना काशी का, जिससे मोक्ष मिले।

५८०–सूरज पे खे नाकणी।

सूरज पर धूल फेंकना। असंभव मूर्खता से परिपूर्ण काम करना पड़े, जिसका बुरा फल स्वयं को ही मिले तो यह कहावत कही जाती है।

८१–सेठजी री धोवती में बगां व्यांई री है।

जब कोई आफत में होता है तो कहा जाता है कि सेठजी की धोती में बगें पैदा हो रही हैं।

८२–सेठजी ! सेठजी कुँवर साब रोड़ी पे लोटे,
तो कई मतलब नेगा।

एक सेठ का लड़का रोड़ी (खाद का ढेर) पर लोट रहा था। देखने वालों ने सेठ को इस की सूचना दी तो उत्तर मिला की लोटने दो किसी तरह से कुछ मतलब पूरा करता होगा। सेठ स्वार्थी होते हैं।

८३–सेण वइने दुश्मणा री गरज पालणी।

हितेच्छु होकर वैरी का सा काम करना। अपना विश्वास पात्र धोखा कर बैठता है तो यह कहावत कही जाती है।

८४–सोदा शान तीं मले।

इज्जत और शान रखने से सौदा (उधार भी) मिलता है अन्यथा नहीं।

८ –सोना री थाली में पीतल री मेख।

सोने की थाली में पीतल की मेख होने पर थाली की महत्ता में कुछ कसर पड़ जाती है। सर्वगुण संपन्न में तनिक भी बुराई होना उचित नहीं।

[ह]

५८६—हाजी चाल्या घरे रा घरे।

सेठजी यह सोच कर कि घर में थोड़ा बहुत नाज का बचाव होगा, मेहमान दारी को निकले। पांच सात दिन बिता कर घर आए तो देखा कि पांच सात मेहमान उनके यहां बैठे उनकी इन्तजार कर रहे हैं। अतिथियों ने पूछा कि आप कहां गये थे तो उन्होंने कहा कि मैं तो कहीं नहीं गया था घर का घर पर ही हूँ। जब कोई एक तरफ बचत करता है और दूसरी ओर इसकी कसर निकल जाती है तब कहते हैं 'हाजी चाल्या घरे रा घरे।'

५८७—हाजी रे गूमड़ो व्यो तो पंपोरी पंपोरी ने मोटो कीदो।

सेठजी के फोड़ा हुआ तो उसे सहला २ कर बड़ा किया। बड़े आदमियों के जरा सी तकलीफ भी हो जाए तो हाय तोबा मचाते हैं। अथवा आपत्ति में भी बढ़ोतरी करने पर इस कहावत का प्रयोग होता है।

५८८—हाजी तो हवाया करे, डेढ़ा करे बजाज।

सेठजी मूल पूंजी को सवाई करते हैं, बजाज डेढ़ गुनी करता है परन्तु कूंजड़ा वस्तु पर मूल से चोगुना वसूल करते हैं और तब भी नतीजा यह होता है कि घर पर खाने पीने के बरतन मिट्टी के ही मिलते हैं। ज्यादा शोषण करने वाला भी अंततः नुकसान में ही रहता है।

५८९—हाजी रो हीड़ड़ो टंग्यो गयो ने टंग्यो आयो।

सेठजी का सीदड़ा लटका हुआ ही गया और पुनः लटका हुआ ही आया। अर्थात् व्यर्थ की मेहनत पड़ी, कुछ काम नहीं बन पाया।

५९०–हाड़ा तीन सौ गाम पट्टे, कोई देवे ने कोई नटे।
सारा देवे तो राखो कठे, नी मले तो जावों कठे।
हरी फरी ने आवो अठे रा अठे, नी आवो तो जावो कठे।

साढ़े तीन सौ गाँव पट्टे में हैं परन्तु सब एक से नहीं हैं। किसी गांव से प्राप्त होता है किसी से नहीं। सच भी है अगर सब से प्राप्त हो तो रखने का स्थान नहीं और अगर नहीं मिलता हो तो अन्य स्थान कहाँ जहाँ से कुछ प्राप्त हो सके। घूम फिर कर फिर इन्हीं गाँवों में आना पड़ता है। राव, भाट, हींजड़े आदि फेरी लगाहने वाले इस कहावत का प्रयोग करते हैं।

५९१–हात भाइयों रे वचे एक जांग्यो।

सात भाइयों के बीच में एक बड़ा पाजामा। जब बहुत से आदमियों के बीच आवश्यक चीज की कमी हो तब यह कहावत कही जाती है।

५९२–हियांरा रो हाको हो कोस तक जाय।

गीदड़ की आवाज सौ कोस तक जाती है कारण कि रात्रि के शान्त वातावरण में गीदड़ भौंकते हैं और एक ओर की आवाज सुनकर दूसरे गीदड़ भी भौंकते लगते हैं। इस प्रकार

यह क्रम मीलों तक चला जाता है।

५९३–हूँना घर रो पामणो ज्यूँ आवे ज्यूँ जाय ।

सूने घर का मेहमान जैसे आता है वैसे ही जाता है। जहां जाना व्यर्थ हो वहां नहीं जाना चाहिये ।

५९४–होड़ में माकण ने गांव में तुरक ।

ओढ़ने की रजाई में खटमल जिस प्रकार दुःखदाई समझा जाता है उसी तरह गाँव में तुर्क की स्थिति मानी जाती है।

५९५–हँसा तो मोती चुगे कै लंघन कर जाय ।

हंस के लिये प्रसिद्ध है कि वह चुगता है तो मोती ही अन्यथा मोती के अभाव में वह लंघन कर के ही दिन बिताता है। श्रेष्ठ व्यक्ति श्रेष्ठ वस्तु के अभाव में निम्न कोटि की वस्तु से काम नहीं निकालते।

५९६–हकीम रो दोस्त रोज बीमार वे।

हकीमजी का मित्र हमेशा बीमार होता है। आपत्ति निवारण के साधनों को देख कर आपत्ति मे पड़ जाना मूर्खता है।

५९७–हमी हांज रा मरया ने क्यां तक रोवां।

संध्या समय मरे हुए को कहाँ तक रोवें। सूर्यास्त के बाद मर जाने वाले को दाह क्रिया दूसरे दिन हुआ करती है और रात मृत-देह के पास बैठे २ बितानी पड़ती है। परन्तु रोना धोना तो प्रातः काल होते होते शुरू किया जाता है। दुःख के समय को जितना कम किया जाय उचित है।

५९८—हमार थारी घोड़ी, बन्दा ए नौकरी छोड़ी।

तेरी घोड़ी सम्हाल, बन्दे ने तो अभी नौकरी छोड़ी। चुभती हुई बात पर तत्क्षण कार्य छोड़कर स्वाभिमानी व्यक्ति के चले जाने पर यह कहावत कही जाती है।

५९९—हवाई किला बांधणा

हवा में किले बाँधना। निराधार कल्पना करने पर यह कहावत कही जाती है। जैसे 'To build castles in the air'

६००—हाऊ री सीख ओटला तक।

सास की शिक्षा बहू को घर के बाहर चबूतरी तक ही याद रहती है। बहू को अन्त में अपनी बुद्धि से काम करना होता है।

६०१—हाऊ जसी वऊ।

जैसी सास वैसी बहू। गृहस्थी में सास जैसा बहू को सिखाएगी बहू भी तदनुकूल व्यवहार करेगी।

६०२—हांकूं तो चाले नी, उतरूं तो पाड़े फोड़ा।
थारा पगां में पागड़ी मेलूं चाल रे मारा घोड़ा।

हांकने पर भी नहीं चलता और उतरने पर कष्ट देता है, कूद फांद मचाता अतः विवश होकर मैं तेरे पैरों पगड़ी रखता हूं कि घोड़े! अब तो चल। मूर्ख डाट डपट, आदि से काम नहीं करता है तो उससे प्रार्थना करनी पड़ती है।

६०३—हाकम रे आगे, ने घोड़ा रे पछाड़ी नी जाणो।

हानि से बचने के लिए हाकिम के आगे और घोड़े के पीछे

नहीं चलना चाहिए। क्योंकि हाकिम की निगाह हर समय पड़ती रहती है और घोड़े की लात पड़ने का अंदेशा रहता है।

६०४–हांची वात के तो माई भी मारे।

सच्ची - खरी बात सुनाने पर माता भी मारती है। कटु सत्य प्रिय नहीं होता।

६०५–हाट रा गुरु ने वाट रा चेला जदी मूण्ड्या जदी अकेला।

बाजारु उस्ताद और राहगीर चेले का संयोग नहीं होता काम के लिये जिससे मिलना नहीं हो सकता हो उसे अपना बनाना मूर्खता है।

६०६–हाड़ ती अम्बाड़ी हाउ।

हड्डी से तो अम्बाडी (जूट) अच्छी अर्थात् अम्बाड़ी के तार जैसा पतला हो पर मुलायम हो तो अच्छा। नहीं तो कठोर हड्डियां किस काम की।

६०७–हाजर जो नाजर।

हाजिर है सो नज़र है। जो पास हो वह उपस्थित करने पर यह कहावत कही जाती है।

६०८–हाजर में उजर नी ने गैर में तलाश नी।

जो कुछ पास में है उसे देने में उज्र नहीं है और जो पास में नहीं है उसे प्राप्त करने की कोई बात नहीं है। जहां अधिक या अतिरिक्त के लिए परेशानी उठाने की आवश्यकता नहीं समझी जाती वहां इस कहावत का प्रयोग होता है।

६०६–हाजा में सवाद वे तो पामणा आगे क्यूँ नी मेले ।

मक्की के आटे को साजीखार के पानी में पकाया जाकर तैयार किया जाता है । सर्दी में साज्या स्वादिष्ट तो होता है परन्तु यह निकृष्ट कोटि का भोजन माना जाता है इसलिए मेहमान को नहीं परोसा जाता है । अतः कहते हैं कि साज्या स्वादिष्ट होता तो मेहमान को क्यों नहीं परोसा जाता ?

६१०–हाजी तो हाटे नी बैठा, ने नमतो तोल जो ।

अभी दूकानदार ने अपनी दूकानदारी तो जमाई भी नहीं और लोग उससे कहने लगे कि जरा नमता तोलना । जहाँ कोई आदमी अपने पद पर तो आसीन हुआ ही नहीं और लोग अपने फायदे की मांग करने लगें । वहां इस कहावत का प्रयोग होता है ।

६११–हाजी पड्या हवाया उठे, ने तेली पड्या छाती कूटे ।

बनिए का नाज बिखर जाए तो वह फिर इकट्ठा कर लेता है और साथ साथ धूला कंकर मिलने से उसका वजन सवाया हो जाता है परन्तु तेली का तेल ढुल जाय तो वह नुक्सान ही उठाता है ।

६१२–हाजी हाट पे पधारे जदी कापड़ो वधारे ।

सेठजी दूकान पर आएंगे तब ही कपड़ा फाड़ेंगे । संबंधित व्यक्ति से निश्चित स्थान पर ही काम निकालने पर यह कहावत कही जाती है ।

६१३–हाजी रोकड़ा हमाले जदी कापड़ो वधारे ।

सेठजी नकद पैसा सम्हालने पर ही कापड़ा (कपड़े का छोटा टुकड़ा) फाड़ते हैं । दूकानदार बिना नकद पैसे लिये कोई वस्तु नहीं देता है ।

६१४–हाजी री हीख झोपा तक ।

सेठजी की शिक्षा झोपड़े तक । दूसरों की शिक्षा प्रत्येक कार्य में याद नहीं रहती । काम किसी की अक्ल से ही होता है ।

६१५–हाथ तीं हाथ नी कटे ।

अपने हाथ से अपना ही हाथ नहीं काटा जा सकता है । जानबूझ कर अपनी हानि अपने हात से नहीं हो सकती ।

६१६–हाथी आया ने घोड़ा उठाया ।

हाथी के आने पर घोड़े को स्थान छोड़ना होता है । बड़ों के अधिकार जमाने पर छोटों को वह स्थान छोड़ना पड़ता है ।

६१७–हाथी ने मण ने कीड़ी ने कण देवे ।

जगत प्रतिपालक ईश्वर के लिए कहा जाता है कि वह आवश्यक स्थिति के अनुकूल सब प्राणियों को भोजन सामग्री प्रदान करता है जैसे हाथी को मण और चींटी को कण ।

६१८–हाथी रा होदा तो हूना जाय ने चापड़ा पे चौकी ।

हाथी की अम्बारी तो सूनी ही रहती है परन्तु चापड़े पर पहरा बिठाया । आवश्यकता की पूर्ति नहीं करने पर जब

अनावश्यक कार्य या व्यय किया जाता है तब यह कार्य किया जाता है।

६१९–हाथी रे गरे लेस्यो।

हाथी के गले में (सवारी के मौके पर) लहर दार पगड़ी बंधती है। जब किसी बड़े आदमी के यहाँ रीति-रस्म में बहुत अधिक खर्च होता है तो लोग कहते हैं भाई हाथी के गले में लहरदार पगड़ी बंधती ही है। बड़े आदमी की स्थिति के अनुकूल खर्च होता ही है।

६२०–हाथ हाथे हैंतीसा ने ठाकर वांधे पैंतीसा।

जागीरदारों की पोल के लिए कहा जाता है कि सैंतीस हाथ का भुगतान वहाँ पैंतीस हाथ में होता है।

६२१–हाबल्या री वाट की।

प्याले से वंचित व्यक्ति को यदि प्याला प्राप्त हो जाए तो वह उससे इतना स्नेह करता है कि उसे छोड़ता तक नहीं। किसी मनुष्य को वह चीज प्राप्त हो जाए जो पहले उसे कभी नहीं प्राप्त हुई तो वह उससे अपना ध्यान नहीं हटाता।

६२२–हार्‍यो हाकिम जमानत मांगे।

पहले तो हाकिम जमानत लेने को तैयार नहीं हुआ परन्तु जब उसको अपनी कमजोरी मालूम होती है तब वह फौरन उस कमजोरी को छिपाने के लिए जमानत मांगने लगता है। जब कोई बेबस हो जाता है तब वह उस काम को करने में भी रजाबन्द हो जाता है जिसको करने में वह आनाकानी करता था।

६२३–हारो मल्यो हत्यारो, ने पीर मल्यो पापी।

उस महिला की स्थिति में होना उचित नहीं जिसका सुसराल निर्दयता का और पितृगृह पाप का स्थान है।

६२४–हाल तो ऊँट पाणी गया है।

राजस्थान में रेतीले स्थानों पर ऊँटों पर पानी लाया जाता है। जब प्रारंभ में कोई आकर भोजन की तैयारी के बारे में प्रश्न करता है तो उसे उत्तर मिलता है अभी तो ऊँट पानी लेने गया है। आवश्यक कार्य के प्रारंभ नहीं होने पर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

६२५–हिम्मत री किम्मत।

हिम्मत वालों का ही दुनियाँ में मूल्य है।

६२६–हिंसाब कोड़ी रो बक्षीस लाख की।

लेन देन में तो कोडी का भी हिसाब होना चाहिए जैसे चाहे लाखों रुपये इनाम में दिये जावे।

६२७–हींग हाटे भाजी बगाड़नी।

हींग के लिए शाक बिगाड़ना। अर्थात् तुच्छ बात के लिए बड़ा काम बिगाड़ देना मूर्खता है।

६२८–ही ही करता हियारो निकाल्यो, उनारा में कीदा माण्डा।

अबे आयो चौमासो ने खाओ घर रा डाण्डा।

काम का वक्त हाथ से गवां देने वालों की आखिर दुर्दशा होकर रहती है। जैसे कहा जाता है कि सारी सर्दी तो ठिठुरने में बिता दी और गर्मी ब्याह शादियों में घूमते रहे। अब चतुर्मास आ गया और बरसते पानी में कोई काम नहीं हो सकता तो भूखों मरते हुए कठिनाई उठानी पड़ती है।

६२६—हूणनी हो री ने करनी मनरी।

सुननी सौ की पर करनी मन की। अर्थात् राय सब की सुनना अच्छा परन्तु करना स्वयं की परिस्थिति को ध्यान में रख कर।

६३०—हेंत रे टपके लगावणो।

शहद की बूंद पर आदत जमाना। धीरे २ लालच की ओर बढ़ाकर काम लेने वाले के लिये इस कहावत का प्रयोग होता है

६३१—होड़ वे वतरा पग वदावणा।

जितनी चद्दर हो उतने ही पैर फैलाना चाहिए। स्थिति समझ कर ही कार्य-विस्तार करना चाहिये। जैसे Cut your coat according to your cloth.

६३२—होड़ा होड़ नी मराय।

किसी की देखा देखी मरा नहीं जाता है। अपनी स्थिति समझ कर ही कठिन कार्य में पड़ना चाहिये।

६३३–हो दवा ने एक हवा।

सो हवा और एक दवा। स्वच्छ वायु-सेवन से स्वास्थ्य सुधरता है।

६६४–होरी री रोपणी ने कांदा री चोपणी।

किसानों में यह मत प्रचलित है कि होलिका रोपण (माघ शुक्ला पूर्णिमा) के साथ साथ ही प्याज को चोब देना उचित रहता है।

६३५–हाथरो नाक।

अपना नाक रखना अर्थात् स्वाभिमान रखना अपने ही हाथ है।

॥ समाप्त ॥

कहावतों में प्रयुक्त जनपदीय शब्दों के अर्थ

—अ—

अक्खर=अक्षर। अकल=बुद्धि। अगाड़ी=आगे।
अठैं=यहाँ। अण=बिना। अण मोल्या=बिना खरीदा हुआ।
अणा=इनको। अणांने=इसको, इनको।
अणी=इस। अतरा=इतने। अन्याड़ा=अन्यायी।
अम्बाड़ी=सन विशेष। अवरी=उल्टी।

—आ—

आकड़ा=आक का पौधा। आकड़ो=आकका पेड़
आखा=समस्त, सब। आखी=सारी। आखो=सारा।
आंख्या नेज=आँखों को ही। आंख्या ने=आँखों को
आगल=अंगुल। आंगल्या=अंगुलियाँ। आंगणो=आंगन में
आंगला=अंगुलियाँ। आंगणा=घर। आगे=प्रथम।
आगे=सामने। आगोतर=मृत्यु के बाद। आछी=अच्छी।
आणफस्या=आफंसना, फंदे में फस जाना, बेवश हो जाना।
आणंद=आनन्द। आतरा जवे=आगे होते हैं।
आधे=कम। आंधो=अन्धा। आप=खुद।

आपराज=आपके। आपणी=अपनी स्वयं की।
आमली=इमली। आर=वश। आलणी=एक प्रकार की तरकारी।
आला=गीला, भींगा।
आवण=आना, दुखना। आवणो=आना।
आवती वऊ=आती हुई नववधु। आवे=आती है।
आखतारो=आने वाले का आसोज=आश्विन।

—इ—ई—

इ=यह। इ=भी। इस्त्री=स्त्री।
ईस=पलंग की बाजू की लकड़ियां।

—उ—ऊ—

उ=वह। उगरय=तत्काल किसी को नीचा दिखाने के लिए कुछ कह देने वाला व्यक्ति।
उगी गया=पैदा हो गया। उघाड़े=नंगे खुले।
उछली=उछल कर। उजला=उज्ज्वल, श्वेत।
उजरको=अपयश। उठ्या=उठे। उडावणा-णो=उड़ाना।
उतारणी=दूर करना। उनालो=ग्रीष्म ऋतु।
उपाध्या=मांगने वाला ब्राह्मण। ऊं=निम्न प्रकार का संबोधन।
ऊंखड़ी=चलायमान।
ऊबतार=शीघ्रता। ऊ=वह। ऊंदरो=चूहा।
ऊंदराज=चूहे ही।

—ए—ऐ—

ए=यह। एकलो=अकेला। एठो=जूठा।
एडी=पैरके तलुए का पृष्ठ भाग। एमदया=अहमद।
ऐंठो=झूठा।

-ओ-औ-

ओछी=तुच्छ, क्षुद्र । ओछो=कम भरा हुआ, छोटा ।
ओटला=घर की चबूतरी । ओडता=ओटमें, स्थित पहला ।
ओलाओ=बुझाओ ।

अं-अः

अंगीरो=अग्नि, अंगारा । अंतर=इत्र, फर्क ।
अंधाधुंध=अंधकार का राज्य । अंधारी=अंधेरी ।

-क-

क्यां=कहाँ । क्यारे=क्यारी में । क्यूं=क्यों ।
कई=कह कर, क्या । कट्यो=कट गया । कठे=कहाँ ।
कठेती=कहाँ से । कड़ाई=कढ़ाई । कण्डा=किसके ।
कण=कनी । कणने=किसको । कतरोई=कितना ही ।
कतवारी=सूत कातने वाली स्त्री । कतीर=रांगा ।
कदर=महत्ता । कदर जाणे=कद्र जानता है ।
कदी=कभी । कदीक=कभी २ कण्टारियो=पंसारी
कनावड़े=तनिक, सम्बन्धी । कबद=शरारत ।
कबर=कब्र । कमावे=कमाता है । करणी=करना ।
करछी=चम्मच । करम=कर्म, ललाट, कपाल ।
करम खोड़ला=करमहीन, खोटे कर्मवाला । करा=झटका ।
करांजणो=शब्द करना । करेने=करके ।
कवा=कौर । कशनजी=कृष्ण । कस्तरे=कैसे ।
कस्या=कैसी । कस्यो=कैसा । कस्याक=कौन से ।

-का-

का=कहा जाता है । काकड़ी=ककड़ी । कागला=कौआ ।
कागलो=कौआ । काची=कच्चे । काजर=कज्जल ।

काऱ्या=मृतक दान का ग्रहण कर्त्ता महाब्राह्मण।

कांटा=कंटक। काडनो=निकालना। काड़ी=निकाली।

काठनी=निकालनी, गुजारनी। काणा=एक चक्षु।

काणी=एक चक्षु। कातणो=कातना। कांदा=प्याज।

कापड़ो=कपड़ा। कापड़ियो=कपड़े का व्यापारी।

कारो=काला। काल=कल। कालजो=कलेजा।

-की-

कीदो=किया। कींरो=किसका।

-कु-

कुण=कौन। कुमार=कुम्हार। कूकड़ा=मुर्गा

कूकर=बेठ में काम करने वाला। कूड़ा=कूप, कुंआं।

कूड़े=डालते हैं।

-के-

के=कहता है। के=कि, कहें। केक=या।

केड़े=पश्चात्। केणात=कहावत, (ताने और व्यंगका रूप)

केवा=कहना। केवाती=कहने। को=कोस।

-को-

कोठड़ा=बखारी। कोडो=कोड़ा।

—ख—

खंखेरी=खंखेरना, जलती हुई वस्तु को हिला कर अच्छी तरहसे जलाना। खड़ बड़=हिलने का शब्द।

खबरदार=चेतावनी-सूचक शब्द। खरो=अच्छा।

खरारी = खलिहान की-जहाँ किसान धान के अन्दर से नाज निकालता है,-वह जगह।

-खा-

खाड=खड्डा। खाऽड़ा=जूता। खाड़ाऽमार=जूतामार
खाद=खाद्य द्रव्य, जो नाज की कमी के कारण अनाज का ऋण लेकर पेट भरने को खाद खाना कहते हैं।
खार=नाला। खारी=खाली, बरसाती पानी निकलने का नाला, नाली। खाटो=कढ़ी।
खाल=चर्म-चमड़ा। खालड़ी=चमड़ी। खाला बीबी=मौसीजी
खाली=केवल रीता। खावामें=भोजन करने में।

-खी-

खीर=क्षीर।

-खे-

खे=धूल, खुजली, कंडुरोग। खेत की=खेत री।
खेलणी=खेलना। खेलावणा=खिलाना-बहलाना।

-खो-

खोटो=खराब। खोदी करे=परिश्रम कर खोदना।
खोदणी=खोदना। खोटा खाय=बुरा भोजन करना।

—ग—

गंज्या=गंजा। गठल्या=गुठली। गण्डक=कुत्ता।
गंडिया=गुण्डा। गढी=गडी हुई। गणना=गिनना।
गत=गति। गद्दा=गदहा। गदेड़ा=गधा।
गंदी=अत्तार,(इत्रका व्यापारी) गबोरो=फर्क।
गमार=गँवार। गमेती=संतोषसे,भील। ग्या=गया है।
गया=जाने पर। ग्यो=गया। गरज=अपना स्वार्थ
गरद=रज धूल। गरदन=ग्रीवा। गराड़=आगत।

गरी=गली। गरे=गले।

-गा-

गा=गाय। गांठरा=अपना। गांठ रौ=गांठका।
गांठरी=स्वयं का, पास का। गाडो=गाड़ी।
गाबा=वस्त्र। गाम बलाई=दलित वर्ग का एक व्यक्ति, मुखिया।
गामडा=गाँव।
गारा=मिट्टी। गारी=गाली गावणो=गाना।

-गु-गू-

गुजरान=उद्योग, निर्वाह। गुस्सो=क्रोध।
गुण्या=मनन नहीं किया। गूजर=जाति विशेष।
गूणां=गुणती। गूमड़ौ=फोड़ा।

-गो-

गोड़ा=घुटना। गोदड़ी=जीर्ण वस्त्रोंसे बना ओढ़ने काउपादान
गोपीचंदन=वस्तु। गोयरा=विषैला जंतु। गोर=गुड़।
गोरख=भाग्य-गोरखनाथ योगी जो सिद्धि के कारण प्रसिद्ध है।
गोरख=रत्न। गोरी=सुन्दरी।

-घ-

घटाटोप=अराजकता, अन्धकार। घटीए=चक्की के आगे
घट्टी=चक्की। घड़ी ने=जन्म देकर। घड़ीक=कभी। घणा=बहुत
घणी=बहुत,ज्यादा। घरजाया=घरमें ही उत्पन्न।
घर घालणी=घर में वृद्धि करने वाली। घरनी=पत्नी।
घरधणी=घर का स्वामी। घरे=घर पर।

-घा-

घाघरो=लहँगा। घाटो=कमी। घाणी=तिलहन पैरने

घाले=देते हैं।　　　　का कोल्हू।

-घी-

घी=घृत।

—घो—

घोका=चोट।

—च—

चक्रवर्ती=सम्राट। चग्गो=भोजन। चट=इस बाजू की।
चणा=चना (अनाज विशेष) चतर=चतुर।

—चा—

चाकर=दास। चांदणी=चंद्र-ज्योत्स्ना।
चांदा=घरका बाजू का हिस्सा, दीवाल। चापड़ा=भूसी, चौकर
चालती=चलती हुई, गतिशील। चाल्या=चले।
चालणो=चलना। चावणा=चबाना। चावे=चाहे।

—चू—

चूख्या=चूसा हुआ। चून=आटा। चूरमो=घी शक्कर का मिला कर बनाई वस्तु
चूला=चूल्हा।

—चे—

चेत=चैत्र मास।

—चो—

चोक=चौकोर वस्तु। चौखा=चांवल। चोखो=चांवल।
चोंट=मुंह। चोपणी=चोब देणा। चोरा=चौराहे पर।
चौमासो=वर्षा ऋतु।

—छ—

छठी=शिशु प्रथमवार दूध पीता है वह दिन।

छत=जहाँ कुछ तत्त्व है।

—छा—

छा=मट्ठा, छाछ। छाजा=छत। छांटा=छींटे।

छाणा=कंडा।

—छि—

छिनाल=कुलटा, परपुरुष गामिनी। छींकता=छींकने से।

छींक ताज=छींकते ही। छींतरा=वस्त्र।

—छे—

छेकड़ी=हेकड़। छेटी=दूरी। छेड़ो=घूंघट।

—छो—

छोगावारा=सिर पर कलंगी लगाया हुआ व्यक्ति।

छोड़ी=छोड़ने से। छोरा=लड़के।

—ज्यू-ज—

ज्यूं=जैसे। जगा=स्थान। जठे=जहाँ।

जणां=व्यक्ति। जण जणरा=भिन्न २ व्यक्तियों के।

जणडी=जिसकी। जणडो=जिसका। जतरो=जितना।

जदी=जब। जनम=जन्म। जनम्यांपेल=जन्म से पहले।

जनम=जन्म। जनम पत्री=जन्म पत्रिका।

जब्त=सहन करना। जमाई=जामाता। जरख=जंगली पशु, कुण्ठित बुद्धिवाला।

जल्या=जले हुए। जवानी=यौवन।

जस्या ने तस्यो=जैसे का तैसा।

—जा—

जां=जहाँ। जा=चला जा। जाइरयो=जा रहा।

जागता=जगने वाला। जाजो=खर्च हो जाय

जाड़=पाखाना। जाण पेछाण=जान पहिचान।
जाणी चाहिजे=जाना चाहिए। जाणै=जानता है।
जाणो=जाना। जोन=बरात में। जानी=जानती हूँ।
जाफरान=केसर। जायो=उत्पन्न भाई। जावा=जाने।

—जी—

जीभ=जीभ, जिव्हा। जीवका=जीविका का साधन।
जीवती=जीवित। जीवां=मौखिक।

—जू—

जूनो=प्राचीन।

—जे—

जे=जिधर। जेट=जहर। जेठ=पतिका ज्येष्ठ भाई
जेरी=जिसकी। जेरू=चरित्र हीन, कुलटा स्त्री।
जेरो=जिसका। जै=जय।

—जो—

जो=जहाँ। जांग्या=पाजामा। जोड़ला=बादके दो।
जोड़ा=समानता। जोधाणा ब्रामण=भोजन भट्ट कर्महीन ब्राह्मण।

—झ—

झट=शीघ्र। झड़ाका=झड़ी।

—झा—

झांख्या=प्रपंच।

—झो—

झोंपा=भीलों के रहने का झोंपड़ा।

—ट—

टचको=टींचा। टपारा=पिटारा।

—टा—

टाटी=बांसकी टट्टी। टारी=टाल देना चाहिए।

—टी—

टीनका=तिनका। टीपे टीपे=बूंद २।

—टू—

टूटी=नष्ट वस्तु।

—टो—

टोकर=घण्टी। टोटा=नुकसान।

—ठ—

ठंडे=शीतल।

—ठा—

ठाकर=ठाकुर। ठाहरा वालो=डेरे वाला।

—ठि—

ठिकाणों=ठिकाना।

—ठी—

ठीकरी=मिट्टी के बर्तन का टुकड़ा।

—ठे—

ठेरावणो=ठहराना।

—ठो—

ठोर=स्थान ठोरी=बेकार

—ड—

डंड=दंड। डंडे=दण्ड देना।

—डा—

डाचा=मुह से काटना। डाटो=धमकाना।
डाडी=दाढ़ी। डांडा=बांस।
डाम=बीमार अंग को दागना।

—डूं—

डूंगर=पर्वत।

—डे—

डेड़की=मैंढकी।

—डो—

डोकरी=बुढ़िया। डोड=डेढ़। डोबको=मैंढक।

—ढ—

ढाकणो=ढक्कण।

—ढे—

ढेड=मृत ढोरों को ढोने वाला, चमार।

—ढो—

ढोरी=खाली करना।
ढोली देणो= नष्ट कर देना, उडेल देना।

—त—

तमोल=ताम्बूल। तलघाड़े=गांव विशेष।
तलक=तिलक। तलाव=तालाब।

—ता—

ताणो=खींचना। तापणौ=तापना। तांबी=तांबे की मुद्रा।

—ति—

तिल=तिल्लो ।

—ती—

ती=से । तीन तेरे=तीन से तेरह, छीन्न-भिन्न
तीनी=तीन व्यक्ति । तीनों=तीनों ही । तिरिया=स्त्री ।
तीरे=पास ।

—तु—

तुरक=मुसलमानों की एक शाखा (तुर्की) ।

—तू—

तूंबड़ो=तूंबी ।

—ते—

तेगड़=भागना । तेरे=तेरह ।

—तो—

तोई=तोभी । तो के=आता है ।
तोवरा=काल्पनिक, बनावटी । तो वे=हो तो
तो से=तोबदान में, तोसदान ।

—था—

था=थाह, पार । थाग=थाह, स्थिति का अनुमान ।
थाणों=तुम्हारा, पुलिस का थाना ।
थाप=थप्पड़, स्थापित करना ।
थारा=तेरा, तुम्हारा । थारे=तेरे ।
थारो=तेरा ।

—थू—

थूं=तूं

-थे-

थेगरी=कारी, पैबंद

-थो-

थोड़ो=थोड़ा, तुच्छ, तनिक

-द-

दक्खण=दक्षिण, दिशा विशेष, दाहिना हाथ।
दन=दिन। दनहार=दिन खोने वाले।
दनां=दिन, दिनों का।
दबतो= दबा हुआ। दरजी=दर्जी।
दरोगा=दारोगा जाति विशेष।

-दा-

दाणां=दाना, रातब। दांत देखणां=उम्र देखणी।
दांता=पत्थर की कराडें। दादो=बड़ा भाई।
दानगी=मजदूरी। दानो=वृद्ध।
दायमा=दाधीच ब्राह्मण, मीणे भीलों की एक शाखा।

-दी-

दी दी=दी है। दीवा=दीपक।
दीवारया=दीवाणिया, दीपक का मिट्टी का पात्र।
दीतवार=रविवार।

-दु-

दुखणो=फोड़ा फुन्सी दर्द होना।
दुखे=दुखता है। दुबला=निर्बल, कृश।

-दू-

दूजी=दूसरी।

दुशमण=शत्रु ।

-दे-

देख्या=देखा । देखणो=देखना । देणी=देना ।
देवाय=दियाजाय । देषालेवा=देना लेना ।
दोड़ावणा=दौड़ाना ।

-दो-

दोरी=कठिन दोवरा=दोवड़ा, दोलड़ा-दुहरा-होमना ।

-ध-

धणी=स्वामी । धवा घास=पेट भर घास ।
धरम=धर्म ।

-धा-

धाप्या=भरे पेट, तृप्त ।
धारा=धारणा बनाना सोचना ।

-धू-

२ धूणीं=धूनी देना ।

-धी-

१ धीयड़ी=बेटी ।

-धो-

धोरा=सफेद ।

-न-

नकटा=नाक कटा । नकटो नाक=कटा हुआ नाक ।
नखरा=नाज । नगलाय=निगली जा सकती ।
नगदुल्ला=नकद रुपये ।
नंगार खाना=नक्कारे बजाने का स्थान ।
नट्यो=इनकार करने पर ।

नटे=इन्कार करना। नमतो=नमता हुआ। नव=नौका अंक ९। नवरोई=बेकार। नवी=नई। नवो=नवीन।

—ना—

नाई धोई=नहा धोकर। नाकणो=डालना। नाकणी=डालना। नाकी=डालकर। नाके=डालना। नाग=सर्प। नाणौ=रुपया-पैसा। नाचणबाई=नखराली स्त्री। नाजर=नाजिर। नाता=पुनर्विवाह। नाती=रिश्तेदार। नातो=पुनर्विवाह। नाथ=नथूने में डाली गई रस्सी। नफा=लाभ। नार=सिंह। नावी=नाई, हज्जाम।

—नि—

निकालसी=निकालना। निचोरणी=निचोना।

—नी—

नी=नहीं। नीं=की। नीकली=पूरी हो गई नीमाने=नहीं मानता। नींवे=नहीं होती है। नीसेणी=सिढ़ढी।

—नू—

नूतो=निमंत्रण।

—ने—

ने=और। नेजो=रस्सा। नेवतो=नाखून।

—नो—

नोक=सिरा। नोरा=खुशामद। पइसा=पैसा। पई=बंधन। पग=पैर। पगरखी=जूती। पगे लागे=पालागन करना। पगै=पैदल। पची=पचकर। पछताणा=पछताए पछाड़ी=पीछे। पट=उस बाजूकी। पटेल=गांवका मुखिया पटेल=गांव का मुखिया। पंड़्या=पड़े हुए। पड़का=भुनगा, सर्पका बच्चा। पड़े=गिरता है।

पण=परन्तु । पतिवरता=पतिव्रता । पतीजा=तृप्ति या संतुष्टि
पतो=खबर । पधारे=आए । पन्दरे=पंद्रह ।
पंपोरी=सहलाकर । परदा=पर्दा । परण्यो=विवाह किया ।
परण=विवाह । पराया = गैर, बिराना ।
परेंडे=पानी रखने का स्थान । पंसेरी=तोल विशेष ।
पइसा=धन ।

—पा—

पाको=पकगया है । पागड़ी=पगड़ी । पांचाई=पांचे ।
पाछी=फिर । पाजी=अयोग्य । पाड़ी=भैंस की बच्ची
पाड़ी=गिरा कर । पाड़े फोड़ा=कष्ट देता है ।
पाडो=भैंस का बच्चा । पाणी=पानी, वर्षा ।
पातर=पात्र, वेश्या । पामणो=अतिथि, महमान ।
पार=पाल, बांध । पालवा वालो=पालन करने वाला, निर्वाहक
पावला=चार आना । पावली=चौ अन्नी ।

—पि—

पिंजारा = रूई पींजने वाला, धुनकर ।

—पी—

पीड = पीड़ा, दर्द । पीणी = पीना । पींदा = पैदा ।
पीयर = पीहर । पीर = पीहर । पीरी = मिट्टी, पीली ।
पीस्या = पीसा हुआ ।

—पु—

पुन्न = पुण्य । पुरख = पुरुष । पुराणी = पुरानी ।

—पू—

पूणई = पूणी । पूणी = अति दूर्बल; खेत ।
पूत = पुत्र । पून = पुण्य ।

—पे—

पे = पर। पेइज = पर ही। पेट=उदर।
पेटरा = स्वयं से प्रसूत पुत्र पुत्री। पेस्या = सीधा।
पेड़ा = खोएकी मिठाई। पेलवान = पहलवान। पेलां = पहले।
पेलाई = पहले से ही। पेली = पहले, प्रथम।
पेरी पहिनी।। पैदा वे=उत्पन्न होते हैं। पैसी=पेशी।

—पो—

पोतड़ा=जन्म जात, नवजात शिशु के बिस्तर।
पोबोर=पोबारा। पोमचा=साड़ी विशेष।
पोवे=पोते हैं।

—फ—

फरे=फिरते हैं।

—फा—

फाइदा=लाभ। फाकानंद=पुरुषार्थहीन निर्धन।
फाकड़ा=फक्कड़। फागण=फाल्गुन। फाटी ओड़ी=फटे जूते।
फाटे=फाड़ी, फटना। फाड़ीने=फाड़कर। फांस=कांटा।

—फू—

फूंकी=फूंक कर। फूलां=फूल। फूस=घास।

—फे—

फेंकीने=फेंक कर। फेर=फिर।

—ब—

बइ=बैठ कर। बके=गालियाँ देते हैं। बखार=धान भरने की कोठियाँ, या भंडारिये। बखाण=पेड़ विशेष।
बग=कीट विशेष। बगां=बगा। बचे=बीच में।

बछड़ो=गाय का बछड़ा बडारी=वृद्ध जनों की
बणे=बनजाय । बद=खराब, बुरा ।
बर गुण्डो=भारत की एक खानाबदोश जाति । बरछी=बर्छी ।
बरीरया=जलते हैं । बरे=जले बल=आधार ।
बलद=बैल । बसावणो=बसाना । बले=जले ।
बसावणा=बसाना ।

—बा—

बाई=स्त्रियों के लिए आदर वाचक शब्द । बाटी=रोटी ।
बादसा=बादशाह । बाँधनां=बांधना । बाप=पिता ।
बाबा=साधु । बामण=ब्राह्मण । बामणां=ब्राह्मण
बार=जलाना । बारणा=जलाना, द्वार ।
बाण्याबद=बनियें की सी बुद्धि । बाँटे=बाटती है ।
बारां=शिशु जो चल न सकता हो । बारे=बारह ।
बालणो=जलाना । बाले=जलाता है । बालना=जलाना ।
बावली=पगली । बावरी=पागल ।

—बु—

बुरा=बुरादा । बूंटी=औषध ।

—बे—

बेच्यो=बेचने से । बेंचाय=बिकता है । बेंचाय=बिकती है ।
बेदो=डाहू । बेटा=पुत्र । बेन्या=बहिन ।
बेर=शत्रुता, दुश्मनी । बेवारी=व्यवहारी ।
बेरा=बहरा । बेल=बैल । बैठणो=बैठना ।
बैर=शत्रुता । बोल बोल्या=बोली लगादेने पर ।
बोलनार=बोलनेवाला । बोल बोला=मान मर्यादा का बना रहना ।

—भ—

भंडावे=अशुभ बातें सुनना । भण्या=पढ़ा ।
भजो=नाम विशेष । भदेर=मेवाड़ का ठिकाना ।
भरया=पूर्ण भरा हुआ ।
भरावण=चेतावनी, दायित्व । भलो=अच्छा, भला ।
भँवरजाल=समुद्रीवात । भसे=दुर्भाषण करते हैं ।

—भा—

भाग्या=भागने से । भाग=भाग्य । भांग=भंग ।
भांगवान=भाग्यवान । भागी=भगी, नष्ट प्रायः ।
भागी जाणो=भगजाना । भाजी=शाक ।
भाटो=पत्थर । भानाजी=नाम विशेष, वातूल, रसिक ।
भायां=भाई बंधु । भावा=घर की वयोवृद्ध स्त्री ।

—भि—

भिड्या नी=भिड़े नहीं ।

—भी—

भीख=भिक्षा । भीज्यो=भींगे हुए ।
भीमड़ो=मजबूत, व्यक्ति ।

—भु—

भुगत्या=भुगतने से ।
भुत्तारिया=वात्या चक्र; हवा से चक्र रूप में जो गिर्द उड़ती है उसे भूतेलिया कहते हैं ।

—भे—

भेदू=भेद जानने वाला । भेरा=शामिल ।
भेला री=शामिल की । भेली=शामिल ।
भेगी-भेगी=भेला भेल, सम्मिलित ।

—भों—

भोंग=भमंग, सर्प ।

—म—

मगरे=पहाड़ । मजो=आनन्द ।

मजो लेणौ=आनन्द उठाना । मटसी=मिटेंगे ।

मण=मन । मत=मति । मती=मत ।

मधु=मधुव । मनकी=बिल्ली । मनख=मनुष्य ।

मनवार=मनुहार । मने=मेरे लिये मुझे ।

मनेइ=मुझे भी । मरगी=रोग विशेष, अपस्मार ।

मरड़=मरोड़, अभिमान । मरद=मर्द ।

मरावणो=मरवाना, एक प्रकार की गाली ।

मरी=मर कर । मरीग्या=मर गये । मरो=मर जाय ।

मल्या=मिले । मलवारा=मिलने का ।

मली=मिली । मलै=मिलती है । मरयां=मरने पर ।

मसाण=श्मशान ।

—मा—

मा=माता । माइने=भीतर । माई=मां ।

माकण=खटमल । माखो मक्खी । मांग्या=मांगा ।

मांग्यो=मांगा । मांगणी=मांगना । मांगी मांगना ।

माछर=मच्छर । माण्डा=दुलहिन का घर, परिवार ।

माण्डी=मांडकर । माण्डो=विवाह मंडप ।

माणी=तोल विशेष १२ मनका । माणीं=हमारी ।

माते=पर, सिरपर । माथापै=सिर पर ।

माथा=सिर । माथे=सिर ।

मार=मात, मैदान, पीटने में, खेत में,

मारणी=मारना चाहिये ।

माराज=महाराज, मेरे ही। मारी=मेरी।
मारीकूटी=मारकूट कर। मारीग्या=मार गये।
मारो=म्हारो, मेरा।
मावली=दक्षिणभारतीय-जाति विशेष। माह=माघ।

—मि—

मियां=मुसलमान। मीणा=भील विशेष।

—मूं—

मूं=मैं। मुण्डा=मुँह।
मुण्डावाती=मुण्डाने से।
मुँडोकालो=कृष्णमुख। मुण्डो=मुँह।
मुण्डावणो=हजामत, सफाचट।
मुल्ला=मौलवी, बोहरा।
मूंगा=महँगा, कीमती। मूँछां=मूँछ।
मूतरा=पेशाब का। मूरदाम=मूल पूंजी।
मूरी=मूली, लकड़ी का बोझ, जड़ी बूंटी, शाक।

—मे—

मेदो=मैदा, पिष्टान्न। मेमद्या=मुहम्मद।
मेरवान=महरबान। मैल=मलिनता।
मैला=गंदी वस्तु। मोगा=जाति विशेष।
मोजमारे=आनन्द करे। मोजूद=उपस्थित।
मो'रा=मोहरा, मुँह का आभूषण-जो घोड़े, ऊँट, बैल आदि के लगाए जाते हैं।
मोटो=बड़ा। मोटी=बड़ी। मो'र मुहर।
मोल=मूल्य, कीमत।

—मं—

मँगता=भिखमंगा।

—र—

रहगी=रह गई। रया=रहा।

—रा—

राखे=रखता है। राखोड़ो=राख। राँड=गाली विशेष, विधवा।
राड़=झगड़ा, तककार।
राणा रा=महाराणा का। राणा=राना।
राणी=रानी। रात=रात्रि। रान=रात्रि।
रावणरै=रावण के। रावला=ठाकुर के रहने का स्थान।

—रि—

रिण=ऋण, कर्ज। री=की। रीजो=रहना।
रीझै=प्रसन्न होवे। रीती=रिक्त, खाली। रीप्यो=रुपया।
रीस=क्रोध।

—रू—

रूपाला=सुंदर।

—रे—

रे=रहे-रहते हैं। रेग्यो=लटका हुआ। रेगा=रहेंगे।
रेणों=रहना। रइग्यो=रह गया।

—रो—

रो=का। रोजगार=वेतन। रोटा=रोटियाँ।
रोडी=उखरड़ी, खेड़ी। रोवे=रोता है।

—ल—

लइ=ले। लक्खण=अच्छण, टेव। लगावणो=लगाना।
लड़वा=झगड़ने। लड़ावणा=लड़ाना। लदी लदी हुई।

—ला—

लाडू=मोदक। लादे=मिलता है। लापालोर=बकवास।
लारे=साथ।

—ली—

लीप्या=लीपे हुए।

—लु—

लुगाई=स्त्री। लू=गर्म वायु। लूण=नमक।
लूणी=मक्खन। लूणेगा=काटेगा। लेणी=लेनी।
लेरा=लहर। लैरयो=बंधेज की पगड़ी।
लोग=मनुष्य, पति। लोट्यो=लोटा। लोहारी=लोहे की।

—व—

वइगइ=हो गई। वइरेणो=हो रहना। वई री=बह रही।
वऊ=बहु, पुत्र वधु। वखेरे=तीतर बीतर करना बिखेरना।
बगड़े=बिगड़ जाय। वगाड़नो=बिगाड़ना। वचे=बीच में
वंडा=उसका। वंडी=उसकी। वण में=उस में।
वणजे=बनाना। वणने=उसे। वणाया=बनाया।
वणिज=व्यापार। वतरा=उतने। वतवारी=बातूनी।
वतरो=उतना। वती=बजाय।
वदावणा=बढ़ाना, स्वागत करना।
वधारणा=बढ़ाना। वधारे=ज्यादा, फीड़ा।
वना=विना। वंटी री है=बांटी जारही है।
वछावणो=बिछाना बिछौना। वया=हुए।
वर=वर्ष वसै=रहता है।

—वा—

व्याइ री है=उत्पन्न हो रही है। वांकी=बांकी, टेढ़ी

वाग=बाग। वागजी=नाम विशेष।

वागर=भयप्रद शब्द, बच्चों को डराने के लिए 'वागड़' शब्द का प्रयोग होता है। घाम का कूनेड़ा। जानवर विशेष।

वाचनी=पढ़ना। वाजे=बजने पर। वाट=मार्ग।

वाटकी=प्याला। वाड़=घेरा, बाड़, खेतीकीर रक्षा करने के लिये कांटे दार झाड़ी का घेरा लगाने को बाड़ कहते हैं।

वाण्यो=बनिया। वात=बात। वातां=बातें

वाती=बत्ती, वर्तिका। वान्दरा=बंदर।

वावेगा=बोएगा। वासा=निवास।

—वि—

विघ्न=विपत्ति।

—वी—

वी=वो। वीछावारी=बिछुएवाली।

वीणनो=बीनना। वीनवा=बीनने। वींरे=उसके।

वीर=बहादुर। वीस=बीस।

बीस बिसवा=बीस बिस्वा।

—वे—

वे=होवे होना, बहना हो।

वे=सकेतात्मक बहुवचन। वेई=हो।

वेगा=होगा। वेगो=शीघ्र।

वेंवी=बांटना, बिखेरदेना, नष्ट करना।

वेण्डा=मूर्ख, पागल। वेता=होते।

वेद=वैद्य, वेद-श्रुति। वेरा=उसका।

वेलड़ा=बेल,लता। वैरी=उसकी।

—वो—

वो=वहाँ व्यो=हुआ।
वोरा=बोहरा। वांचे=पढ़े जायँ।

—श—

शरीरा=हृदय, तनमें। शेर=शहर, सिंह।

—स—

समाय=मेल-जोल। सर=सिर। सरग=स्वर्ग।
सरक=सर्र, खिसक। सराप=श्राप। सराणो=सिरहाने।
सवाद=स्वाद।

—सा—

सांकल=जंजीर, शृंखला। सांच=सत्य।
साजी=बनिया, सुनार।
सासरा=ससुराल।

—सि—

सियालो=शीतकाल।

—सू—

सूंप्या=दिए, सिपुर्द किए।

—से—

सेजो=हिलमिल गया है। सेण=हितेच्छु।
सैर=शहर।

—सो—

सोकड़=सौत। सोदो=सौदा। सोसा=संशय, चूसा।
सौ घर=सौ घर।

—ह—

हगा = सगा । हणचा = संचय करना ।
हधरै = सुधरे । हपना = स्वप्न । हमार = सम्हाल ।
हमी हांज = सायंकाल । हरी की = सरीखी, सी
हरीको = समान, तुल्य । हरीखा = समान ।
हरीखो = तुल्य । हरी फरी = चल फिर कर ।
हर = विष्णु । हरेनी = काम नहीं चलता, नहीं निभता
हरका = हल्का । हवा = सवा ।
हिवा हात = सवा हाथ । हवाद = स्वाद ।

--हा—

हा = श्वांस, शोक सूचक शब्द ।
हाई = समान । हाऊ = सासू हाउ = अच्छा ।
हाऊ = सुहावना । हाक = साख, पैठ । हाकम = हाकिम ।
हांकड़ा = संकड़े । हाको = शब्द ।
लगी ने = पाखाना फिर कर । हाजर = हाजिर ।
हाजा=हिफाजत, सम्हाल, स्वस्थ । हांजी=जी हजूर ।
हाबनिया,= साजीक्षार तन्दुरुस्त । हाट=दुकान ।
हानौकर,= हाली । हाटे=सट्टे, बदले हाटे में, बदल में ।
हाड़ = कुत्ते को दुतकारने का शब्द । हाड़ = हड्डी ।
हांडी = मिट्टी का बर्तन । हाते = साथ में
हाथे = हाथ । हानी = सानी, संकेत ।
हांप = सर्प । हाँपड़ी = स्नान कर ।
हाबल्या = इच्छुक, वांचित । हाबू = साबुन ।
हमाले = सम्हाले । हामो = सामने । हारणा = शाक, भाजी ।
हाला = साला । हा'रो = सासरा, ससुराल ।
हाल = अभी । हवाया = सवाया, ।

हारयो=हारगया, पराजित हुआ।

—हि—

हिड़ो करना=सेवा करना, काम करना।
हियारा=सियालिया, गीदड़, शृगाल।

—ही—

ही ही=सी सी।
हीख=सीख। हीदड़ो=सींदड़ा, ऊंट के चाम का बनाया घी रखने का पात्र।
हीजे=सीझता है, पकता है।
हींटा=कुछ भी नहीं, कच मेचक का संकेत।
हीटे=नीचे। हीम=सीम, सरहद।
हीस=घोड़े का हिन हिनाना, हीसना।

—हु—

हुई जाणो=सो जाना। हुकन=शकुन।
णनी=सुननी। हुणी=सुनी। हुणे=सुनता है।
हुवे=सोते, सोता है।

—हे—

हेत=प्रेम। हैत=शहद।
ती=सेती, सहित, साथ। हेर=सेर, गली गली।
हैंडरी ने तबाक=हाँडी और काली। हैंतीस=सैंतीस।

—हो—

हो=एक सौ १०१। होज=हौज। होड=पैज प्रतिस्पर्धा समानता।
होड़=ओढ़ने के लिए दो वस्त्र मिलाने को मसौंड़ कहते हैं।

होदा=हाथी की अंबावाड़ी, पालकी। होरी=सोरी, आसान
होशियार रीजे=सावधान रहना। हो=सौ।

———

राजस्थान विश्व विद्यापीठ, साहित्य--संस्थान

द्वारा

—शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाली कुछ पुस्तकें—

१. पूर्व आधुनिक राजस्थान

श्रीयुत् महाराजकुमार डॉ० रघुवीरसिंह एम. ए., डी. लिट्, एल एल. बी,

२. राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज भाग ३

श्रीयुत् अगरचन्द नाहटा.

३. आदि निवासी भील.

श्रीयुत् जोधसिंह महता, बी०ए, एल एल० बी.

४. राजस्थानी लोकगीत. भाग १

श्रीयुत् जनार्दनराय नागर. एम०ए०. साहित्यरत्न. विशालंकार

राजस्थान विश्व विद्यापीठ महाराणा भूपाल प्राचीन साहित्य शोध विभाग द्वारा प्रकाशित

—शोध पत्रिका—

त्रैमासिक प्रकाशन— वार्षिक मूल्य ६) रु० एक प्रति १।।) रु०

सम्पादक मण्डल— पं० नरोत्तमदास स्वामी. एम ए०. महाराजकुमार डा० रघुवीरसिंह एम० ए० डी० लिट्. पं० कन्हैयालाल सहल. एम० ए०. देवीलाल मामर. एम०ए०. श्री पुरुषोत्तम मेनारिया. साहित्यरत्न [प्रबन्ध सम्पादक]

महाराणा भूपाल प्राचीन साहित्य शोध-विभ.

राजस्थान विश्व विद्यापीठ, साहित्य-संस्थान उदयपु

प्रकाशित साहित्य-

१ राजस्थानी भाषा

श्रीयुत् डॉ॰सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या एम॰ए॰.डी॰लिट्॰, मू. २)

२ राजस्थानमें हिन्दी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज भाग

श्रीयुत् पं॰ मोतीलाल मेनारिया एम॰ए॰, मूल्य ३)

३ राजस्थानमें हिन्दी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज भाग-

श्रीयुत अगरचन्द नाहटा, मूल्य ४)

४ मेवाड़ की कहावतें भाग-१

श्रीयुत् पं॰लक्ष्मीलाल जोशी, एम॰ए॰,एलएल॰बी॰, मूल्य १

५ मेवाड़-परिचय

श्रीयुत विपिनविहारी वाजपेयी, एम॰ए॰, साहित्यरत्न, मू॰।

७ चारणगीत माला भाग- १

श्रीयुत् पुरुषोत्तम मेनारिया, साहित्यरत्न। सहायक सम्पाद

श्रीयुत् सांवलदान आसिया

८ राजस्थानी भीलों की कहावतें भाग- १

श्रीयुत् पुरुषोत्ताम मेनारिया, साहित्यरत्न

९ शोध-पत्रिका भाग- १ मूल्य ६) रुपया